

❀ निवेदन ❀

संसार को बुद्धिमानो ने असार माना है, केवल नारायण नाम का भजन कीर्तन ही इस अगाध भवसागर होने के लिये जहाज के सद्रथ सार है,

कलियुग केवल नाम अधारा । सुभर सुभर नर उतरहीं पारा ॥

।धुनिककालमें मानव से योग यज्ञ, व्रत, उपवास, दान पुण्यादि कल्याण कर्म प्रायः नहीं से वनते हैं तो मनुष्य का प्राणमय के दौर से छुटकारा पाना असंभव प्रतीत होता है, पुराने पथ प्रदर्शकों ने इसीलिये भूतकालीन कल्याण मार्गों को वर्तमान युग के लिये काठिन्य मानकर केवल भगवान के नाम का भजन कीर्तन यशोगान ही मोक्ष प्राप्ति का सुगम साधन बताया है, इस काव्य कुञ्ज के जन्म संस्कार का यही एक प्रमुख कारण है, और उद्देश है कल्याण प्राप्ति ।

इस पुस्तक में साकार ब्रह्मप्रदर्शन एवं भक्ति प्रेम के साथ साधन मनोरंजनार्थ शृंगार को विशेषता इस लिये दी गई है कि जन साधारण को ज्ञान विज्ञान, योगादि की रचनायें, शृंगार की अयेत्ता लोहेके चने समान जान पड़ती हैं अपितु शृंगार में सभी की रुचि अधिक प्रतीत होती है, कुछभीहो-

तुलसी हरि के नाम को, रीझ भजो या खीज । उलटो सीधो निपज सी पढ़यो खेत लो वीज ॥

यह आपके कर कमलों में काव्य कुञ्ज का पहिला संस्करण है, जिसके मुद्रण एवं लेख में कुछ त्रुटियाँ थीं दृष्टिगोचर होसकती हैं, अतः कवि जमा प्रार्थना के पश्चात् विचार शील है कि आगामी प्रकाशनों में इसके लिये विशेष ध्यान रखा जावेगा । यह प्रथम वाटिका है, और इसके बाद, दूसरी, तीसरी, चौथी के क्रम से ६ प्रतियाँ प्रतियंत्र मुद्रण होंगी जोकि अनिश्चित समयपर जैसे २ छपेंगी वैसे २ इसके प्रेमी सज्जनों की सेवामें प्रस्तुत की जासकेगी स्थाई ग्राहकों से इच्छा वापिक मूल्य ३)रु शुल्क के तोर पर लिया जायगा पोस्टज्य का कोई प्रश्न नहीं है खेरीज विक्रय में टांक मे बाहर के लिये डाक चर्च ग्राहकों के जिम्मे रहेगा पुस्तक प्राप्ति के लिये १०)आने के टिकट पहले भेजना आवश्यक है पी. पी. नहीं भेजी जायगी शोक विक्रोता डिस्कण्ट की बात चीत मैनेजर भारत प्रिंटिंग प्रेस टांक से करें बिना अप्रिम जमा हुए साल खाना नहीं होगा । जो मशायर स्थाई ग्राहक बनना चाहें ३)रु जरिये मनीआर्डर आज ही भेज दें जिस तारीख में रुक्या जमा होगा उभी तारीख से उनके वर्ष की गणना होगी ।

सुधाकर काव्य कुञ्जमें कोई भी कवि अथवा शार्डर या लेखक इत्यादि अपनी रचनायें गद्य पद्य व विज्ञापन मुद्रण करा सकते हैं किन्तु विवादास्पद प्रबंध प्रकाशित नहीं किये जायेंगे एवं रचनाकार अपने २ लेखों के उत्तर दार् न्वय होने, किसी भी परिचाम पत्र के गद्योपद्य का छापना या न छापना विषय घटाना बढ़ाना व्यवस्थापक के अधीन रहेगा, विज्ञापनों का मूल्य समय और कागज के आकारपर निर्भर है अमुद्रित पत्र टिकट भेजने परही लौटा जा सकेंगे, उत्तर प्राप्त करने केलिये टिकट या जवाबी कार्ड भेजना आवश्यक है, आने वाली रचनायें अथवा लेख सुन्दर सरल शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिये और उनका सारा विषय धार्मिक ईश्वरवादी भक्ति प्रेम आध्यात्मिक एवं मनोरंजक होना जरूरी है गद्य में अगवद् वंदनायें प्रार्थनायें और एकांकी ड्रामे आदि ही प्रकाशित हो सकेंगे किन्तु कानो नही, आशा की जाती है कि सज्जनवृन्द उपरोक्त विषय पर विशेष ध्यान देकर काव्य कुञ्जको हर प्रकार से परिश्रम सहयोग देने की कृपा करेंगे यही नम्र निवेदन है ।

नाट:- जिन कविताओं में "सुधाकर," की छाप नहीं है वह संगृहीत समझी जावेंगी ।

विनीत

जी. एल. वी. एस.

मैनेजर भारत प्रिंटिंग प्रेस

टांक (राजस्थान)

❀ अनुक्रमणिका ❀

कलियुग रहस्य पृष्ठ १.
श्री गणेशगान २.

आओ श्री गजानंद गणपति देवा ।
गिरिजा शिव नंदन आओ आओ आओ आँकराज ।
प्रथम कहूँ शौंी सेवा गजानंद विघन विनाशन देवा
गणपति तुम्हीं मुमरूँ आज ।
गजानंद प्रथम मनाऊँ ऋष सिधके दातार ।
प्यारे-प्या रे गौरी मुचन गज वदन हमारे ।
श्री गणपति गणराज विनायक ।
भजनमन गणपति धियन हरा ।
आओ गजानंद गौरी के नंदन ।
जय गणेश, जग दिनेश जीवन सुख दाता ।
गणपति ऋष सिध के दातार ।
मनाऊँ थाने श्री गणपति गणराज ।
जै जै गणपति गणेश ।
प्रथम मनाऊँ आपने गिरजा के लाल ।
हित से श्री गणपति को ध्याऊँ ।
गजानंद विघन विनाशन हार ।

श्री रामजन्मोत्सव ३.

भारत में भगवान शान बन आजाओ ।
भारत में भवतारनियाँ शरथ नृप के महलन में-
आज जन्मे हैं राम सारी शोभा के धाम-
हैं तो लूँगी २ राजाजी से नई नई सारी ।
वधैया राजावाज रहैयाजी ।
सखीचारी चलो आओ २ गाओ रो वधैया ।
होरही जय कार वधाई वाजे नृपति के द्वार,
राजा दशरथ के द्वार वधाई वाजी तो सही ।

पुकार ४.

छुपा तुम कहींभी दया धाम जाकर मगर-
हां भगवान भक्तों के वश में सदा तुम,
मयक में आया है जोकि मेरे पसीका अनुभव-
मूर्ख हूँ मैं मूर्खता मेरी पे मत कुछ ध्यान दो ।
हैं लनको रग रहाऊँ तन को नहीं रंगूंगा ।
यद कइसा नामुनासिध है तुम्हें क्योंकर रिनाऊँ मैं
नम्र विनय ५.

भांशी सुरता में साजन म्हारा नेण गराभर बरसे,

श्याम सुंदरजी रे देश पिवा नहीं मानूँ मैं
सखी त्याग जगत सूँ मह ममन मैं तो प्रभु
अजी ओ म्हारा प्रभुजी शरण भ आयो व
प्रभुजो थाँका चर्णा भ अचतो मीस कुकाऊँ
ओ मन मोहन कृष्ण कन्हई श्री सँवरिया ।
चेतावनी

है अजब खेल किसमत का-
है दो दिन की जिदगानी ।
रे मन शिव शिव भज सुख कंद ।
रे मन हमरा बीती जाय ।
करम का दंग निराला है ।
भजन कर भगवत का लगजाय जो वेड़ापार ।
तजो अभिमान हमरा वृथा ना गमाओ रे ।
कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा ।
प्यारे प्रेम प्रभुजी से करले हमरा मत ना वृथा -

भक्तों के भगवान

श्री रघुपति चरण शरण सब सुख मन लहिरे ।
जय रे रघुकुल दिनेश नंदेही साथे ।
नाथ मैं तो आयो हूँ शरण तिहारी ।
कहत हरि अजुँ न मान सही ।
दयामय दीनन पति भगवान
हमारे हरि आओजी दयालु दया धार ने ।
नेरी दिन २ काया छीजे रे मन राम भजन कर-
नेक कृपा कीजी मोपे स्वामी आँकार ।
मैं अगुण अचुध रघुराज ।
शरण में राखे हैं भगवान ।
दया निधि दीन के दुख हरो ।

दीन की पुकार

हैं दयामय दीन की सुनिये पुकार ।
तुम्हें भूल न जाऊँ दयालु हरि ।
प्रभो भक्त वत्सल दयामय विहारी ।
गठे देव दुनुज मानव जिन्नासी बन ।
दयामय यह तो कहदो दीनो का बद्वार कब होगा-
दीन वंधु हो दया दीनो पे लाते रहना ।
वाँसुरी बजादे श्याम माधुरी लतान में ।
विनय प्रभु नम्र सुनलीजे कृपा कीजे-
करो दयामय दया यह अपरम बरस सनातन ।

की गत घायल जाने—
रि सखा कछु मेरी कही—
जाणे वावा दुनियाँ में पीर पराई ।
तोरी वंसी निराली सुनी ।

।वन वारो रसिया वरसाने वाली नार ।

।त नारी घंश्याम—
प्रेम वरावर योग ना प्रेम वरावर ध्यात—
सुग विन निशि दिन कल न परत मोहै—
मैं कहा करूँ राम जिया बनो घवरावे ।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव १०.

नील कमल सा सुघर सुलोचन श्याम वदन हे ।
कृष्ण जनम सुन गणपति आये ।
है अजब ढंग से संसार में आना उनका ।
सखी देखण चालो आज या ब्रज में प्रकटे श्री-
मिल चली कुंड के कुंड श्री ब्रज की बाला ।
बनी मन फूज रही ब्रज नार ।
नीके रदो दोऊ भैया जसोदा मैया लाल तिहारे ।
कृष्ण जनम की बेर घटा बन छाव रही ।

सखी सुमन ११.

देखो सखी मोहन श्याम अलसाने ।
लीला रचो नव कुञ्जे—
वंसी बजाओ कृष्ण—
श्यामा तोरी अग्नियों में कजरा मुहावेरी
आओ रे रे श्याम मृष्ण शोभा धाम ।
श्याम रे श्याम भैया मधुर रे गूजे —
गिरधरजी के नैन हैं प्रेम भरे ।
कृष्ण नैना नहीं सहतो वान हैं ।
जमुना तीर मैं गई री मैदा वावरी भई ।

सखी श्याम लीला १२.

बसोजी म्हारा नेणों में नंदलाल ।
लागा लागी जी साँवरिया थॉम् प्री ।
थॉकी आन्ध्रूँ वणी न्हांने आवेजी राज—
आओ मोहन वंश्याम—
जो न्हांने वृन्दावन लेचालो—
होजे म्हारा मनमोहन वंश्याम मजन—
होजी म्हारा साँवरिया गोपाल दिहारी—
सखी मेरा साँवरिया गोपाल रे वंसी—

देखो मानो नंदलाल ।
मोहन तोरी वंसरी कैसी बजी रे ।
अ.जा रे आ मेरे साँसुरी वाले आजा ।
रूठी राधे

१४.

राधे तुम बड़ भागनी—
ना रूठो मनाऊँ तुम्हें राधे रानी ।
मोसे ना धोले साँवरिया चलो हटो जाओना ।
हवे जैश्यूँ हवे पण जैश्यूँ राज—
श्री राधे नागरी प्यारी तू वृन्दावन की रानी है ।
पिया तुम प्रीत करी हम जानी रे ।
डोले मन गोकुल प्राय ।
सुनादे सुनादे सुनादे मधुरी—

गिरहन की पुकार १५.

मैं तो थॉकी वाट जोऊँ छूँ गिरधारी ।
हरि आओजी आओ दरस दिखाओ—
न्हांने पहल्योई मेवाड़ा राणा क्यों ना बरजी ।
ओ, मदन मोहन वंश्याम विहारी ।
सखीरी कर प्रीत संग प्रीत ।
ओजी म्हारा साँवरिया गोपाल विहारी ।
मेवाड़ा राणा गिरधर संग लागी ।

फ़िल्मी तरङ्गें १६.

बिनती तिहारी करें हम सारी गिरधर धारी ।
छॉड गये ब्रज राज हमें फिर नैनन में—
ऊधोजी तुम जाओ उन्हीं को समझ ओ—
वैण वसी मनमोहन की बाजी जयना तीर रे ।
ठाड़ी कुञ्जन में जोऊँ कृष्ण वाट,
मुरली वारे साँवरिया तोरी मुरली की तान ।
नैननवा के वाण सखीरी मोरे लागे री ।
सख, पनिया भरन नहीं जाना—
आजा-आजा कृष्णा प्यारे आजा—

गजल गुझार १७.

सो वार भिटे हम जिसके लिये—
तेरी वाट में अरे वेवफा सैने—
जुनूने शोक ऐसी भी कोई तकसीर होजाये ।
वह तो हम आगोश है जिस को निहोँ समझा—
जिदगी की हसरतें आदोफुगाँ समझाथा मैं ।
सदाकत की मजाजी दौर में तहकीर होजाये ।
आह बिस जोक से वंश्याम घटा आके जमी



कलियुग रहस्य

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

दोहा

मार्कण्डेय से लगे कहने युधिष्ठिर एक समय ।
हाल कलियुग अरु प्रलयका कर कृपा कहिये मुनय ॥
हँस के यों बोले मुनीश्वर सुन युधिष्ठिर की विनय ।
व्यान से राजन मुनों मति मान यह सुन्दर विषय ॥

द्वादश सहस्र दिव्य वर्षों का एक कल्प कइलाना है ।
सनयुग त्रेता द्वापरयुग के पीछे कलियुग आता है ॥
चतुरानन की दीर्घ आयु का एक कल्प हो पाता है ।
तभी सृष्टि का आवृत्ति अंत करके ब्रह्मा सोजाता है ॥

कलियुग में आचरण नष्ट सभी हो जाते ।
ब्राह्मण क्षत्रिय अरु वैश्य अष्ट से पाते ॥
जप तप व्रत पुण्य अरु दान नजर नहीं आते ।
माया वादी सर्वज्ञ ब्रह्म को गाते ॥

महाराज ! भेद जिनका-नहीं पाते जी ।
मर्यादा जग को छोड़ किं वनकर सद साते जी ॥

ब्राह्मण पटकर्म तज भिक्षुक के संम बनजायेंगे ।
धर्म मृग यज्ञादि और स्वाध्याय सब विसरायेंगे ॥
शूद्र ऊँचे बैठ कर विप्रों को ज्ञान सिखायेंगे ।
नष्ट धर्माचरण चारों वर्ग के हो जायेंगे ॥

हिंसा चोरी और दगा वाजी का फिर जन्म घट होगा ।
लैन दैन व्यापार हाट में छल पाण्डे कपट होगा ॥
लुचे गुण्डे वदमाशों का दल बल धीर मुमट होगा ।
सदाचार व्यवहार न्याय नीती का हठ नल छट होगा ॥

यों छलट जायगी दशा विश्व की सारी ।
पति धर्म छोड़ पेचनी शरम को नारी ॥

अनुवाद महा भारत अध्याय १६२ =

[मार्कण्डेय समाख्या पर्व]

ॐ अनुवादक श्री गिरवर दास बोहरा

कवि "मुधाकर, टोंक"

वन जायेंगे सब सदिरा मांस अहारी ।

अति घोर पाप होगा पृथ्वी पर भारी ॥

महाराज ! पुत्र होगा पितृ घाती जी ।

उम कठिन काल में नहीं किसीका कोई सँगाती जी ॥

अल्प आयुष वीर्य बल हो मति पराक्रम खोयगा ।

मुख अघर्मी को मिलेगा दुःख धर्मी रोयगा ॥

मोह निद्रा में प्रसित संसार भ्रम भय जोयगा ।

राज्य अशुरों का चहुँ दिशि मेदिनी पर होयगा ॥

पांच वर्ष की कन्याएँ भी गर्भवती होजायेंगी ।

मान पिता को त्याग स्वयं इच्छा से व्याह रचायेंगी ॥

वीर्य वान पतियों को भी नजकर व्यभिचार कमायेंगी ।

उन्म कुत्त की सतियाँ भी शूद्रों संग मौज उडायेंगी ॥

मुख से भी स्त्रियाँ काम भगों का देंगी ।

पशुओं की तरह पर पुरुषों संग विचरेंगी ॥

कर गर्भ पात स्वामियों का घात करेंगी ।

शुचि सास अशुर को ठोकर मार लेंगी ॥

महाराज ! वर्षे राक्षस सृष्टी होगी ।

सब धर्म कर्म हों नष्ट पाप ही की वृष्टी होगी ॥

उल्लूखों के घर वनेंगे कोकिलों के स्थान पर ।

हंस वारिधि तज वसेंगे शुष्क सर सुनसानपर ॥

वृक्ष ना फूलों फलेंगे ठीक अपनी आन पर ।

विजालयाँ कडकेंगी सुखी खेतियों के धान पर ॥

गऊ बँधेंगी नीच शूद्र धर्म ब्राह्मण बकरी पालेगा ।

लोभातुर हो भाई ही भाई का वध कर डालेगा ॥

गुरु पत्नी संग सेज रमण को चेला आंगव लगालेगा ।

हस्त प्रकार अंधी दुनियाँ में हाथ ! हाथ को खालेगा ॥

तब अनावृष्टि से अन्न न पैदा होगा ।

हो आयु हीन भूखों से मरेंगे—लोगा ॥

बहु भाँति भयङ्कर विषम उठेंगे रोग ।

आश्चर्य जनक अति विचित्र होंगे डोंगा ॥

ज ! बहुत दुनियां घबरायेगी ।
 ति विकट समस्या छिन्न भिन्न जगकी हो जायेगी ॥
 गन्ध द्वा सब वस्तुओं में गन्ध ना रह जायेगी ।
 मिष्ठ अदिक रसों में स्वादिष्टता घट जायेगी ॥
 नास्तिकता वर्ण चारों में प्रकट दिखलायेगी ।
 सर्व भूमण्डल में पूरण शूद्र ता छाजायेगी ॥

स्वार्थ परायण हाकिम अपना जोर शोर दिखलायेगे ।
 चोर डाकुओं से मिल ! धन जनता का हर लेजायेगे ॥
 क्रम क्रम से कर चड़ा चड़ाकर शासन कोप बढ़ायेगे ।
 वहिन वेदियों को बलान से अपनी सेज चढ़ायेगे ॥

आभीर जातिके मलिन होंगे राजा ।
 खुद को विद्वान गिनने लगे उल्लू ताजा ॥
 कामी कुत्तों की तरह तर्जने लाजा ।
 निर्देई बूस लेले के करेंगे काजा ॥
 महाराज ! गपोलें चुन चुन होंकेगे ।

रोने चिल्ला ने पर भी दया दृष्टि से न भांकेगे ॥

धर्म वत होंगे दरिद्री अरु अधर्मी मालदार ।
 सज्जनों को डाट देंगे दुष्टजन आखें निकार ॥
 होंग फैलायेगे भूटे वेप मुनियों के सं धार ।
 लोक और पर लोक दोनों का नहीं होगा विचार ॥

सुन्दरता के हेतु शीस पर टेंढ़ वात फुमायेगे ।
 डोंग मार कर सन्यासी प्रति जीव को ब्रह्म बतायेगे ॥
 जनता होय अचन्भे में ऐसी गप विप्र उड़ायेगे ।
 भक्ति भाव सत दया क्षमा और शोल स्नेह मिटजायेगे ॥

हाथों पर नख मरतक पर लटा बड़ावर ।
 मिथ्या तप दिखलायेगे भस्म रमा कर ॥
 लम्पट योगी ठग बनेंगे मूँढ मुँडाकर ।
 जो चाकर हैं सब बन जायेगे ठाकर ॥

महाराज न कहनी में तिल घड़ेगा ।
 रोदेगी पृथ्वी ! और गगन सब चिल्ला उड़ेगा ॥

इस प्रकार भीषण नाश होजाने पर जगत और धर्म की स्थापना के लिये संभल ग्राम में ब्राह्मण के महा शक्ति शाली और बड़ा बुद्धिमान विष्णुयश नामक कल्की अवतार होगा । वह धर्मानुसार विश्व पर प्राप्त कर के चक्र चर्ती राजा होगा, वहीं इस व्याकुल संसार को आनंदित करेगा, और ब्रह्माजी द्वारा रचित १०८ मर्यादा को स्थापित कर के सम्पूर्ण पृथ्वी का सामराज्य ब्राह्मणों को देकर स्वयं बन गमन कर जावेगा ।

शूद्र होंगे पुरोहित और पुरोहित शूद्र सम ।
 ज्ञान रह जायेगा केवल ध्यान में ब्रह्मास्मिहम ॥
 मद्यलियों का मानस पंडित खांयगे गरमागरम ।
 वस्त्र निकरने पहिन कर सदिरा पियेंगे वेशरम ॥
 काम-चेष्टा-प्रबल रूप से पुरुष स्त्रियों में होगी ।
 शक्ति हीन निर्बल अशान्त होगी सन्तान महा रोगी ॥
 छोटे छोटे शरीर वाले लोग होंगे पशु भोगी ।
 सच्चा ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य भूतल पे मिलेगा ना योगी ॥

भेड़ों से भी कम दूध देयेंगी गाँ ।
 देवियां दिव्य बन जायेंगी कुलठाएँ ॥
 जन गणो और क्या अधिक हाल समझाए ।
 हैं यह ध्रुव विधि के अङ्क न मिटें मिटाएँ ॥
 महाराज ! धर्म अधरम में क्षय होगा ।
 तब जानो युग का अंत और पृथ्वी पे प्रलय होगा

यद्यपि हैं दुर्गुण बहुत से कठिन महा कलिकालमें
 किन्तु हैं गुण भी बने इस विषम माया जालमें ।
 लाभ एक सबसे बड़ा कहतेहैं कलि विकरालमें
 पुण्य कल्पित हो नहीं पातक जमाने हालमें ।

सतयुगमें योगी विज्ञानी ज्ञान ध्यान से तिरतेहैं
 त्रेता में जप तप व्रत सयंम यज्ञ अनेकों करतेहैं ॥
 द्वापर में हरिपद पूजाकर जन गण पार उतरतेहैं
 पर कलियुग में केवल राम नाम ही सब दुख हरतेहैं ।

कलियुग हैं नहीं यह करयुग कहलाताहैं ।
 जैसा करता फल तैसा मिल जाताहैं ॥
 कर धिनय 'सुधाकर' सबको समझाताहैं ।
 धर शीस धरा पर दास क्षमा चाहताहैं ॥
 म्हा राज ध्यान वचनों पर लाओजी ।
 नित सत संगत में बैठ प्रेम से हरि गुण गाओजी

नोटः—पत्र सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

* प्रकाशक *

भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक (राजस्थान)

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज

श्री गणेश गान



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधर दास बोहरा कवि "सु
ढोंक (राजस्थान)

[तरज] श्रौंजी श्री कल्याण दिगी में प्रभु श्री गणेश जी - वृद्धि सिद्धि प्रदा विनायक, पूज्य प्रथम समाज-
आश्रम श्री गजानंद गणपति देवा । उक्तद्वय सुख सदन पूजन करो सुधाकर, काज ।

संगल मूर्ती प्रथम पुजेवा ॥ आश्रमो

विघ्न विनाशन ऋधि सिधि दाता ।

अक्षर सुवन हो वृद्धि विधाता ।

सुमति मदन दुर्व्यसन नशेवा ॥ आश्रमो

आनन्दवन प्रभु प्रथम मनाऊं । पत्र गुण नैवेद चढाऊं ।

चरणन शरण "सुधाकर," लेवा ॥ आश्रमो

[तरज] नगरानी रा ढाला आश्रमो ३ म्हांका राज ।

गिरजा शिव नंदन आश्रमो २ आश्रमो म्हांका राज ।

श्री गणपति शिव शारद माता सुमर करुं गुण गान ।

श्रीगुरु श्रीगोविन्द चरणमें मंगलदिन धरु ध्यान ॥ नि.

करदोऊंजोर करुं थांकी वीनती सुनहु गरीब नवाज ।

अवनो जनकर रात्रियो स्वामी बांह गहंकी लाज ॥ नि.

काहु के बल नाथ सजन को काहु के बल आचार ।

दीन भरोसे नाथ तुम्हारे सोवत पांव पसार ॥ गिरजा

दास सुधाकर, निशि दिन गावे सुजस तुम्हारे नाथ ।

करकरुणा भवसिन्धुमे तारियो वृद्धनको गहि हाथ ॥ नि

[तरज] तुमहीं करोगे निस्तारा—

प्रथमकरुं थांकीसेवा गजानंद विघ्नविनाशन देवा ॥ प्र

स्नान करा चौकी बैठारुं ।

रत्न जडित सव वस्त्र सँवारुं ।

श्रीगण लगाऊं धर मेवा ॥ गजा

चूप दीप बहु विधि आरति कर ।

मंगल मोदक धरत "सुधाकर," ।

नाथ कुमति हर लेवा ॥ गला

[तरज] प्रभु सोरी राखियो तुम लाज ।

गण पति तुम ही सुमरुं आज ।

शिव सुवन गिरजा नंदन गज वृद्धन श्री गणराज ॥ ग.

[तरज] प्रभुजी न्हारी नाथ उवारो वृद्धन सिंधु मँकार ।

गजानंद प्रथम मनाऊं ऋध सिध के दातार ।

गौरीनंदन शिवसुवन विनायक । वृद्धिविमल म्पन्नर ॥

पूज्यप्रथम त्रिसुवनके न्यामी । दयानिधि करुणागार ॥

दास "सुधाकर," शरण तुम्हारी ।

कीजियो भव दधि पार ॥ गजानंद)

[तरज] धुन, नाटक—

प्यारे प्यारे । गौवरोसुवन गजवदन हमारे ॥ प्या

ऋधि सिध के दाता, माता गिरजा के ला...ला ।

सुमरत सुव पाता, आता भूमन सतवा...ला ।

सुधबुध के देवनहारे । विघ्ननको निशिदिन टारे ॥ प्या-

ध्यान लगावें श्रीमसुकावें मनफलपावें हम भगवन् ।

यशरगुण गावें प्रेमबढावें विनय सुनावें हम भगवन् ।

करके अर्पन तनमनधन । नमें सुधाकर, हम सवजन ।

सा रे मं ष ध नी सा, मा नि ध प म ग रे सा ।

प्यारे... प्यारे... गौवरी

[तरज] हे प्रभु करुणा निधान, दया सय-

श्री गणपती गण राज विनायक-

ऋध सिध सुख सम्पति के दाता ।

शंकर सुवन भवानी के नंदन-

विघ्न हरन त्रिसुवन जन त्राता ॥ श्री

एक रदन गज वृद्धन सदन सुख-

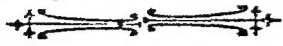
शुभ्र चरणन विच शीश नवाता ।

दास "सुधाकर," प्रभु गुण आगर-

नित करुणा कर तुम ही मनाता ॥ श्री

। भज मन रावे गोविंद हरि ।

गणपति विघ्न हर । गणपति विघ्नहरा ॥ भ.
द्वि सम्पति सुख दाता । बुद्धि विमल करा ॥ भ.
दुर्मति अथ नाशक । जीवन सफल करा ॥ भ.
प्रसु कर, प्रसु करुणा कर । शरण आन परा ॥ भ.

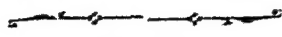


[रज] भाँकी तिहारी, हमने निहारी ।

आ. गजानंद गौरी के नंदन ! शङ्कर के लाल-
परमस्साल' दीन दयाल स्वामी मंगल काज करो ॥ आ.

अथ सिध सुख सम्पति दाता ।

त्रिभुवन के तुम पितु माता । शर्णागत शांश नराता ।
विनती करू तौर, कर दोड जौर, सुखद बहौर' स्वामी-
सुमरु 'सुधाकर, को ॥ आओ०



[तरज] जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।

जय गणेश, जय दिनेश, जीयन सुख दाता । जय०

मङ्गल, मुद सदन शेष । नाशक घन विघ्न केश ।
देश देश सुत महेश, गौरी, विख्याता ॥ जय०

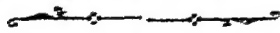
सत चित आनंद सुरेश । बुद्धि वाणि प्रद वरेश ।
हरत त्रिविध ताम द्वेष, "सुधाकर, विघ्नाता ॥ जय०



[तरज] प्रसु मोती तुमही राखोगे लाज ।

गणपति ऋषि सिध के दातार ॥ गणपति०

मंगल मुरती सुखद विनायक । वंदौं वारस्वार ॥ गण०
एकरदन गजवदन विनायक । बुद्धि विमल अंठार ॥ गण-
पारवतीशिव सुवन 'सुधाकर, वाणी विशद सुधार ॥ ग.



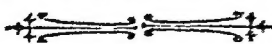
[तरज] गजानंद आनंद करो जी हमेश-

सनाऊं थाने श्रीगण पति गण राज-

विनायक गिरजा सुवन गणेश । डेर

स्नान करा चौकी पधराऊं, पहराऊं रतना रा भेष ।
धूप दीप नैवेद लगाऊं, नित गुण गाऊं हमेश ॥ विना.

रिधसिध सुखसम्पति गुणसागर, सुमरु सुखद सुरेश
विघ्न विनाशन विशद 'सुधाकर, आनंद करन महेश ॥ वि.

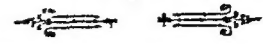


सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

[तरज] जै, जै, करुणा निधान ।

जै, जै, गणपति गणेश । जै, जै०

नाशक अथ विघ्न केश । वर दायक सुत महेश ॥ जै०
करिवर तन एक रदन । मूषक वाहन सु वदन ।
आनंद घन सौख्य सदन, सुखद 'सुधाकर, सुरेश ॥ जै०



[तरज] पनिहारी जी हेलो ।

प्रथम मनाऊं आपको गिरजा के लाल, गिरजा के लाल-
हरो सकल जंजाल ! गणपति जी । डेर
एक रदन गज वदन गले कमलन की माल, कमलन—
सुन्दर रूप विशाल ॥ गणपति०

विघ्न विनाशक, सुखकरन, संतन प्रतिपाल, संतन—
कुमति निवारन वाल ॥ गणपति०

दास "रसिक, चरणनपरे देओ भक्ति कृपाल, देओ—
सुजनहिं करो निहाल ॥ गणपति०

[तरज] गणपति तुम को ही प्रथम मनाऊं ।

हित से श्री गणपति को ध्याऊं । डेर
अर्द्धिप्रद्वि ले संग पधारो । निरख मगन हुइजाऊं ॥ हि.

स्नान करो धंदन चौकी पे, गद्गाजल भर लाऊं ।
भाल तिलक केसरको करिहुं, भूपणवसन सजाऊं ॥ हि.

निर्शा दिन तुमरो ध्यान धरुं डर, हर्ष २ गुण गाऊं ।
आनंदकरन सकल दुखभंजन, तुमको प्रथममनाऊं ॥ हि.

मोती पाक मगद के मोदक कर २ भोग लगाऊं ।
'हंसराज, पे दया करो नित चरणन शीश नवाऊं ॥ हि०

[तरज] दयानिधि तोरी गति गहन अपार ।

गजा नंद विघ्न विनाशन हर ॥ गजानंद ।

एक रदन गज वदन विनायक रिधसिध के दातार ।
सुख सम्पति मुद मंगल दायक, बुद्धि विमल सुधार ।

गजा नंद विघ्नविनाशन०

स्नान कराऊं वस्त्र सजाऊं गल पहिराऊं हार ।
धूप दीप कर भोग लगा ऊं लड्डवन वाँह पसार ।

गजा नंद विघ्न विनाशन०

दीव्यो नाथ कृपाकर वाणी विद्या के भण्डार ।
कीव्यो करुणा शिष्य, "सुधाकर, करुणा के आगार ।

गजानंद विघ्न विनाशन०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक



शुक्लाम्बरं धरं विष्णुं, शशि वरणं चतुर्भुजम् ।

प्रवेनं वदनं ध्यायेत्, सर्व विघ्नोप शान्तये ॥

[तरज] हे प्रभु कमला निधान विनय मेरी सुन लोच्यो ।

भारत में भगवान प्राण बन आज्यो ।

दुष्ट का अभिमान महान बडा जायो ॥ भा०

हे विषदा में भारत वासी ।

देर सुनो वैकुण्ठ निवासी ।

धर कमला पर ध्यान विधान बनाजाओ ॥ भा०

अमुदन दलने धर लिया है ।

क्यों तुमने मुझ फेर लिया है ।

जे कर में धनु वान निशान मिटा जायो ॥ भा०

भूलगये हैं याद तुम्हारी ।

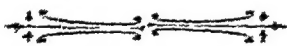
कौजिये रत्ना नाथ हमारी ।

हे इस पशुन समान कि ज्ञान सिखाजाओ ॥ भा०

दास "सुधाकर,, सेवक स्वामी ।

चरण कमल धिच है अनुगामी ।

अब नैनन विच ध्यान मुजान समाजाओ ॥ भा०



[तरज] रिम किस वरसे चादरवा—फिलिम

भारत में अब तारनियां दशरथ नृप के महलन में -

रघु नन्दन आओ आओ सिवावर आओ ॥ भा०

भूल पर गौलोक निवासी आज्याओ आज्याओ ।

आरत वसुन्धरा की पीर मिटाजाओ मिटाजाओ ॥

चक्र सुदर्शन धारनियां—

धर कर धनु वान करन में ॥ रघुनन्दन०

आर्य भूमि को फिर असुरों ने घेरा है, घेरा है ।

सूर्य वंशि सूरज तिन जगत अँधेरा है, अँधेरा है ।

नीचन लजम सुधारनियां—

सूर्य तट सुमनन बनमें ॥ रघुनन्दन०

निर्मल अधियां वाट निहारी जाती हैं, जोती हैं ।

चरण कमल स्वामी के निशि दिन धोती हैं, धोती हैं ।

किसे रुम रुम पांजनियां —

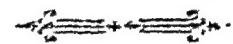
बाजें उस राज भवन में ॥ रघुनन्दन०

हे प्रभु प्राणाधार विनय दुक मेरी है, मेरी है ।

दिलमें हरदम याद "सुधाकर,, तेरी है, तेरी है ।

दुष्ट दलन दुख धारनियां -

भक्तन के भाव गहन में ॥ रघुनन्दन०



[तरज] देवो नट खट चिहारी रोके पनबट की नारी

आज जन्मे हैं राम नारी शोभा के धाम—

चलो लेने बधाई नृपति दरवार ।

बार बार बार ! बार बार बार ! बार बार बार ॥ आ०

आनंद धर धर नगर हाट आये ।

महिमां न बर्खन में आवे हमार—

चली वन ठन के नार राजा दशरथ के डार,

करें लाला को गोदी में ले ले के प्यार,

प्यार प्यार प्यार ३ ॥ आ०

याचक भी आये याचनियां भी आई ।

आये तहां पर गुणी जन अपार—

करें अरजी सरकार देखो धन के धण्डार,

हाथी घोड़े हजार मार्ण मुक्तन की मार

मार मार मार ! मार मार मार ! मार मार मार ॥ आ०

ढाडी भी नाचे ढाडनियां भी नाचे ।

नाचे नगर नार बैयां पसार—

करे प्यारे को प्यार बैयां गरदन में डार,

पेसी आई "सुधाकर,, तहां पर बहार,

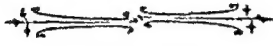
हार हार हार ! हार हार हार ! हार हार हार ॥ आ०

[तरज] जोवनवा ने कैसे कैसे जुलमवा ढाये ।

ले लूँगी २ राजाजी से नई नई सारी ।

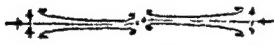
रे, राम लला पे, तन मन धन बलिहारी ॥ मैं तो
रसी शोभाछाई कछुवरनी न जाई हर्षितमन सब नरनारी ।

२ फिरत कौसल्या, नृप मन आनंद—भारी ॥ मैं
गावत वधाई पुर अवध के माहीं सखी सुन्दर वार निहारी ।
ऋषि मुनिजन घन मंगल वांचे, नाचें देदे—तारी ॥ मैं,
गगन विमान छाये सुरज के आन कररई पुष्पन वर्षारी ।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन भूलें पलना चारी ॥ मैं तो
होऊँगी निहाल लूँगी मोतिन कीमाल नामान् राज निहारी ।
सबही आश पुराय 'सुधाकर, दीव्यो ढाडनियां री ॥ मैं-



[तरज] साजन मोरी बारी उमरिया जी ।

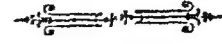
बधैया राजा वाज रहैया जी । ओ, बधैया, डेर
राजा दशरथ घर पुत्र प्रकट भये । आनंद मंगल छेया ॥ व,
मोतियन चौक पुराओ री सजनी । साज मुहाग सजैया ॥ व,
कंचन थार कनक जल भारी । आरती मुभग वनैया ॥ व,
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन । चिंजी रहों चारों भैया ॥ व,
चद्र चरन मन हरन 'सुधाकर, । नैनन बीच समैया ॥ व.



[तरज] सरोता कहां भूल आये-

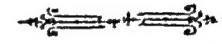
सखीरी चलो आओ आओ, गाओरी बधैयां ॥ सखी-
राम जनम दशरथ घर लीना आनंद पुर में छैया ।
गौ द्विज सुर संतन हित कारन प्रकटे चारों भैया ॥ स
नृतन साज सजो सब सजनी कर मइदनी लगैया ।
हिल मिल भूप भवन सब चालो मोतियन चौक पुरैया ॥
वर्णत महिमा लेन वधाई ढाडन डाडी ऐया ।
थै थै तक तक ताला नाचे छिम छिम ताला-थैया ॥ स
मागद सूत वंदी जन सारें मुख माँगे वर पैया ।
जो आनंद कवहूँ नहीं आये सो अब पायो दैया ॥ स

ऋषिमुनि जन सब करत आरती दर्शन से सुख पैय
तन मन धन सब वार 'सुधाकर, चरणन शीस नवैया
सखीरी चलो ०

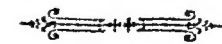


[तरज] आई सावन की बहार, बरसा वरसे मूसलघार
मच रही जय जय कार । वधाई वाजे नृपति के द्वार ॥
आज अवध में आनंद छाये ।
महिषिन के मन मुद न समाये

जाये भुवन सुत चार ॥ वधाई ०
गुरु वशिष्ठ ढिंग दशरथ ठाढे ।
धन धन कहत प्रेम डर वाढे ॥
पूजत चरण पखार ॥ वधाई ०
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन ।
नाम धरे मुनि कर मन चितन ।
त्रिभुवन रूप निहार ॥ वधाई ०
महिमां परम पुनीत 'सुधाकर, ।
गुणिजन गावत नित वसुधा पर ॥
तन मन, सुरति विस्तार ॥ वधाई ०



[त.] होजो म्हार राधा गोपीनाथ री वंदी वाजी तो सई ।
राजा दशरथ के दरवार वधाई वाजी तो सई ॥ डेर
श्रवण सुनत ही जन्म रामको त्रिभुवन में सुशी भई ।
कौशलपुर की जनता सारी भूपति द्वार गई ॥ राजा ०
प्रेम मगन होय नृप निज मनमें ऋद्धि लुटावदई ।
वाजत ताल मृदंग भौंक डफ पालुर नाचरही ॥ रा ०
पवन विमानन पर नभ छाये देव वधुन संग लई ।
होरहे जैकार भुवन में, पुष्पन वृष्टि छई ॥ राजा ०
दान हेम गज अश्व भूमि रथ अगणित वस्तु दई ।
'भक्ति, 'सुधाकर, आस लगाकर तुलसीदास ने पई ॥
राजा दशरथ के ०



सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं ।

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक



[नरञ्ज] लवों पे तबलसुम निगाहों में विजन्ती वह देखो क्रयामत चली आरही है ।

कृपा तुम कहीं भी दया धाम जाकर मगर देश में तुमको आना पड़ेगा ।

इसी जन्म भूमि में पुनः जन्म पाकर मदाके लिये फिर न जाना पड़ेगा ॥

प्रबल होचुका है अमुर दल मुरारी मला कौन है जो खबर ले हमारी ।

तुम्हीं को विहारी ओ विविधनाप हारी वही चक्र फिरसे घुमाना पड़ेगा ॥

यह ऋषियों की भूमि है क्यों दीन आरन कि छाये हैं लंका नीति विशारद ।

मनातन धर्म और तुम्हारा यह भारत वचान्द दयामय वचाना पड़ेगा ॥

अनेकों ही रावन प्रकट होगये हैं मियार्या सती संस्कृति के धरन को ।

महा मोह में बोर जन मोगये हैं तुम्हीं को शगसन उठाना पड़ेगा ॥

द्विरग्यात्रि मृष्टि बनी जारही है विधानों की काली यदा छारही है ।

दशा धर्म की साफ बत नारही है तुम्हें रूप नरसिंह बनाना पड़ेगा ॥

बिनय नम्र करता है यों चर्ण चाकर कव आर्योने दीनों के द्वारे, 'सुधाकर' ।

जो आये गदाधर कभी तुम यदांपर तो अवतार कलका कहाना पड़ेगा ॥

[नरञ्ज] प्रभा नंदे दृशान पाने से पहिले मेरा प्राण तनसे निकलने न पाये ।

हो भगवान भकों के वश में सदा तुम तो भक्ति से तुमको रिकाना पड़ेगा ।

मैं हूँ भक्त और मेरे भगवान हो तुम यह सम्बंध पूरा निभाना पड़ेगा ॥ हो भगवान०

सुदामा के तन्दूल चवाये थे तुमने मधुर बेर मिलनी के खाये थे तुमने ।

इसी भाँति तो प्रेम भक्ति के नाते मेरा प्राँति भोजन भी पाना पड़ेगा ॥ हो भगवान

गये तुम घना मरु की छान छाने भये थे विदुर घर कभी शाह खाने ।

धरे द्वार भी नाथ केई वहाने करके कृपा तुमको आना पड़ेगा ॥ हो भगवान०

अहल्या उवारी नारी पाण्डुकी नारी ओ बाँके विहारी अब सुथला हसारी ।

जटाघु की धूरी जटाघों से झारी वही प्यार जन पर लताना पड़ेगा ॥ हो भगवान

अनेक' सदा नीच से नीच तारे अनेकों अधम से अधम थी उधारे ।

तो मंगेऽपगधोंपे भी तुम को प्यार च्मा भाव पूरन दिखाना पड़ेगा ॥ हो भगवान०

कभी देवताओं को दियाथा अमर धन कियाथा उर्दी के लिये सिन्धु मन्थन ।

इसमें भी दखन से चरन साधुरी पन "सुधाकर," सुधासम पिलाना पड़ेगा ॥ हो०

[तरज] खुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पड़े हुवे हैं ।

समझ में आया है जो कि मेरे उसी का अनुभव सुनारहा हूं ।
दुई का परदा उठाके दिलसे खुदी का नकशा मिटा रहा हूं ॥

जगत है ईश्वर का रूप सारा जगत से ईश्वर नहीं है न्यारा ।

असार जग की प्रपंच धारा में सार ईश्वरही पा रहा हूं ॥

पता नहीं है किसी का कोई कि कौन किस रूप में छुपा है ।

मैं जान ईश्वरकी ज्योति सबमें सभी को मस्तक झुकारहा हूं ॥

हैं विश्व में जो कि दे धारी अछूत वैष्यादि वर्ण चारी ।

समझके ईश्वर की सृष्टि सारी गले सभी को लगा रहा हूं ॥

विधान कुछ कर्मका अलगहै जो करता सबको पृथक पृथक है ।

मगर मेरे दिल में एकहैं सब में सबके दिल में समा रहा हूं ॥

प्रकाश देता है ज्यों दिवाकर जगत में सबको समानता से ।

उसीतरह से मैं बन "सुधाकर,, सुधा जगत को पिला रहा हूं ॥



[तरज] कहरहा है आसमां यह सब समां कुछ भी नहीं :

मूर्ख हूं मैं मूर्खता मेरी पे मत कुछ ध्यान दो ।

करके करुणा की नजर अब शान्ति भगवान दो ॥

ओ कृपामय दीन हूं मैं, आप दीना नाथ हो ।

दीन दुखियों को दयामय तुम दया का दान दो ॥

हांकतेये रथ कभी भारत में अर्जुन का तुम्हीं ।

मेरेजीवन का भी रथ हांको मुझे सम्मान दो ॥

उम्र गुजरी आपको जानां नहीं अज्ञान से ।

रूप अपना और तुम्हारा जानलूं वह ज्ञान दो ॥

है निवेदन नम्र चर्णा में "सुधाकर,, वस यही ।

देह को दो मुक्ति दाता, जीव को कल्याण दो ॥

[तरज] ए दर्द दिल बतादे कबतक तू कम न होगा ।

मैं मनको रंग रहाहूं तनको नहीं रगूं गा ।

जल में कमल है जैसे इस विश्व में रहूं गा ॥

तज मान मोह ममता हिंसा असत्य चौी ।

पाखण्ड दंभ लृण्णा इन से सदा वचूं गा ॥

देही समझ चुकाहै, है देह चार अपनी ।

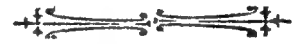
यह लाख होगी मेरी, पर इसका मैं नहूं गा ॥

ब्रह्मांड की गुफा में अज्ञानता के बश हो ।

सोती रहेगी दुनियां मैं रात दिन जगूं गा ॥

पाऊंगा जय "सुधाकर,, कर्मों का नाश करके ।

दृश रहूं गा जगका ना दृष्य मैं बनूं गा ॥



[न.] जुदा गुल से रहे गुल गुल भला फिर कैसे राहत हो ।

यह कहना ना मुनासिब है तुम्हें क्यों कर रिक्ताऊं मैं ।

सुनो मेरे रिक्ताने का स्वयं रस्ता बताऊं मैं ॥

रिक्तया था मुझे भिलनी के भूँटे चार बेरोंने ।

न भूँटे खट्टे मीठे पर कभी कुछ ध्यान लाऊं मैं ॥

रिक्ताना जो मुझे चाहे विदुर से पूछले रस्ता ।

सुदामा की भपट कर पोटली चांबल चवाऊं मैं ॥

न रीभूँ गान गणोंसे न रीभूँ तान टणों से ।

वहादो प्रेम के आंसू चला वस आप आऊं मैं ॥

न रीभूँ फूल से फल से न रीभूँ गग के जलसे ।

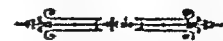
हृदय में भेद है जवतक कहो क्योंकर समाऊं मैं ॥

न पत्थर सा मुझे समझो नरम हूं मोम से बढकर ।

गरम आहें जो छोड़ो तो पिघल वस जाऊं मैं ॥

न मन में चाह है पूरी न आंखों में हैं प्रेमाश्रु ।

वताथो तो "सुधाकर,, किसतरह फिर तुमको पाऊं मैं ॥





[तरज] सैयो जानण को जायो आवसी ।

थांकी सुना में साजन म्हाय नैण श्वाकर बरसे—
म्हाने चरण रा दग्गण स्वामी कवतो मिले ।
थांकी श्रोव्युं डी कर २ पल पल छिन २ त्रिवडा तरने—
म्हाय द्विवडा ग अंतयोमी कवतो मिले । थांकी०
थांसो मुत्र दाना प्रमुजी पाये ना जप में कोई ।
ऊमर अंदाजा नारी दुखदया में विरथा खोई ।
माया में कप कर काया अब क्रमां ने राई प्रमु जी-
सेवक ने सब सुखधामी कवतो मिले ॥ थांकी०
चिन्ता में चित छे, म्हारो लागे छे, सब जग नारो ।
रोरो कर नित दुन्वितारो, शर्णी न्हाले छे थारो ।
चंचल छे चपला सूं भी यो मन शोगण गां प्रमु जी-
ई की गत ने विश्रामी कवतो मिले । थांकी०
पापां री पोटां माथे धरकर, आयो छूं थपे ।
व्याका बोसतं सूं सारी धरती भी हपे कापे ।
यां वित पण दीनारी करुणा हः हः एण मुत्र सपि प्रमुजी-
ई दुख में प्रण वासी कवतो मिले ॥ थांकी०
अब तो केसरिया म्हाने करणी री माफी दीज्यो ।
संकट में शरणगत री सांश्रिया-थे मुत्र लीज्यो ।
निर्वन रो चेडो भव से पार 'सुधाकर, कीज्यो प्रमुजी-
जीवन रा सुर पुर गामी कवतां मिले । थांकी०



[न.] सवजाओ पिया परदेस हेवका री मारी मर जाऊंली ।

श्याम सुन्दर ही रे देस पिया नहीं मानूँ मैं तो जाऊंली ।
कोमल तन वारो भेष दरगण कर मुख पाऊंली ॥ श्याम-
हरि का चरण में मैं तो तन मन धन विसराऊंली ।
ध्यान लगाऊंली हमेशा निशिदिन प्रसुगुण गाऊंली, श्या-
वांकीसी मांकी वांकी पलकाँरा पलना में मुक्ताऊंली ।
भूलोला प्यारा मयुरेश द्विवडा में फूली ना समाऊंली, श्या-
पीत वसन वनश्याम वदन पहिराऊंली ।
मोर मुकुट पर पेश रतना री किलगी मुक्ताऊंली ॥ श्याम-

श्रीट कुण्डल बांका नामा में मोती कल
वृं धर वारा कारकेम कजरा व्यो नैणामें वसाऊंली
मोहन प्यारा जी ने मांखन मिश्री खवाऊंली ।
गोद खिलाऊंली सुरेश कुंजन में नाचूँली नचाऊंली, श-
जद बांकी मोठी २ मुखली री धुन सुन पाऊंली ।
प्रेम वटाऊंली विशेष बांखूँ सांची लगन लगाऊंली, श्या
हठ जावेला म्हाय दान्हा तो शिवर मनाऊंली ।
आनंदवन सर्वेश "गिरधरजी," ने समझाऊंली ॥ श्याम-



[तरज] नगराली लगन नगर मने छिटकाय मती—

सखी त्याग जगत सूं मोह ममत,
मैं तो प्रमुजी रा जस गुण गाऊंली ।
तज विपियन रो अनुराग,
मजन सुमरन सूं ध्यान लगाऊँ ली ॥ सखी०
दरमण करवा नित उठ मन्दिर जाऊँली ।
प्रमुजी रा चरण कमल में सीस मुक्ताऊँली ।
म्हारो तन मन धन उनका चरण में,
अर्पण सब कर आऊँगी ॥ सखी०
दूर कुमति कर सुमती ने अपणाऊँली ।
पाल दया कोई जीवने नहीं सताऊँली ।
निज आत्म ने पहिचाण परम पद,
जोग जुगत सूं पाऊँली ॥ सखी०
प्रमुजी री छवि नित नैण माँय फुलाऊँगी ।
दित चित सूं कर सेवा दहल बजाऊँली ।
सब माया रा परपंच असत,
म्हाय मन सूं दूर हटाऊँली ॥ सखी०
सत मारग में अर्पणा पाऊँ जमाऊँली ।
क्राम क्रोध ने छोड़ समी गम खाऊँली ।
धर निशि दिन आरत ध्यान "सुधाकर,"
नैनन जज्ञ वरसाऊँली ॥ सखी०



] भक्तियों सतवन्ती श्री भगवान् ।

श्री हारा प्रभुजी शर्मा में आये चर्णा दास जी-
प्रसन्नो अपरो पास जी ॥ अजी०

प्रथम ध्यान लगास्युं जस गुण गास्युं प्रभुजी ।
जगमग ज्योति जगास्युं दरसन पास्युं प्रभुजी ।
श्री म्हारा प्रभु जी—

दुष्कर्मा रो फल नास जी ॥ सेवक ने०
मैं धन थांके भेट चडास्युं प्रेम बडास्युं प्रभु जी ।
तना ने थांको ही पाठ पडास्युं नाम रटास्युं प्रभु जी ।
अजी ओ म्हारा प्रभु जी—

चाकर रा चित री पूरो आस जी ॥ सेवक ने०
नैणां में थांको ही रूप वसास्युं रंग जमास्युं प्रभु जी ।
पलकां ने थांकी गेल विद्यास्युं सीस नचास्युं प्रभु जी ।

अजी ओ म्हारा प्रभु जी—
मेरो चातक अर्थो जन रो प्यास जी ॥ सेवक ने०
वित्ती पर ध्य न 'सुधाकर, ल्याज्यो मत विसाराज्या प्रभुजी ।

निर्वुध री करणी पर मत जाज्यो द्या दिखाज्यो प्रभु जी ।
अजी ओ म्हारा प्रभु जी—
प्रकिरो मन में करो प्रकाम जी ॥ सेवक ने०



[तरज] सुरमां की डावी तां म्हारे हाथ देदीज्यो ।

प्रभुजी थांका चरणा में अवतो सीस मुकाऊं छूं ।
दूरी माया ममता ने कर शरणा में आऊं छूं ॥ प्रभु०

लागी २ साजन सुमरन सूं लगन ।
जागी २ जिवडा में गहरी सुरता री अगन ।
कव आऊं सेवा में कव पाऊं दर्शन ।

पूरी २ करुणा सूं नैना जल बरसाऊं छूं ॥ प्रभु०
जो थे म्हारी करणी री ओड़ी प्रियवर जाओला ।
म्हारा सारा दुष्कर्मा ऊपर ध्यान लगाओला ।
तो फिर म्हांसो अपराधी जन दूजो नहीं पाओला ।
इतना भारी दूनियां में नित उठ पाव कमाऊं छूं ॥ प्रभु०

तारो २ उचारो स्वामी सेवक छूं थांको ।
थे ही कस्यो निस्तारो म्हारा सङ्कट विपदां रो ।
हेलो सुणज्यो मुखदाता दुख में निर्मल दीनारो ।
सांचा मन सूं केमरिया थाने ढेर सुणाऊं छूं । प्रभु०

म्हारा मन री जाणोला सब थे अंतर्धामी छो ।
थे अविनाशी अविकारी औ निरद्वल निष्कामी छो ।
सारा जग का करता हरता भरता सरनामी छो ।
सुमती सागर 'सुधाकर, थांका जस गुण गाऊं छूं ॥ प्र०



[त.] वीछड़ो उतारे जाने जान द्यूं रे बालसां ।

ओ मनमोहन कृष्ण कन्हाई जी सांवरिया ।
म्हाना चीर चुपय के जाय छुप्या—
थाने काई या भाई जी, सांवरिया ॥ ओ०

थांके ही वारण कानिक न्हाई जी सांवरिया ।
थे तो करी पण यो निटुराई जी सांवरिया ।
म्हे तो टाड़ी छां अंग उघाडी थे साही—

कगो ? म्हांकी छुपाई जी सांवरिया ॥ ओ०
श्री जमुना जी रो नीर छे ठारी जी सांवरिया ।
पीर उटे म्हांने जाड़ा री भारी जी सांवरिया ।

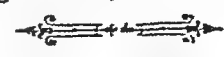
म्हारा कुल विहारी ओ श्याम सुरारी—
क्यों म्हांने मताई जी सांवरिया ॥ ओ०
गोप्यां तो थामूं प्रीत लगाई जी सांवरिया ।

दरशाण रे हित वेग सी, धाई जी सांवरिया ॥
पण थाने तो धाई घणी चपलाई—
अनोखी छिटाई जी सांवरिया ॥ ओ०

दे दूयो जी म्हांका बख दयाकर सांवरिया ।
पांच परुं थांके सीस मुकाकर सांवरिया ।
जद बैठ कदम्ब की डार पे माधुरी—

वंसी बजाई जी सांवरिया ॥ ओ०
श्याम कहे सुन री सतवारन नागरिया ।
तू जमता जी री छे अपराधन वावरिया ।

होय नम्र जो न्हाई लजाई नहीं—
मर्याद घटाई "सुधाकरियां, ॥ ओ मनमोहन०



❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

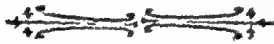
चेतावनी



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधर दास बोहरा कवि "सुध"
टांक (राजस्थान)

[तरज] कायाका पिजरा बोलैरं एक साँसका पंछीबोलै ।
 है अजब खेल क्लिनमन का, इस मतवाली दुनियाँ में ।
 कोई थाता' कोई जाना' । कोई हँसता' कोई गाना ।
 पीट पीट सिर रोता कोई, कोई देवी देव मनाता ।
 पंदमरा देखा कोई कोई खाली सुनिया मैं ॥ इस मत०
 कोई मंदिर महल बनावे । कोई शाही व्याह रचावे ।
 कोड हवापर किले चुनवे, ऊँचे २ शिखर चढ़ावे ।
 अन्न विना कोई दुखपावे, बोया सो लुनिया मैं ॥ इस
 तिलको समक २ प्यारा । बोही पाया अति दुखियारा ।
 भूटकपटका, सब व्यञ्जारा, जान'सुधाकर, कौन्दिनारा,
 बिनहरिनाम यहाँका सारा, नकशा बदगुनियाँ में ॥ इस.

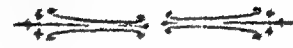


[तरज] मन हरि को भजन कर भाई ।
 है दो दिनकी जिन्दगानी, राम सुमर रे प्राणी ॥ देर
 यह संसार असार है सारा, भूटी असन कक्षानी ।
 सारनामहै नारायण का, जय तनमनये बानी ॥ राम०
 क्या लाया क्या लेजावेगा, सोच समक रे मानी ।
 पड़ीरहेगी सारीवसुधा, अंत न सँग कहु जानी ॥ राम०
 तेली का सा बेल बना नर, खूब फिराई बानी ।
 पापकपटकर मायाजोड़ी, हरि की याद भुलानी ॥ राम०
 वेद पुराण भागवत गीता, सुनी न सन्नत बानी ।
 अपनी २ टान "सुधाकर,, ग्याक जगनकी बानी ॥ रा०

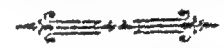


[तरज] रे मन राम सुमर दिन रैन ।
 रे मन शिवशिव भज सुखकन्द ।
 रह निशि दिन निवृन्द ॥ रे मन शिव०
 विषय वासना त्याग जगनकी, दुखदा दुर्तिन दुखन्द ।
 खोल परसपद निजकाया में, मायाहोय सुखन्द ॥ रे मन-
 हृदय गगन में विमल ज्ञानको, उदयहोय जव चन्द ।
 दृष्टि परे तव आतमब्रह्म को, रूप अखण्ड अमन्द ॥ रे०

अष्ट कमल दल वत्सथल चित्र, मङ्करही मकर
 रसवायनको बन मधुकरसम, छौड कलुष भवकन्द ।
 गुन्यगिनपर इद आसनकर, दिव्यज्योती निस्सन्द ।
 दामोऽहम तज मोऽहम २ तन्वसाँसः जपकन्द ॥ रे मन
 अटके पदको खोल "सुधाकर,, नैन निपट कर वन्द ।
 आपही आपमें आप नमाकर, ले अन्त आनन्द ॥ रे.



[तरज] जगत में, म्बार्थ के सब मीन ।
 रे मन उमरा वीनीजाय । देर
 बारवार तोहें मैं समझाऊँ । तू नहींसमके हाय ॥ रे मन-
 नरतन पाय भजनकर प्रसुको, मतना समय गमाय ।
 चरण कमलमें ध्यानलगा, मिल नारायण से धाय ॥ रे-
 काह न पावक में जाँरजावे, काह न सिधु समाय ।
 काह न अचला करि बनआवे, काह कालनहींखाय ॥ रे-
 धर्मको धन पावक न जरावे, मन नहींसिधु समाय ।
 पुत्र न अचला करि बनआवे, नाम काल नहींखाय ॥ रे-
 क्योंनहीं तृणान्याय "सुधाकर,, गुण गोविंदकेगाय ।
 जीवनकेदिन वीतनपर पुनि शिरयुनिधुनि पढ़ताय ॥ रे.



[तरज] भजन बिन उमरा वीनीजाय ।
 करम का दंग निराला है ।
 क्या फूला फिरता किसधुनमें, तू मतवाला है । करम'
 आनानहीं नजर यहाँकोई, जीव सुखी गुशाहाल ।
 लगाहुआ है थोडा २ सब को रंज मलाल ।
 जगन सब देखाभाला है ॥ करमका.
 आज किसी को तखनशी, होने का हर्ष अपार ।
 कल रोते उनही को देखा, खव जार बेजार ।
 वदन पर कमल काला है ॥ करमका-
 बड़े बड़े बोधा प्रथी को, अपनी अपनी गाय ।
 समागये इसमें, पर वह ना हुई किसी की हाय ।
 जगन मगडोंकी शाला है ॥ करमका.

पिता वन्धु सबदेखे, मित्र कुटुम्ब परिवार ।

टिकट जिसदम यमपुरका, कोईनहीं हितकार ।

में डालता है ॥ करमका.

आँखहियेकी खोलो, अरु कलुकरो विचार ।

फिर हाथ न आवे, साधन करो अपार ।

कुञ्ज होनेवाला है ॥ करमका.

गो विश्व विषय सबभाई भजनकरो तिहुँकाल ।

पार अगर होनाहै भवसागर से "गिरधरलाल", ।

जपो हरिनामकी माला है ॥ करमका.



[तरज] दिखाल्याओ ढाड़ीजी मोहे राम जनम दरवार ।

भजन कर भगवत का लगजाय जो चेड़ा पार । टेर

जगत सब भूटी माया । अरे मन क्यों भरमाया ।

ताशवान है यह काया, तू करता जिसको प्यार ॥ भज.

नाम हरि का चित लाकर । प्रेम से नित्य जपाकर ।

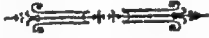
ज्ञान ध्यान से सुरत लगाकर, लेना आसन मार ॥ भ.

मित्र धन महल खजाना । संग कुञ्ज भी नहीं जाना ।

नहीं कोई अपना, वेगाना है, सारा संसार ॥ भजन.

'सुधाकर, श्याम विहारी । मुकुट धर कृष्ण मुरारी ।

गिरवर धारी सङ्कट हारी, पर होजा बलिहार ॥ भज.



[तरज] जपो हरि नाम, वन्दे उमरा बिहानीरे ।

तजो अभिमान ! उमरा ब्रथा ना गमाओ रे ।

यह दुर्लभ मानुप तन पाकर मतना मुफ्त गमाओ रे ।

भजन करो आनंद धन प्रभु को—

भव के वन्धन से भैया छूट क्यों न जाओरे ॥ तजो.

गर्भवास में कौल कियाथा क्या ? सो नांय मुलाओरे ।

जन्म जगत में पाकर के अब—

जीवन नैया को भैया पार ही लगाओ रे ॥ तजो.

सत्संगत में बैठ प्रेम से गुण गोविंद के गाओ रे ।

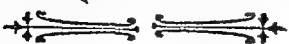
धर निज आतम ज्ञान, ध्यान से—

अपनी काया में माया राम ने जगाओ रे ॥ तजो.

चरण कमल विन्ध ध्यान लगाकर संतन शीस मुकाओरे ।

आशा कृष्णा त्याग "सुधाकर,—

गिरवर'धर विश्वम्भर ने आपणो बनाओ रे ॥ तजो.



[तरज] प्रभु तू, प्रभु तू, प्रभु तू, प्रभु तू ।

कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा ।

हेरे मन निशिदिन पल छीन जपना ॥ कृष्णा ।

ब्रज राज "सुधाकर, श्याम विना—

संसार असार में कोई न अपना ।

धन माल रु महल कुटुम्ब परिवार—

सभी दिन चार का है एक स्वपना ॥

चेत अरे मन मूरख तू—

कर प्यार न याको विसार कलपना ।

विश्व बहार को थोरी सी वाहर—

निहार ले चार है आखिर खपना ॥

यही सोच विचार के तज कृष्णा ॥ कृष्णा०

ध्यान भगवत का धरो कुछ मान मोह विसार के ।

प्यार अरु व्यवहार भूटे हैं सभी संसार के ॥

भीम अर्जुन युधिष्ठिर सहदेव नकुल कुमार के ।

रहगये गुण और अवगुण शब्द दो ही सार के ॥

"गिरधर, भज गिरवरधर कृष्णा ॥ कृष्णा०



[त] रेमन कर भगवत से प्रीत जगतमें जीवन दो दिन का,

प्यारे प्रेम प्रभो से करले जीवन मतना ब्रथा गँवाय । टेर

प्रेम को दे निज दिल में स्थान ।

ब्रज अपने को ले पहिचान ।

वना यों आतम का कल्याण ।

ध्यान उसी से लगा न जाने प्रान चना कव जाय ॥ प्या०

वह मालिक सबका है सिरताज ।

उसी को है सब जग की लाज ।

दौर फट आय भक्त हित काज ।

आलस में क्यों पड़ो समय को परिवर्तन होजाय ॥ प्या.

गर्भ में रह्यो दुःख से रोय ।

जन्म जब दियो दया कर तोय ।

अकारथ मूरख मतना खोय ।

अवतो आखें खोल काल रह्यो शिर पर चकर खाय ॥ प्या'

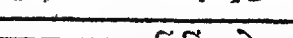
दया निज उर के अन्दर धार ।

लगेगा भव सागर से पार ।

मिलेंगे नारायण करतार ।

कर निशिदिन शुभ कर्म "सुधाकर,—

जनम मनुज को पाय ॥ प्यारे प्रेम०



❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

भक्तों के भगवान



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधर दास वोहरा कवि
दॉ. (राजस्थान)

[तरङ्ग] दीनत पती दीन वन्दु भजरे मन मेरे ।
श्री रघु पती चरण शरण सब मुझ मन लहि रे ॥ श्री०
रसना गुण नाथ नाथ । प्रभु दर्शन पाय पाय ।
जग दुख विसराय घाय, सुख निधि पद गहि रे ॥ श्री०
ममता मल त्याग भाग । रैन दिवस जाग जाग ।
धर हिय प्रेमानुराग सरिता सम बहि रे ॥ श्री०
हे बही पितु मान तात । ब्रह्मादिक जिन हीं व्यात ।
निगमागम सुयश गात, जग पति कहि कहि रे ॥ श्री०
विश्व विषय विषदु जान नाम 'सुधाकर' हु पान ।
त्रिभुवन पती अटल भक्ति, भक्ति भुक्ति चहि रे ॥ श्री०

[तरङ्ग] सुमरन कर राम नाम विसरे मत भाई ।
जय जय रघु कृत दिनेश वैदेही साथे ।
दीनत रो मुन सँदेश धरत हाथ माथे ॥ जै जै
सबही अब दूर करत । भक्ति विमल पूर्ण धरत ।
ममता मद मान हरत, करुणा कर नाथे ॥ जै जै०
रे मन नहीं क्षीव सुनत । त्रिभुवन पति नाँव गुनत ।
मूरख क्यूं मूढ़ धुनत तज कर निज प्राथे ॥ जै जै०
नि श दिन हरि गुण जो गात ।
सोहि मन 'सुधाकर', समात ।
मिलि है प्रभु परत माँत । भर भर कर वाथे ॥ जै जै०

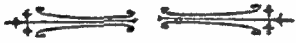
[तरङ्ग] नाथ कैसे गल को फँद लुड़ायो ।
नाथ मैं तो आयो हूँ शरण तुम्हारी ।
मोरी सहाय करोजी गिरधारी ॥ नाथ०
भक्त चारन अमुर सँहारन देह अनुज की धारी ।
पैसे हो शर्णागत वदमल, विषदा जन की टारी ॥ नाथ०
गर्भित रावण जानिन महिमा छलसे हरी सियाप्यारी ।
अंजनी सुत वजरंग ने जाकर लंक जरा दई सारी ॥ ना०
मख सम्पूर्ण कियो मुनि को पुनि, तारी अहल्या नारी ।
जाय जनक पुर तोड़ धनुष को, सीता सोच भिवारी ॥ ना०

जानि अशुभ दिन अपने पती को बोली मैंदोदरी ।
जाय चरण पिया गद्दो रघुवर के नातर होयगी च्वारी ।
अशरण शरण दया निधि तुमहो राखो लाज हमार
दीन 'सुधाकर', शरण गद्दी प्रभु हो निशि दिन बलिहारी ॥
नाथ मैं तो आयो हूँ शरण ०

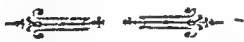
[तरङ्ग] बनादे बखी कौन गली गये श्याम ।
कहन हरि अर्जुन मान सही ।
काम क्रोध मद लोभ जो त्यागे, हे मेरो भक्त बही ॥ कहत०
शत्रु औ मित्रसदा सम जाने नृपणा जिन मन गई ।
द्वेष क्रमट छल छिद्र गया जिन सत्यत सुधारख लई ॥ क०
पालत जो वैराग्य सदा मन दुविधा धोय दई ।
विषय वासना श्रांढ करी जिन सेवा नित नित नई ॥ क०
सुख दुख पुण्य पाप नहीं जाने गति निद्र द गही ।
आपही आपमें आनंद माने, प्रभुमय देखे मही ॥ कह०
मुनो सखा तुम सत्य प्रितिदा जो मम हिय बस रही ।
जो मोहि भजे भजूं मैं ताको, भक्ति 'सुधाकर', कही ॥ क०

[तरङ्ग] भजन कर भगवत का धर ध्यान—
दयामय दीनत पती भगवान ।
विषद विनाशन सुमति प्रकाशन, जगपती करुणानिधान ॥
कृपासिन्धु जगवन्धु विहारी, अविगत अमित महान ।
उपमा रहित सहित पियप्यारी, प्रतिभा पः स मुजान ॥
कमलनेन नारायण स्वामी, ब्रजधन जीवन प्रान ।
घट घट व्यापक अंतर्यामी, भज मन प्रभु निर्वाण ॥ द०
मोहन मदन मनोहर माधव, महिमा सुयश बखान ।
भज मन श्री रघुनन्दन रावध, कर तनमन से गान ॥
नित आसनदह होय "सुधाकर", धर शुकुटीविच ध्यान ।
आप ही आपमें आप समा ! कर निज आतम कल्याण ॥
दयामय दीनत पती०

।] उमरावजी दासी रे गेह वना आवज्यो ।
 हरि आओजी दयालु दया धार ने । टेर
 गज चेर तो प्रभु टेरत ही धाया आप ।
 गरुड दीन दुख उवार ने ॥ हमारे०
 पदी री लाज सभा माँफ रखी जान सती ।
 दुशासन रो मान मार ने ॥ हमारे०
 रां रे काज गरल आप ने पियूप कियो ।
 शाक विहँस छायो विदुर वारने ॥ हमारे०
 नरसी रे हेतु शगा पाग साज आविया ।
 साँवल साह वन हुन्डवी सिकार ने ॥ हमारे०
 भीलनी रा चेर वन में जाय ने उच्छिष्ट भख्या ।
 तारी गरिका प्रेमनी निहार ने ॥ हमारे०
 कीज्यो दयालु दया दीन "सुधाकर, जन पर ।
 चरणन रो दास निज विचार ने ॥ हमारे हरि०



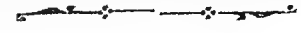
[तरज] काया का पिजरा डोलेरे एक साँल का पंछी बोले ।
 तेरी दिन दिन काया झीजेरे मन राम भजन करलीजे ।
 पंच तत्व की बनीहै काया । जामें मन तू देखरिक्काया ।
 है जगकी सबभूटी माया, जा में लरे न सीजे रे ॥ म०
 मातपिता बान्धव सुत दारा । स्वारथका है सब परिवारा ।
 अंतसमय कोड ना हितकारा, मत दुविधामें लीजे रे ॥ म०
 सारीउमर विषयन में खोई । सुखमें हँसरह्यो दुखमें रोई ।
 अवतो रामरूप जिय जोई, हरिचरणन चित दीजे ॥ म०
 पाप कपट छलछिद्र भुलाकर, आपही आपमें आप समाकर
 राम नाम भज नित्य "सुधाकर"
 प्रेम सुधा रस पीजे रे ॥ मन राम नाम०



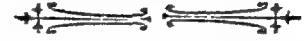
[तरज] साँवेछे कि जागे री नागन थारो कंध ।
 नेक कृपा कीजां मोपे स्वामी औँकार । टेर०
 निर्गुण समुण ब्रह्म अथ नाशक, बुद्धि विमल भण्डार ।
 दीन दयालु उधार पतित को दूव्यो भव मिन्धु मँफार ॥
 निराकार निर्विघ्न चतुर्दश, लोकहु सिरजनहार ।
 आपही विश्व प्रलय के कर्ता, आपही पालनहार ॥

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

निश्चर खलदल मारण कारण, धरथो रूप साकार ।
 कहलाये दशरथ नृप नन्दन, कौशल राज कुमार ॥
 जल थल गगनरु अगत वायु में, जगमगात करतार ।
 विना भजन कष्टु भेद न पावे, युक्ति करो ना हजार ॥
 ध्यान "सुधाकर, धर माधव को, त्याग विश्व जंजार ।
 अविनाशी अधिकार सुमर नर, मानुष जन्म सुधार ॥ ने०



[तरज] देदियो वचन को दान—
 मैं अगुण अवुव रुराज, काज मेरो किसविध सारोगे ॥
 प्रण कियो पतंग ने भारी । चित गहन दिवाकर धारी ।
 तुम्हीं सिरतात निहारोगे ॥ मैं अगुण०
 निरवल मतिहीन अज्ञाना । चहे पंगु शिम्बर चढजाना ।
 दयामय विघन निवारोगे ॥ मैं अगुण०
 तव महिमा अमित गुणागर । कधि अंध नाम नैणाधर ।
 "सुधाका, तुमही उवारोगे ॥ ३०



[तरज] दया निधि तोरो गति लखि ना परे ।
 शरण में राखें हैं भगवान ।
 लाडवाच से पालपोस कर मुग्निधि करुणानिधान ॥ श०
 कमल नैन नारायण स्वामी, जगमग व्योति महान ।
 वटघट व्यापक अंतर्धामी जगपति जीवनप्रान ॥ शरण०
 रमा रमण रघुनन्दन राघव, रघुपति जनि हनुमान ।
 भज मन प्यारे मुकुन्द माधव, सहित सुतात्रपमान ॥ श०
 सुमरनकर निशिदिन तनमनसे महिमा अमित वखान ।
 आनंदधन दीनन सुखदाता' त्रिभुवन जन कल्यान ॥ श०
 आरत हरण भक्तभय नाशन दास "सुधाकर, जान ।
 चरन कमल विन ध्यान लगाकर करत विशद गुण गान ॥



[तरज] प्रभु मोरीं अथ विनय चित धरो ।
 दयानिधि दीन के दुख हरो ॥ टेर
 दीन वन्धु दयालु दाता । तव शरण जन परो ॥ दया०
 प्रखनपाल कृपाल प्रण निज । प्रकट हरि अत्र करो ॥ द०
 अशुभ कर्म उधार अधिपती । भक्ति समहिय धरो ॥ द०
 शरण चरण लई सुधाकर, चहे सब जग लरो ॥ द०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ दीन की पुकार ❀



* रचयिता *

श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

हे ! दयामय दीन की मुनिये पुकार । धीजिये करुणा जगत के कर्णधार ॥
द्वेज जायेगी कि होजायेगी पार । मन की नवका तन के सागर के सँकार ॥

(नरज) रघुकुल में सूर्य्य समान हो तुम सिया राम तुम्हारी जय हाँवे ।

तुम्हें भूल न जाऊँ दयालु हरि मुझे ध्यान में ध्यान दिलाने रहो ।

गिरजाऊँ न जीव पतंग हूँ मैं, मेरी डोर को नाथ दिलाने रहो ॥

प्रभु कर्म के बंधन तुक हूँया तुमसे हूँ अलग मुझे मुक्त करो ।

करां चाह प्रथक अविनाशी मगर पुनि जीव में जीव मिलाने रहो ॥

भुंके भोजकी चाह नहीं भगवन्, है चाह तुम्हारे दर्शन की ।

शुभ दर्शन हो के हेतु प्रभो, सरता हूँ मैं आप जिलाने रहो ॥

अज्ञान हूँ बालक दीन महान, सुजान हो तुम जरा ध्यान धरो ।

नादान श्री करुणा निधान सदा, शिशु जान अज्ञान खिलाने रहो ॥

वर्चन "सुधाकर, नैन हैं यह. वरसातें मुधा दिन नैन हैं यह ।

सुखदैन असहन जो प्रेम में हो, उसे प्रेम मुधा ही पिलाने रहो ॥

(नरज) लवोंपे नवमसुस निगाहों में विजली यह देखो करुणामन चली आ रही है ।

प्रभो भक्त वत्सल दयामय विहारी दया भाव दीनोंपे लाना पड़ेगा ।

सदा चर्णसेवा जो -रने तुम्हारी उन्हें संकटों से बचाना पड़ेगा ॥

कभी चक्र स्वामिन चलायाथा तुमने कभी ग्राहसे गजबचायाथा तुमने ।

कभी कंस का शिर उड़ाया था तुमने हमें भी दुखों से छुड़ाना पड़ेगा ॥

तर्जा निजप्रतिज्ञा भी थी भक्तकारन न आयुध गहूँगा तुम्हारा था वदप्रन ।

किमी ब्रह्मचारी ने कहाथा वचन पन तुम्हें शस्त्र भगवन् उठाना पड़ेगा ॥

विभीषणको भगवन् दियाराज तुमने श्री वाली सुवन को दियाताज तुमने

अनेकों जननकी रानी लाज तुमने कृपाकर हमें भी निभाना पड़ेगा ॥

कुरुक्षेत्र में जत्र किया युद्ध दर्शन हूँया मोहसे था शिथिल अंग-अरजुन ।

दिया ज्ञान सीता का तुमने उसे पन दमैभी वह साधन सुनाना पड़ेगा ॥

'सुधाकर, नहींकिया सुनोशे हमारी जगतके निर्यता जगत चाप हारी ?

शरण में पडा है जो चरणका पुजारी उसे भी हिये से लगना पड़ेगा ॥

[बृहदारण्यक उपनिषद् के है

के एक वैज्ञानिक पद है

दोहा

देव दनुज मानव सभी लहें परं कल्याण
पाले जो द. अर्थको दमन दया अरु दान ॥

(नरज) मन जय मुझसे हरि नाम,
दगत में जीवन दो दिन का ।

गये देव दनुज मानव
जिजासी वन ब्रह्माजी प ।

उपदेश मिला तीनों को
अक्षर एक ही द, द, द, ॥ देर

प्रथम इन्द्र ने सोचा हूँ मैं
स्वर्ग लोक का वासी ।

विधिव भांति के सुख भोगों में
रहता सदा विलासी ।

इन्द्रियां दमन करने को
पितामह कहतेहैं सुक्त स ॥ उप०

किया मनुज ने कर्म योनि पर
अर्थ लाभ का ध्यान ।

समझा द, से करना चाहिये
गुणको दसवाँ द न ।

कल्याण जीव का विमल बुद्धि से
रे मानुष कर ज ॥ उप०

असुर ने जाना क्रोध और
हिंसा है मेरा काम ।

दया पालना जीवों पर
है इम द, का परिणाम ।

यह परं तत्व पाने का साधन
आयोजन से ह ॥ उप०

लने पृथ्वी पृथ्वी कहे
क्या समझे द, का ज्ञान ।

बोले तीनों निज २ क्रम में
दमन दया अरु दान ।

हैं सार 'सुधाकर' श्रद्धा में
कुछ संशय मतसम क ॥ उप०

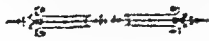
बन्धु करुणा निधे सुन दीनन की ढेर ।
करुणा प्रभु आइये फिर दीनन की बेर ॥
देखालो देखलो मोहन अदा किसकी निराली हैं ।

यह तो कहदो दीनोका उद्धार कब होगा ।
भवसागर से भारत का वेड़ा पार कब होगा ॥
दुराचारी दुखी करते हैं भगवन् दीन दासों को ।
भला इस देश में फिर धर्म का व्यवहार कब होगा ॥
बनाया फूल सम जनको प्रभो इस वाग दुनियां में ।
मगर यह फूल स्वामी के गले का हार कब होगा ॥
लगोमी कब लगन इस मनमें वन प्रीतम के दर्शन की ।
यह तन जीवन धन के शुभ चरण पर बलिहार कब होगा ॥
“सुधाकर,, सांघरे वंशायाम लीला धाम वनवारी ।
वतादो गिरवरधारी तुमसे सच्चा प्यार कब होगा ॥



[तरज] इशरु में जीने गुजरत हैं गुजरने जाने ।

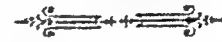
दीन वंधु हो दया दीनो पे लाते रहना ।
कृष्ण अर्जुन से क्रिये प्रण को निभाते रहना ॥
मूरती मनमें रहै नैन में प्यारे दर्शन ।
ध्यान में वांसुरी ब्रजराज वजाते रहना ॥
मान मोहादी विषय क्रोध व वृष्णा डायन ।
ताप माया के मेरे मन से हटाते रहना ॥
इव जाऊं न कहीं नाथ मैं भव सागर में ।
ज्ञान बली से मेरी नाथ चज्ञाते रहना ॥
प्रेम में लीन हो आनंद में निद्वन्द्व रहूं ।
गान वंसी का मधुर तान सुनाने रहना ॥
वीनती है वही गोविंद “सुधाकर,, माधो ।
अपने भक्तों को सदा दसे दिव्यते रहना ॥



[तरज] चैन से सोरहाथा मैं किराने मुक्त जगादिया ।

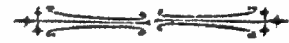
वांसुरी वजादे श्याम माधुरी लतान में ।
मट प्रकट निकट हो कान्ह आन कुज स्थान में ॥

वावरी की अब कोई विथा निहारे तो सही ।
बिन अनल जो जल रही है प्रेम की चितान में ॥
क्यों वहे न नैन नीर जब वियोग की हो पीर ।
दरस बिन हुई अधीर मीन के समान में ॥
दान दृष्टी लेखनी वियोग जिन लिखा हमें ।
संत नन क्या सोगये थे जा सभी मगान में ॥
रंग राग आपके दासी कुटिल के संग हों ।
और मल भवति अंग स्वप्न छान छान में ॥
देर यह धियत भरी नू जाके कहियो सहवरी ।
देर ना पयान की है प्रेमिका के प्रान में ॥
राधिका के प्रेम चंद्र कृष्ण “सुधाकर” मुकुन्द ।
वीनती आनंद कंद लाथो नेक ध्यान में ॥



[तरज] विहारी तुमने धंमी वा वजाना किससे सीखा है ।

बिनय प्रभु नम्र सुनतीजे कृपा कीजे कृपा कीजे ।
सुमति निज दामको दीजे कृपा कीजे कृपा कीजे ॥
तुम्हारे चरण पाने की सदा वृष्णा है प्रेमी को ।
मनोरथ पूर्ण करदीजे कृपा कोजे कृपा कीजे ॥
हूं भगवन् दीन मैं ! तुम दीन बन्धो दुःख हारी हा ।
दयालय धीरता दीजे कृपा कोजे कृपा कीजे ॥
भँवर भवसिन्धु से वेड़ा लगाओ पार भक्तों का ।
‘सुधाकर’ निज शरण दीजे कृपा कीजे कृपा कीजे ॥



(त.) सुदाया केली मुसीबतों में यह हिंदुवाले पडे हुएहैं,
करो दयालय दया वह अपरम् धरम सनातन समर्थ होवे ।
युगों २ का क्रिया परिश्रम न देश वालों का व्यर्थ होवे ॥
मिटारहें हैं मिटाने वाले हमारे सद भाव सद गुणों को,
न तुमको क्योंकर बुरालगे जब तुम्हारे संमुख अनर्थ हावे
जो चातेहैं अहित हमारा जिन्हें विधर्मा चरण है प्यार ।
बगेर सोचा बिना विचार न पूरा उनका मनर्थ होवे ॥
जो उल्म डाने में कारवां हैं जो खुद परस्ती से शादमाहें ।
जो अपनी हस्ती से बदगुमां हैं न प्राप्त उनको पदर्थ होवे,
करो सुधाकर, कृपा चह आकर बिनय मैं करताहूं सिर मुकार
कि देश भारत वसुंधारा पर प्रसिद्ध दीनों का अर्थ होवे ॥





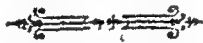
गोपाल बालं भुवनैक पालं संसार माया मतिमोह जालम् ।

यशो विशालं शिशुपाल कालं बाल मुकुन्द मनमा स्मरामिः ॥



[नरज] दर्शन रे हित आश्रो म्दारा प्रभु जी-

वायल की गत वायल जाने जो कोह वायल होय ।
प्रेम की पीर को प्रेमी ही जाने और न जाने कोय ।
वायल थी एक प्रेम की मोरा ।
कृष्ण वियोग में होय अधीरा ।
लोजनी पीतम प्रेम की तीरा ।
विष गयो अमृत होय ... विषगयो अमृत होय ॥ वा०
तुलसी मूर थे प्रेम के रोगी ।
एक त्रिया एक गणिका योगी ।
राम मिले निन्दे कृष्ण से योगी ।
प्रेम ही के वश होय ... प्रेम ही के वश होय ॥ वा०
वायल थी सकलणि अरु राधा ।
श्याम मिलन हित प्रेम कियाथा ।
सह सह कर संकट दुख बाधा ।
नित अमुवन सुखधोय ... नित अमुवन सुखधोय ॥ वा०
प्रेम के देव हूं शरण तुम्हारी ।
प्रेम हो तुम में प्रेम पुजारी ।
आश्रो "सुधाकर," प्रेम निहारी ।
दो प्रभु दर्शन मोय ... दो प्रभु दर्शन मोय ॥ वा०



[त.] मोह अच्छे पिया वाही देम बुलालो-
हिंद में जिया बवरायत है ।

सुनपरीसखी कहु बेरीकही बतलातो सही गये आज कहां ।
मन मोहन लोहन राज कहां मरं जीवन के शिरताज कहां ॥
मैं निहारत बाट चली री अली ।
लगी खाजन कृष्ण को कुञ्जगली ।
मोह सांच कहो ब्रजमानु लली ।
ब्रज छांड लुपे ब्रजरज कहां, बतलातोसही गये आज कहां ॥
सुन परी०

मोह चैन नहीं दिन रैन परे ।

सुख रैन न धीरज नैन धरे ।

तन मन वायल मधु वैन करे ।

बिन श्याम बने मेरो काज कहां, बतलातोसही गये आज कहां ।

गोपी बल्लभ गोविन्द की री ।

ब्रज बन्द मुकुन्द अनंत को, री ।

चलो दृष्टन निकसैं सखी मगरी ।

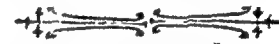
जब लागगई तब लाजकहां बतलातोसही गये आज कहां ॥ सु

मोरी लागी लगन अब नो छूटे ।

धुली प्रेम की गांठ सां ना बूटे ।

सांची प्रीत "सुधाकर," ना टूटे ।

मैं रहुंगोयहां सुखसाज जहां बतलातोसही गये आज कहां ॥ सु



[नरज] समा में मेरा आप ही करोगे निसतारा ।

कृष्ण जाणे वावा दुनियां में पीर पराई ॥ कृष्ण०

जा दिनसे सखी नैना लागी नींद निमिष नहीं आई ।

बिरहकी आंग जरत जियरा में होरी सम अधिकाई ॥

कृष्ण जाणे०

छांड गये निन्दे लगाकर प्रीत दया नहीं आई ।

अखियां दीन दरसकी प्यासी घन वन मेह बरसाई ॥

कृष्ण जाणे०

ननमन धन अर्पन कर उनके जीवन ज्योति जगाई ।

प्यारे साजन आन मिलो हम तुमसे लगन लगाई ॥

कृष्ण जाणे०

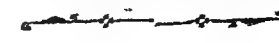
उठत कलेजे हूक प्रेमकी कठिन महा दुख दाई ।

पापी प्राण न निकसत तनसे साजनबिन अकुलाई ॥

कृष्ण जाणे०

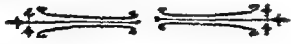
दीन दयालु दिनेश दयावर दीन बिनय चितलाई ।

वृषित भवैर रस फूल "सुधाकर" दीजियो पान कराई ॥



[तरज] सांवरिया से लागी लगन सजनी ।

श्याम तोरी वंसी निराली सुनी । डेर
चन्द्र मुकुट कुण्डल सुभग ध्रुवर वारे-केस ।
मन मोहन संग माथुरी सोहत सुन्दर भेष ॥
मधुर २ मुरली अवर कर, धर सुवर सुरेश ।
आनंद धन टेरन लगे ब्रज भूषण मथुरेश ॥
सुखद "सुधाकर," ध्वनी ॥ श्याम०



[तरज] सखीरी मोरी अखियां सांवरिया सूं लागी ।
वृन्दावन वारो रसिया, वरसाने वारी नार ।
सखीरी मन वसिया यह दोऊ सुकुमार ॥ वृन्दा०
जाकी बांकी भांकी औ सजीलो सिणगार ।
जो मोहन सोहन ब्रज धन जन मन मोहे जादू डार ।
वही है मधु हंसिया करु मैं जाके प्यार ॥ वृन्दा०
सीस मुकुट कानन में कुण्डल केसर तिलक लिलार ।
गल वैजन्ती माल विराजे ध्रुवर वारे वार ।
अधर धर वंसिया वजावे सुखकार ॥ वृन्दा०
दिनदिन पलपल छिन २ गिन २ वषेन दिये गुजार ।
मैं अर्पन कर तन मन धन चरनन पर गड बलिहार ।
नैनन छवि लसिया रसीली रिक्कार ॥ वृन्दा०
प्रिचवर मनहर मधुकर गिरधर सुवर कुँअर सुखकार ।
नटवर नागर श्याम "सुधाकर," रावे कृष्ण मुरार ।
लागीरी मोरी अखियां बाही सूं जमना पार ॥ वृन्दा०



[तरज] लाज रखो जी सिया राम ।

विसरत नाहिं वंश्याम, मुकुटछवि नैनन घूमे ॥ वि०
तुमविन निशिदिन चैन न तनमन, नंदनंदन सुखधाम ।
ठठत एक हूक चितहु में ॥ विसरत ना०
चंद्रयदन चितवर्नाडग अलकन, छवि यनललित ललाम ।
मदन गति तापर भूमें ॥ विसरत ना०
आओ सजन अ.नंद धन जनमन, शोभा सदन मुनाम ।
शरण चरण की हूं मैं ॥ विसरत ना०
ब्रजभूषण हरि दीजियो दर्शन, मन मोहन अभिराम ।
"सुधाकर," पद रज चूमें ॥ विसरत नाहिं०



प्रेम बराबर योग ना प्रेम बराबर ध्यान ।
प्रेम बिना जप तप सभी प्यारे थोथा जान ॥
जेठ घट प्रेम न संचरे तेठ घट जान मसान ।
जैसे खाल लुहार की सांस लेय विन प्राण ॥

[त.] श्याममनोहर मधुकर मुरली प्रेम से नेक बजाओ ।

तुमविन निशिदिन कल न परत मोहे दर्शनदयो धर्याम ।

श्याम वदन छवि नैनन घूमे ।

विरह की हूक, छठे चित हू में ।

विसरत ना ब्रज वाम ॥

दर्शन०

आनंद धन प्रसु करुणा क्रीड्यो ।

शरण चरण लई जन सुध लीज्यो ।

मदन मोहन सुख धाम ॥

दर्शन०

किस विध तुमरो जस गुण गाऊं ।

साहिंमां को कहूं अंत न पाऊं ।

सौख्य सदन निशकाम ॥

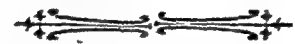
दर्शन०

ब्रज भूषण ब्रज राज "सुधाकर," ।

मदन मोहन नटवर नट नागर ।

लीला ललित बलाम ॥

दर्शन०



[तरज] नजरिया न मारो छैला लग जायगी ।

मैं कहा करूं राम जिया वणो धवरावे ॥ डेर

लगाके प्रीत सखी दर्स दिखाते ही नहीं ।

आप भी आते नहीं हमको बुलाते भी नहीं ।

वेदर्दी को हाल कोई जाय समझावे ॥ मैं.

चैन दिन रैन नहीं नैन में निदिया कैंसी ।

चकोरि चन्द्र बिना, रहत है चकित जैंसी ।

या जल विन मीन जैसे सुख नहीं पावे ॥ मैं.

फूल को देख भँवर फूल से घूमत डोले ।

फूल रस पाय तो गुजार में अमृत बोले ।

मेरे छुटे साजन को मनाय कोई लावे ॥ मैं.

मैं जिनके प्रेम में निशि निद बिलीन तन में हूँ ।

मिलेंगे फूल से मधुकर इसी लगन में हूँ ।

"सुधाकर," मुखद यों मधुर गान गावे ॥ मैं.



❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

श्री कृष्ण जन्मोत्सव ❀



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधर दास बोहरा कवि
दोह (राजस्थान)

नील कमल सा सुवर सुलोचन श्याम वदन है । कृष्ण रैन में चंद्र सर्गसा, प्रिये दर्शन
तनपर, मणि से लटित, मनोहर स्वच्छ वसन है । नारा गणसे लामित प्रफुल्लित, मनो गगन
नौर मुकट है शीस पर गल मोदियन की माल है । विश्व जीत ने के लिये प्रकटी मूर्ति रसाल है ।

[तरङ्ग] हे कमला पनि जगदा धारी-
दीन जनन की सुध प्रभु लीयो ।

कृष्ण, जनम सुन गण पात आयें-
अथ सिध सुद भंगल के दाता ।
नंद रानी जहां, पलना सुलाये-
त्रिभुवन मा त पिता, की माता ॥
दूँद दुँदयाला, नूँद सुँदयाला ।
पग नूपुर कर ताल बजाता ।
गकरदन गज वदन विनायक-
वरदायक स्वर मुन्धार गाता ॥
मूपक बाहन विघन विनाशन ।
सुर नर सुनि जन, जिनको मनाता ।
शंकर सुवन भवानी के नंदन-
दास "सुधाकर" तिन को ही ध्याता ॥

कृष्ण, जनम सुन ॥

[तरङ्ग] इशक में जी से गुजरते हैं गुजरने वाले ।

हैं अजब दंग से संसार में आना इनका ।
देखकर दंग है यह रंग जमाना इनका ॥
गोप सव्यापे श्यन करते हैं जो सागर में ।
सूप के कोने में है रूप सुहाना इनका ॥
जिन को त्रिभुवन का धनी जग में कहा करते हैं ।
कैय आना है भला जन्म ठिकाना इनका ॥
कहतै जिनको है निराकार निरंजन भू पर ।
हमने साकार सुना वंसी बजाना इनका ॥
याद आता है "सुधाकर", वह समय वास्वहार ।
गोपियों को कमी कुञ्ज में नचाना इनका ॥

[तरङ्ग] सखी देखण चालो राज भवन में-
राम जनम की धूम ।

सखी देखण चालो, आज, या ब्रज में-
प्रकट श्री, गोकुल चंद ॥
नंद महर घर होटा जायो, छाया, बगों आनंद ।
मुन्दर श्याम मनोहर मूरति, मोहन परमा नंद ॥
सखी देखण चालो ०
मंगल साज सजे सच, सजनी चालत चाल गयंद ।
नाचत गावन, नाल बजा वत, होय सभी निर्द्वन्द ॥
सखी देखण चालो ०
भानि अनेकन बाजा बाजे, वेद भणे दूज वृन्द ।
दूय दही वृन माखन की छई आँगन में मकरंद ॥
सखी देखण चालो ०
वांटन दान अनंत "सुधाकर", गुणजन गायत छंद ।
पूत सपूत जिया जमुना तेरो लालन सुव अविंद ॥
सखी देखण चालो ०

[तरङ्ग] हे कठिन इशक की पीर लगे जो ही जाने ।

मिल चली कुँड के कुँड श्री ब्रज की बाला ।
भय प्रकट गोकुला चंद नंद घर लाला ॥
लैं कंचन यारमें हार, हरीदा रोरी ।
कर नचल नार शृंगार प्रेम रंग बोरी ॥
मणि रत्न कमल पुष्पन से भर भर कोरी ।
आतुर भई मानो मिलन को चंद्र चकोरी ॥
देहुअंजन, खंजन, नव कंजन, तेहि काला ॥ मिल चली ०
सब गावन गीत पुनीत सरस सुवड़ाई ।
चमकत दमकत जमुदा के मन्दिर आई ॥

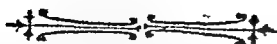
नव चन्द्र उदय भयो देख हरषि न समाई ।
 गई चरणन पर वलिहार अशीस, सुनाई ॥
 र वार रिक्कार, विसर निज हाला ॥ मिल चली०
 पुनि मंगल कलश, धराय दीप वली वारी ।
 निज कुल की कीर्हीं रीत विविध विधि सारी ॥
 ठाड़ी मुख निखत चंद्र वदन मन हारी ।
 शोभा विलोक रही, सकल भुवन की नारी ॥
 पहिरावन प्रभुको लगी फुलन की माला ॥ मिल चली०
 छाये अनंत आनंद मदन सकुचाये ।
 लीलाधर लीला करन अवनि पर छाये ॥
 निज मति सम कछु गुण रूप "सुधाकर,, गाये ।
 सुर नर मुनि गुणि जन सकल परम सुख पाये ॥
 हरि दीजियो दरशन त्रिभुवन रूप रसाला ॥ मिल चली०



आज गोकुल में कन्हैया का जनम होता है ।
 बांसुरी बजती है श्री कृष्ण भजन होता है ॥

[तरज] विपत में हिरनी हरि को पुकारी ।

बनी मन फूल रही ब्रजनारी-
 जाकी शोभा में वरनूँ कहारी ॥ बनी०
 गोकुल चंद्र प्रकट भये सजनी, गावत मंगल चारी ।
 भादों पाख प्रथम वदि अप्रमी कृष्ण रैन अधियारी ॥
 बनी मन फूल०
 शीतल मंद सुगंध सुहावत है सुखकंद बयारी ।
 श्री यमुना बन वन लहरावत, मोद भयो अति भारी ॥
 बनी मन फूल०
 दूध दही घृत कुम र अन्नत, हाथ लिये जल भारी ।
 केसर चंद्रन कंचन धारमें, मंगल राज सँवारी ॥
 बनी मन फूल०
 निरखत श्याम वदन छवि सागर पूरण चंद्र छटारी ।
 दास सुधाकर, श्री गिरधर पर तन मन धन सब वारी ॥
 बनी मन फूल०

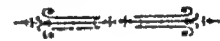


सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

मोर मुकुट कुण्डल सुभग घूँगर वारे केश ।
 श्याम मनोहर माधुरी-हिवड़े बसो हमेश ॥

[तरज] करमन की गति न्यारी ।

नीके रहो दोऊ भैया, जसोदा भैया लाल तिहारे ॥ नीके०
 धन्य घरी धन भाग नहारो ।
 धन अनुराग सुहाग तिहारो ।
 जो प्रभु सम सुत पैदा ॥ जसोदा भैया०
 मंगल मोद भयो अति भारी ।
 नाचत गावत सखी जन सारी ।
 प्रेम मगन अति छैया ॥ जसोदा भैया लाल०
 पुण्य दिवस शुभ आज मनाऊँ ।
 श्याम वदन छविपर वलि जाऊँ ।
 चितवन भाव बढैया ॥ जसोदा भैया ॥ लाल०
 श्याम गोरे मुख नंद के लाला ।
 परम सुधाकर,, रूप रसाला ।
 मुनियन मन रिक्कैया ॥ जसोदा भैया०



[तरज] चँदगावल शिवनार अकेली रहगई रे ।

कृष्ण जनम की बेर घटा घन छाव रही ।
 वरसन को चहुँमेर उमड कर आय रही ॥ कृष्ण०
 सखी जन मिल सब गात बधाई ।
 सुन्दर राग सुहाग सुहाई ।
 मंगल धुन रही डेर, हिये हुलसाय रही ॥ कृष्ण०
 झुंड के झुंड चलीं सब नारी ।
 नव तरुणी सुन्दर सुकुमारी ।
 ब्रज मण्डल लियो घेर परं सुख पाय रही ॥ कृष्ण०
 भूल रही गति निज तन मन की ।
 प्रेम मगन भई मति गोपियन की ।
 मोतियन माल विलेर, मधुर मुस्काय रही ॥ कृष्ण०
 श्याम सुधाकर, छवि मुन चातुर ।
 नैनन निरख भई मैं आतुर ।
 निमिष करी नहीं डेर चरन चित लाव रही ॥ कृष्ण०



प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

❁ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❁

❁ मन्त्री मुमन ❁



❁ रचयिता ❁

श्री निरधरदास बोहरा कवि
टांक (राजस्थान)

[नरक] जाश्रो २ विया मोमे, करा न लराई ।

देवो नदी मोहन ज्याम थनमाने ॥ देर

नोर मुकुट छिट क्रीट पीनाम्बर ।

कुण्डल लट भरमाने ॥ देवो०

लोचन अरुण कमल सम शोभिन ।

अथर तमोल रचाने ॥ देवो०

डग नग चाल चलत भग पग धरि ।

नैनन नीद युमाने ॥ देवो०

भार भये हमरे डिग आवे ।

डेन गैवाट किन जाने ॥ देवो०

अट पट बैन कदत मुक्कू ने ।

मरम की चाने छुपाने ॥ देवो०

मंद मधुर मुसकाय "सुधाकर" ।

सुन प्रिय वचन लजाने ॥ देवो०

❁❁❁

[नर] कृष्ण बजाजा बंसी कहां लागी इतनी दे

लीला रचो नव कुञ्ज ! सुख पुञ्ज फिर बल को र ।

ता थिलंग ब्रक थुञ्जे २ गुञ्जे स्वर गन्धीर ॥ कीला

क्रणधा क्रणधा वृक वृक थुञ्जे ।

ताना थै थै ब्रकता वृञ्जे ।

नचत नचावत रसिक दोउनजे ।

नागरि नट दिल्ली र ॥ ता थिलंग०

छिम रे छि छि छिम नपुर दाने ।

धिन २ था तिन छिट छिट साजे ।

सुन २ सुरपति निज मन लाजे ।

थाकेरु यमुना नी र ॥ ता थिलंग०

मधु रस मुरली सुन ब्रज नारी ।

बावहि बिहल होय मतिमारी ।

कोरु अटपट कोरु निपट उवारी ।

होयकर प्रेम अघी र ॥ ता थिलंग०

बंसी बट तट विटप की छियां ।

निकट विमल जल निर्मल बहियां ।

नचल कमल दल उचल गैयां ।

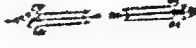
बाहियां त्रिविध सयी र ॥ ता थिलंग०

इस विष धर बहु रूप "सुधाकर", ।

बहु गोपियन सँग बहु नट नागर ।

गावत बांह में बांह गुथा कर ।

कालंत्री के ती र ॥ ता थिलंग०



[त.] कृष्ण बजाजा बंसी कहां लागी इतनी दे

भारत में फिर आके मुनाजा उस मुरली की डेर ।

बंसी बजाओ कृष्ण फिर कालंत्री के ती र ।

शोभित विमल कमल दल रहे जहां, बहे भल निर्मल नीर

फिर बही मोहन वेनु चराओ ।

फिर गुबालन सँग माखन आओ ।

दृष्ट दलन यदु वी र ॥ शोभित विमल०

खेलन रे मिस गेद कन्हैया ।

आ, भारत में नाग नवैया ।

गहो मन्वियन के ची र ॥ शोभित विमल०

फिर बही शक-विदुर चर खाओ ।

नान्दुल अरु मधु चेर मी पाओ ।

गद गद पुलक शरी र ॥ शोभित विमल०

फिर असुरन को मान घटाओ ।

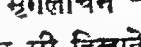
फिर वसुधा को भार हटाओ ।

मजन बंवाओ थो र ॥ शोभित विमल०

फिर निरधर निरधर कर धारो ।

फिर सुरपति को गर्व निवारो ।

हरेऊ "सुधाकर", पी र ॥ शोभित विमल०



[तरज] सैयां नोरी गोदी में गेंदा बन जाऊंगी ।

श्यामा तोरी अलियां में कजर, सुहावे री ॥ श्या०

प्रेम भरी चितवन सुकुमारी ।

मंद हसन पिय ध्यारो, मुसकावेरो ॥ श्यामा०

चंद्र बदन मृगलोचन — सुन्दर ।

अलकन दोउ नागन मी दिखावे री ॥ श्या०

कोमल तन सुख सदन नागरी ।

मोहन मन बश कर इटलावेरी ॥ श्यामा०

नटनागर मनहर मुरलीधर ।

हंस हंस कर तोहे कंक लगावेरी ॥ श्यामा०

मंद नदन ब्रह्मानु सुवाके ।

चरण कमल "सुधाकर", चित लावेरी ॥ श्यामा०

[ज] मान मनवा रे मान, अपना रूप पिछाने ।

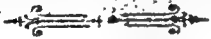
ओ आओ रे श्याम ! कृष्ण शोभा धाम ॥ आओ
हमहु निहारत वाट तिहारी ।
कव से खड़ी ओ गिरवर धारी ।

चित्त चपल चतुर ब्रजनारी । सारीरे श्याम ॥ कृष्ण
वसीबट तट निकट कुञ्जन में ।
नटवर निरत करत मधु वन में ।

सरच्यो हरि सघन चमनमें । वन, में रे श्याम ॥ कृ.
एक बेर फिर ब्रज में आओ ।
ब्रज मोहन ब्रज राज कहाओ ।

फिर गोपियन संग रास रचाओ । आओ रे श्याम ॥ कृ.
कवहुँ तुम वाचन वन आये ।
कवहुँ रूप नरसिंह बनाये ।

अवध 'सुधाकर, राम कहाये । धार्ये श्याम ॥ कृष्ण



[तरज] ताल, कहरवा मात्रा १६

श्याम श्याम श्याम भँवरा मधुर २ गुञ्जत मधु वन में ।
आनवान वान मुरली कुरुत सजनी सुमनन वन में ॥

चंद्र मुकुट कुण्डल सुभग ध्रुगर वारे केस ।

मन मोहन अरु माधुरी सोहत सुन्दर भेस ॥

मधुर मधुर मुरली अधर, धर, कर सुधर सुरेश ।

आनंद घन टेरन लगे, ब्रज भूषण मधुरेश ॥

आम जास काम भूनत मुकत 'सुधाकर, सघन चमनमें ।

ज्ञान मान ध्यान विसरत, सुनिजन सुन २ धुन उपवनमें ॥



[तरज] मेरे नैनो में तुमही समाये सनम ।

गिरधरजी के नैना हैं प्रेम भरे । प्रिय वर जो के नैना

मोरी लागी लगन प्यारी चितवन पर ।

तन मन धनहू की गई सुध ही विसर ।

ऐसी बाँकी चपल चित चार नजर ।

अधरन मधु वैना है प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के

आली देखो री कैसी निराली — छटा

रही कोटिन काम को रूप — प्रग ।

कर में लकुटी कटि पीत — पटा ।

खुख हर सुख देना है प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के

प्यारी प्यारी तिहारी यह झंकी वनी ।

मोसे बरनी न जाय जाकी शोभा घनी ।

रूप सुन्दर से शर्माय रही दामनी ।

पहरे फूलों के गहना है प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के

जाकी जासे लगी है कभी छूटेगी ना ।

धुली प्रेम की गाँठ सो खूटेगी ना ।

साँची भीत धरीत से टूटेगी ना ।

'सुधाकर, पद गहना है प्रेम भरे ॥ गिरधरजी के



[तरज] तेरी आँखे नहीं । यह तो तीर है ।

कृष्ण नैना नहीं यह तो वान है ।

श्याम भौएँ नहीं यह कमान है ॥ हां कृष्ण नैना
आनंद खान है ! सुखद मदान है ! चातुरवान है ॥ हां

शीस सुन्दर मुकुट की छटा क्या वनी ।

कर्ण कुण्डल तिलक भाल शोभा वनी ।

कारी अलकें यह नागन संमान है ॥ कृष्ण नैना

रत्नमाला सुभग कीट पीताम्बर ।

कर लकुटिया त्रिभंग अंग मुरली अवर ।

धरके ठाड़े रंगले जवान है ॥ कृष्ण नैना

ज्यों वह तारा गणों में सुखद चंद है ।

ज्यों चंद्र चोर घेरे सखी वृंद—है ।

गावें मिल सारी मोहन को गान है ॥ कृष्ण नैना

शोभती संग वृषमान प्यारी सुता ।

मन हरन पर निछावर है सावण्यता ।

पिया प्यारी के प्यारे बखान है ॥ कृष्ण नैना

तान बंसी नहीं है कठिन तीर है ।

मंद सुसक्यान ही जिनकी अकक्षीर है ।

जिस पे वारी 'सुधाकर, के प्रान है ॥ कृष्ण नैना



[तरज] सीताराम रटो रे भैया, राम कहो ।

जमुना तीर मैं गई री मैया बावरी भई ॥ जमुना

ठाड़ो चपल श्याम तहाँ सुन्दर शोभा ना बरनई ।

बाँकी अलकत तिरछी चितवन तन मन घन हर लई ।

मैया बावरी भई ॥ जमुना

कोमल तन नैनब बिच कजरा अधरन मुरली लही ।

हिये हार हाथन युग गजरा लख शोभा छक रही ।

मैया बावरी सई ॥ जमुना

मधुर तान मोहन अधरन पर ऐसी प्रिय कहु छई ।

काह कहूँ ब्रज घन तहाँ जैसो आनंद वन वर सई ।

मैया बावरी भई ॥ जमुना

गल दोट बैयां डार 'सुधाकर, चूम मुखाम्बुज कही ।

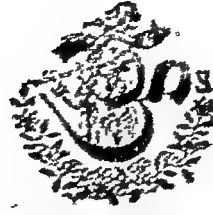
योवन दान लगत है मेरो, कुच मंडल लिये गही ।

मैया बावरी सई ॥ जमुना



❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ सखी श्याम लीला ❀

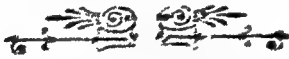


❀ रचयिता ❀

श्री गिरधरदास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

[तरज] सखी म्हांने प्यारालागे रघुवीर ।

बसो ली म्हारा नैणा में नैदलाल ।
श्री रावे प्रथमान दुलारी गौवन संग गोपाल ॥ बसो जी,
सुमल पाग केसरिया जामो ।
माल तिलक ज्यांके मलकत मामो ।
लोचन रतन विशाल ॥ बसो जी म्हा०
कृश कृति सुन्दर सुभग तिनन्वा ।
सोहत संग श्यामा जग अंवा ।
भामनि तरुण तमाल ॥ बसोजी०
धुरदल करण कपोलन लाली ।
शोभा मुकुट रसिक धन माजी ।
धरन मुरली रसाल ॥ बसोजी म्हारा०
श्यामा श्याम सुरेश "सुधाकर," ।
धुनियो दीन विनय चित लाकर ।
विभुवन करन निहाल ॥ बसोजी म्हारा०



[तरज] कद आभोला कन्हैया म्हारे डार—

लागी र जीसांवरिया थांमूं प्रीत लगन पण ना छूटे ।
मैं दधि बेचन जायतो तिन उठ गोकुल ग्राम ।
ये तड़ां बंसो बजावता, ले सखियन को नाम ।
जी में गावेछा रसीला मीठा गीत ॥ लगन०
नैनन में धूमे सदा वह कजरा रा नैन ।
हिवड़ा में म्दके पिया मीठा मथुरा वैन ।
म्हारा बालपणा रा प्यारा मीत ॥ लगन०
मन मोहन मन में बसो, चितवन में ब्रज राव ।
पलकन में ठक रागव्यूं लोक लाज रे काज ।
आपां प्रीत करांला इण रीत ॥ लगन०
म्है थाने निरखां सांवरापट वृंगट री ओट ।
ये म्हांमूं नजर मिलावता कर अखियन से चोट ।
लीनो मनडो "सुधाकर," म्हारो जीत ॥ लगन पण०



[तरज] म्हारी वैयां न मैयां हुम्माओ रे
थांमी ओल्यूं वणो म्हांने थारे जी राज—

मोहन सुन्दर सांवरिया मन मोहन सुन्दर मधि
जिव देखा विना दुख पावे जी राज ॥ मोहन० म
थांका मुखदा री शोभा न्यारी । शरनवे जी चंद्र उजा
ललचवे लुभावे रिखावे जी राज ॥ मोहन०
पट पीत सुरंगी सोहे । सखियन रो मदन मन मोहे ।
नन वदन जीवन लहरावे जी राज ॥ मोहन०
जद मुरली रो धुन सुन पाऊं । मैंतो बवरी सीवनजाऊं ।
म्हारो जीव धणो धवरावे जी राज ॥ मोहन०
छवि धूमन नैणा रे आगे । प्यारी र "सुधाकर," लागे ।
चपलासी चित चुरावे जी राज । मोहन०



[तरज] दोननपति भगवान — (फिलमी)
जाओ मोहन धनश्याम --

विरहन, हमको बना ! सोहन घर जाओ ॥ डेर
छांड के गोकुल छांड वृन्दावन ।
छांड के माखन छांड के सखी जन ।
ब्रज ग्वालन के काह-
वरन दासी कुटिल कुवजा को रिमाओ ॥ जा०
नाडा है तुमने प्रेम का नाता ।
भूलंगी क्व ? पर, जगुदा माता ।
नंद महर जी के प्रान-
प्यारे, प्रेम सदन चाहे मन से भुलाओ ॥ जाओ०
आर तुम्हारी जितदम आवे ।
निशिदिन अखियां नीर बढ़ावे ।
दर्शन विन मुखधाम-
सखियां तरसत हैं ! हरि नॉय सताओ ॥ जाओ०
छांड हमें ब्रजराज "सुधाकर," ।
तुम मुख पाइयो मथुरा जाकर ।
हमतो जपेंगी तेरो नाम-
नटवर मन्हर गिधर ! तुम ही दुगाओ ॥ आ०



[त.] जो म्हाँने प्यारा र लाना सांवरिया मोहन नंददाकशोर ।
 हाने वृन्दावन ले चालो जी म्हारा साँवरिया गोपाल ।
 मैं घेटी त्रपभानु की जी थे नँदजी रा लाल ।
 की म्हाँकी जोड़ी वगो छे, सुन्दर रूप रसाल ॥
 म्हाँने वृन्दावन०
 मोरमुकुट माथा पर माँजया चंचल नैन विशाल ।
 लक्ष्मी लक्ष्मिया काँवे कर्मलिया घूँगर वारा चाल ॥
 जी म्हाँने वृन्दावन०
 क्रीट कुंडल मानन में मोहे केसर चंदन भाल ।
 पीत वसन त्रिभुवन मन मोहे शौकी तरुण तमाल ॥
 जी म्हाँने वृन्दावन०
 गलवैजन्ती माल विराजे नोटा मरत ना गारा ।
 शोभा देव्य मदन मन ताजे पेना छो दीन दयाल ॥
 जी म्हाँने वृन्दावन०
 छवि नटनागर श्याम सुधकर' निशदिन करत निन्दता ।
 तट जमना पर वंसी वजावर चालो छो चाटा गरल ॥
 जी म्हाँने वृन्दावन०

[त.] रे मन कर उप दिन की याद कि जिस दिन चत्र-
 चल चल होगी ।
 होजी म्हारा मन मोहन वनश्याम सजन साँवरिया सुखदाई ।
 दरसन कद द्योला, सुवधा म रहूँ विन दरसन अकुलाई ॥
 होजा म्हारा मन मोहन०
 प्रभुजी थांकी नित उठ जोऊं बाट ।
 निहाकं जल भरतां जमना घाट ।
 होजी म्हारा मनमें रहत उचाट उदासी तनमें वन छाई ॥
 होजी म्हारा मन मोहन०
 रहोजी म्हारा नैणा में नँद-लाल ।
 मनोहर नटवर — रूप रसाल ।
 होजी थाने ना त्रिसरू ब्रजलाल किहूँ विरहनसी ववराई ॥
 होजी म्हारा मन मोहन०
 करीछी म्हासूँ क्यां ? थे भूटी प्रीत ।
 जगत जाणे जीने अनरीत ।
 होजी म्हारा वालपणारा मीत कन्हाइ थांकी देखी चचुराई ॥
 होजी म्हारा मन मोहन०
 आओजी पिया प्यारा नंद कुमार ।
 "सुधाकर," त्रिभुवन रा सिरदार ।
 होजी थासूँ पीतम हेत लगार वणी जीवनधन दुखपाई ॥
 होजी म्हारा मन मोहन०

[त.] होजी म्हारा राधा गोपी नाथ री वंसी मन हर-
 लीनो जी ।
 होजी म्हारा साँवरिया गोपाल विहारी वृन्दावन वासी
 म्हारे घर आओजी जसोदा लाल गुरारी मोहन सुखा
 कन्हाइ थांकी नित उठ निरखूँ चाल ।
 चलत जैसे सुन्दर — बाल — मराल ।
 निहाकं थांका चञ्चल नैन विशाल खड़ी शुभ दर्शन की ध
 मुकुट छवि निशदिन करत निहाल ।
 मनोहर घूँगर वारा -- बाल ।
 रंगी ली गल वैजन्ती माल लजावे चाँद पूर्ण माँसी ॥
 सुहावे सँग दाऊ दीन दयाल ।
 लुभावे मन रोमा तरुण तमाल ।
 सजन थांका मोहन वचन रसाल प्रेमकी डार दई फाँसी ॥
 "सुधाकर," आई शरण ब्रज बाल ।
 भई थांका प्रेम में विकल विहाल ।
 प्रभुजी म्हारो मेंटो जग जंजाल अरज करे चरणों की दास
 म्हारे घर आओजी०



[त.] थोए सखी राधे नंदकुमार मधुर छवि छाई नैननमें
 सखी मेरा साँवरिया गोपालरी वंसी वाजे मधुवन में ।
 एरी मेंटो ब्रजमोहन नँदलाल सखिन सँग नाचे कुञ्जनमें ॥
 वहत जहाँ जमना, निमल नीर ।
 सुहावत शीतल, सुरम समीर ।
 उड़ावत गोपियन, जन के चीर ।
 एरी तहाँ सुन्दर श्याम शरीर चपल सुख साजे कुञ्जनमें ॥
 रहे खिल नव कमलन के फूल ।
 मिटावन विरहन मन के शूल ।
 सुहावन साजन के अनुकूल ।
 एरी तहाँ तन मन की सुध भूल मदन घन लाजे कुञ्जनमें ॥
 खड़ी सब सखियां परम रसाल ।
 श्री राधे ललित्तादिक ब्रज बाल ।
 निहारत नंद नदन को खयाल ।
 एरी जासे त्रिभुवन होत निहाल सरस ऋतु राजे कुञ्जनमें
 भइरी मेंटो धुन सुन विकल अंधीर ।
 प्रेम की होन लगी हिय पीर ।
 "सुधाकर," काइ कहूँ तोहे वीर ।
 एरी वाकी चितवन धन धो तीर लग्यो मेरे आजे कुञ्जनमें
 सखी मेरा साँवरिया०



❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

राधा कृष्ण मुरली वाद

बोहा श्री राधा नव नागरी मन

कृष्ण

मुरलिया देदो राधा प्यारी ।

राधा

मुरलिया में ना लीनी मुरारी ॥

कृष्ण

चंचल नैना मोहन वैना ।

मंद हसन सखी जन मुख देना ।

चंद्र बदन मन हारो ॥ मुरलिया देदो०

राधा

प्रेम सदन त्रिभुवन मन भावन ।

नीरव वन मुख मदन लजावन ।

नंद नदून गिरधारी ॥ मुरलिया में ना०

कृष्ण

प्रिये वादनि मोहं नांय विजाओ ।

देदो बाँसुरी नांय द्विपाओ ।

श्री वप भानु दुलारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

मूल कहूँ सोनन दिग आओ ।

मूट ही हमरो नाम लगओ ।

बेखी-चात तुम्हारी ॥ मुरलिया में ना०

कृष्ण

चोर लियो तुम तन मन मेरो ।

बाँसुरी कर लियो चर्णन चैरो ।

मोहनी हमपर डारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

चोरत हो तुमही सबके मन ।

कुछ गलिन में नित दधि माखन ।

आनंद धन धन धारी ॥ मुरलिया में०



* रचयिता *

श्री गिबर दान बोहरा काँच 'मुद्र'
दोक (राजस्थान)

म । करत परम पर विविध, विधि लीला ललित रं

कृष्ण

झीनलियो चित चिनवन भोरी ।

करदियो कामण तुम ब्रज गारी ।

ब्रज भूषण ब्रज नारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

हम नहीं जानत कामण टोना ।

नाहक हमरो नाम धरोना ।

जीवन धन सुख कारी ॥ मुरलिया में०

कृष्ण

भोरी मुरलिया तुम्ही छुपाई ।

कहत है सुन्दर आँख लजाई ।

मनहर कामण गारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

श्याम तनक नहीं तुमसे दुराऊं ।

देखलो कृष्ण वस्त्र दिवाऊं ।

खोल के चूनर सारी ॥ मुरलिया में ना०

कृष्ण

चतुर सखी मेरो मान हरेगी ।

गोपी जन कोड नाम धरेगी ।

रार करेगी महतारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

चपल छैल तुम मानत नाही ।

साँच कहत हूँ सोगन खाहीं ।

मानो जी प्रेम पुजारी ॥ मुरलिया में ना०

कृष्ण

जो नहीं दो भोरी बाँसुरी लजना ।

तो तुमरे दिग आऊं गो कल ना ।

साँचलो नेक बिचारी ॥ मुरलिया देदो०

राधा

श्याम सघन ब्रज के रसिया हो ।
नस नस में पिया तुम बसिया हो ।
जाओगे कित हित टारी ॥ मुरलिया में ।

कृष्ण ।

अंगियां मांय छुपाकर बंसी ।
वात बनात हो तुम चतुरन सी ।
छल भरी प्रीत दिखारी ॥ मुरलिया देदो ।

राधा

दृन्दावन के सुमनन वन में ।
नाचो सखी वन ! तव सखियन में ।
पाओगे मुरली अधारी ॥ मुरलिया में ना ।

कृष्ण

जमुना तट नित वीन बजाऊं ।
गोपी ग्वालन सँग सुख पाऊं ।
रस में विष भयो भारी ॥ मुरलिया देदो ।

राधा

ब्रज वनितन की घेरन सोतन ।
टेरत निशिदिन करत वियोगन ।
तन मन कर दियो छारी ॥ मुरलिया में ।

कृष्ण

लाव तुम्हें ललना समझाई ।
पर चित हूँ मैं किक न आई ।
ओ वरसाने बारी ॥ मुरलिया देदो ०

राधा

लो यह मुरलिया श्याम "सुधाकर,
तान सुनाओ ध्यान से गाकर ।
मैं वन जाऊं मतधारी ॥ मुरलिया में ०

—*—*—*—*—

[तरज] अरे मन बोल रे बोल ।

देखो मानो नँदलाल । छांडो मोरी नरम कजाई ॥ देखो ०
ग्वालन वाणी को सँभाल, मतना मुख से अट पट बोलो ॥
क्यों मोहन हम सँग हटलाओ ।
जा सोतन सँग प्रेम बढ़ाओ ।

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं ।

भूटी सौगँद खाओ ना, मैं जानू तुमरी चाल ॥ देखो ०
मैं ग्वालन हूँ नार नवेली ।
मतना छेड़ो जान अकेली ।
सुनलो गिरधर पहली ना, फिर दूंगी थाने गाल ॥ देखो ०
नू मग में मटकावत जाती ।
योवन मदमें मस्त लखाती ।

बढ कर वात बना ती क्यों मैं जानू तेरो हाल ॥ ग्वाल
वस मत ज्यादा वात बनाओ ।
दान हमारो देकर जाओ ।
लो, यह ! साखन खाओ कह यो चली 'सुधाकर, बाल ॥ ०

—*—*—*—*—

[तरज] छुपे हो कहां जाके प्यारे कन्हैया ।

मोहन तोरी बंसरी कैसी बजीरे ॥ टेर
भीठी रसीली रंगीली सुरीली तान ।
ऐसी सुनाई मोरी सुध बिसरी रे ॥
भूल गई सब मृद काजन को -

श्रवणन सुन धुन प्यारे हरी रे ॥ मोहन ।
मैं जल भरन गई जमना पर ।

छेड़ करन मोरी फोरी गगरी रे ॥ मोहन ०
मानो मोहन नहीं जाय कहेंगी ।

मान जसोदा से हम सगरी रे ॥ मोहन ०
श्याम सुन्दर तुम मनोहर मुरली ।

अधरन ऊपर खूब धरी रे ॥ मोहन ।
प्रीत करो कुबजा सँग "गिरधर, ।

छांड गये हमें कैसी करी रे ॥ मोहन ०
[तरज] दिन की आहें न गई रात के नाले न गये ।

आजा रे ओ मेरे चांसरी वाले आजा ।
अपने दासों को मुखीवत से बचाले आजा ॥ आजा ०

तेरी महिमा न किसी से हुई बर्णन अवतक ।
खोजते रे पग पढगये छाले- आजा ॥ आजा ०

दीन बंधो है तेरा नाम जगत में रोशन ।
दीन दुखियों के प्रभो पालने वाले आजा ॥ आजा ०

मैं सिवा तेरे कहां जा, किसे फरियाद कहूँ ।
तूही है तूही है सब जानने वाले आजा ॥ आजा ०

वीनती अवतो "सुधाकर, की भी सुनले प्यारे ।
आरजू मेरी के पहचान ने वाले आजा ॥ आजा ०

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस टॉक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ स्त्री गव्य ❀



* रचयिता *

श्री गिरधर दास घोहरा कवि "सु-
टोक (राजस्थान)

राखे तुम बड़ भाग्यनी, कौन नपस्यार्कान ।
तौन लोक तारन नरन, सो तुमरे आर्वा न॥

[नरज] मेरा हान उन श्याम प्यार से कहो ।

ना रूठो मनाऊं तुम्हें राखे गनी ।
तजो मान को माननी ओ मयानी ॥

काहेको फेर लियो मुख सुन्दर, बोलत हो मधु वैन नहीं ।
कहु भूल मई तो बतारो प्रिया, न विजाओ छिपाओ नैन नहीं ॥
दिन सोच ही सोच में बीत गयो, पर प्यारी कटेगी रैन नहीं ।
मनहारी तुम्हारा छवीली छटा बिन कृपा का आवत चैन नहीं ॥
हंसो लाडली प्रेम लीला लखानी । नारूठो मनाऊं०

कहि काज यह ब्रजराज से थाज, नराज कहो तो सही ललना ।
अपनो प्रिय प्रीतम जान सदा, जेहि नेक बिसारन थी पल ना ॥
बंश्याम बिना ब्रजवास तुम्हें, निशि दासर आवत थी कन ना ।
तिनको केहि हेतु सुलाय रसीली, बियोग में सीख लियो जलना ॥

बनी वावरी क्यों सखी मन लुभानी ? नारूठो मनाऊं०
रिसियाय के राखे लगी कहने, हमरे डिंग मोहन काहे का आओ ।
ब्रजमें ब्रज नारी विहारी बनी, ललिता चन्द्रावल गोर्पा पे जाओ ॥
कपटी तुमरो मन है गिरधर, छल की न हमहु से बात बनाओ ।
तिनके सँग रास बिलाम लहो, तिनके सँग झूटो स्नेह रचाओ ॥

ना हमको रिझाओ करो महर बानी । नारूठो मनाऊं०
इही भांति इने दूठ लागरही, नटनागर झूठ ब्रजमानु दुलारी ।
मनमोहन ने उत बांइ मही, अरु कहन लगे सुन प्राणन प्यारी ॥
हमरो तुम बिन तुमरो हम बिन, बनि हैं नहीं वानक लेहु निहारी ।
पूरण ब्रह्म कहावत हूं, तुम पूरण शक्ति हो आदि हमारी ॥
"सुधाकर," को प्यारी सुधा तुम सुहानी । नारूठो मनाऊं०

चक्र परा का नाडली, सांच कहो मोय आ
नजनी क्यों रिसियाय के मुखफेरयो केहि काज

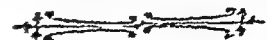
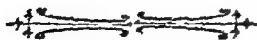


[नरज] मोहन कर हमसे बःजोधी-
तुम इनराओ ना ।

मोसे ना बोलो सौवरिया,
चलो इटो जाओ ना ।

कण्ठों हाथ लगा मुखसरिया-
सौगन त्वाओ ना ॥ मोसे ०
जाओ २ पिया मोय नाँय विजाओ ।
जा सोतन सँग प्रेम बढाओ ॥
मन झूटो विश्वास बाँधाओ, जान मोहि—
वावरिया वान बनाओ ना ॥ मोसे ०

सांच कहुँ मैं कँवर कन्हाई ।
श्रीत लगा तुमसे पद्यताई ।
देखलई तुमरी चतुराई नदवरिया-
नागरिया, बात बनाओ ना ॥ मोसे ०
वा मक निर्लेज ठगनी नारी ।
कुचजा कुटिल कुरूप नौवारी ।
वा पर रीके श्याम विहारी, मधुकरिया-
मनहरिया, कुत्र शरमाओ ना ॥ मोसे ०
दासी सेती शीत लगाकर ।
ब्रज वासी हरि श्याम "सुधाकर," ।
राधा सो मुख चन्द्र सुलाकर गोपियन रो-
गिरधरिया नाम लजाओ ना ॥ मोसे ०



[थियट्रीकल गुजराती डंग का गायन]

वे जैस्यूं, हवे पण जैस्यूं राज ।
रंगवीना तमे आव्यो ॥ हवे०
वरियाविहारी, बैयाँ न हमारी, छुवोवनवारी पछी ऐस्यूं
श्री ऐस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रंगवीना०
मैं जल भरन जातरही जमना ।
तुम काहे मग रोकत ललना ॥

मात जसोदा से कहिस्यूं,
मैंतो कहिस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रंगवीना०
गोरस बेचन घरसे निकसी सास ननद की चोरी सू ।
तुम भगरत हो कर पकरत हो मोहन वाराजोरी सू ॥
नहीं रहिस्यूं ! नहीं रहिस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रंग०
सीसपे गागरि धर ब्रजनागरि कलस सजा दोउ बैयाँ पर ।
चली चतुर चितचोर 'सुधाकर, मारत नैन कन्हैया पर ॥
सुखपैस्यूं ! सुखपैस्यूं हवे पण जैस्यूं राज ॥ रंग०

[त.] जमाना छान मारा है यह दुनियां देखी भाजी है ।

श्री राधे नागरी प्यारी तू वृन्दावन की रानी है ।
विहारन लाडली ललना जगत का मन लुभानी है ॥

चिबुक सांवल विन्दु छत्री द्युति इन्दु इन्दु विनाशनी ।
कनक कुण्डल सुभग भलकन कपोलन मृदु हासनी ॥
ललित मुखमें पान सरस महान प्रेम प्रकाशनी ।
नासिका शुक्र दृढ नितम्बनी अधर विम्ब विलासनी ।
तू मृगनयनी है पिक बैनी है सुख दैनी है न्यानी है ॥ श्री०
मदन मोहन सी लता सोहन दशन जिमि दामनी ।
चपल चितवन निकट अलकन सुभग लट रुन नागनी ॥
ब्रपभानु नंदनी दुख निकंदनी जगत वंदनी भामनी ।
चंद्र वदनी चित हरनि मुख नवल कमलन कामनी ॥
मनोहर माधुरी शोभा 'सुधाकर,, ने वलानी है ॥ श्री०

[तरज] परी सखी सांवरु सजन लागे प्यारो री ।

पिया तुम प्रीत करी ! हम जानी रे ॥ पिया०
दे विश्वास गये हरि मथुरा ।
कुवजा संग ऋतु मानी रे ॥ पिया०
कारो है तन तैसो मन भी है कारो ।
कपट भरी है तोरी धापी रे ॥ पिया०

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

आनंद घन हित चित की बतियां ।
जामत सब राधा, रानी रे ॥ पिया०
वार वार तोहे समभाय हारी ।
मानी ना हमरी कहानी रे ॥ पिया०
सुखद 'सुधाकर,, तुम विन हमरी ।
चिन्ता में देह सुखानी रे ॥ पिया०

[तरज] भ्रम मन सीताराम ।

डोले मन गोकुल गाम । निशि दिन घूमत ॥ डोले०
मोहन मदन हरन मन वाला ।
ब्रज धन जग जीवन नदलाला ।
लख लावण्य ललाम ॥ डोले मन०
सुन्दर सुखद सुशील सुहावन ।
लोचन ललित ललन मन भावन ।
अनुपं छवि, सुख धाम ॥ डोले मन०
चन्द्र लजावन सुभग सयानी ।
श्री ब्रपभानु सुता गुण खानी ।
सोहत सँग ब्रज वाम ॥ डोलत मन०
चितवन चंचल सुभग 'सुधाकर,, ।
कोमल अँग कुच मण्डल ता पर ॥
धरे दीधि सुत वंश्याम ॥ डोले०

[तरज] एक किलमी गायन ।

सुनादे सुनादे सुनादे मधुरी-
वांसुरी की तान सुनादे मधुरी.....ई ॥ सु०
श्याम मोहन पिया वंसी वजादे ।
मधुर मधुर धुन फिर से सुनादे ।
बनादे २ बनादे वावरी ॥ वांसुरी की०
ऐसी सुना मुरली माधो वन में ।
प्रेम की एक नई मोरे तन में ।
वसादे २ वसादे नगरी ॥ वांसुरी को०
कान्ह कँवर मत कर चित चोरी ।
अपने ही रंग में साजन मोरी ।
रंगादे २ रंगादे चुनरी ॥ वांसुरी की०
श्याम 'सुधाकर,, कृष्णमुरारी ।
प्रेम की दुविधा दुरित हमारी ।
मिटादे २ मिटादे सगरी ॥ वांसुरी की०

—+—+—+—+—+—+—

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टॉक

ॐ सुधाकर काव्य कुञ्ज ॐ

विरह का पुकार



श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टांक (राजस्थान)

(तरज) थोजी म्हारे टप टप चुंवे छे पसोनी ।

मैंतो थांकी बाट जोइच्छुं निरधारी ।
म्हारे घर आथो जी मोहन बनयारी ॥ मैंतो०
सांवरिया थांकी गेल निहाक प्यारा लाल जी ।
थे आथो म्हारा आंगणिया में रूपरमान जी ॥
थोजी म्हारा हिवड़ा रा प्रेम पुजारी ॥ म्हारे घर०
मोहन जी प्यारा थांकी मी भांकी थांकी सोहनी ।
थो कामणगारा कारा केमां री छवि मोहनी ॥
तीखा र नेण गदन मन हारी ॥ म्हारे घर०
मैं कोरी र नथणी में महिडो जमाय के ।
जी मीठी र मिलरी मालन में मिलाय के ।
थाने म्हारे हाथ गवारां सुझकारी ॥ म्हारे घर०
थो श्याम थाने गोट्यां में लेले चुचकार म्युं ।
थो कान्ह थांका सुखड़ा री गोभा ने निहारम्युं ॥
जी लागे छवि चन्द्र छटा सी प्यारी प्यारी ॥ म्हारे घर०
थल बेला थांकी वृमे छे भांकी म्हारा नैन में ।
थो छेला थनो मोह लीनी जी मीठा वैन में ॥
मैं भूली सुव श्याम "सुधाकर, सारो ॥ म्हारे घर०

(त.) मने तारो थो उचारो स्वामीं थाप मव जगत तारोला ।

हरि आथो जी आथो दरस दिखथो-
ना तरसाथो मोहन सुन्दर श्याम ।
म्हारी पीर मिटाथो प्रेम बढाथो-
नैनन में बस जाथो जी थो अभिराम ॥ हरि०
सज्जन थांकी सांवरो भांकी-
थांकी सजीली थणी मुख धाम ।
चञ्चल चितवन चोर लियो म्हारो-
मोती सो मन विन दाम ।
थो वंश्याम, लीलाललाम, टेर करे ब्रजवाम ॥
हरि आथो जी०
प्रेम प्रगाढ़ में वृह गड़े मति-
भूलगई घरवारको काम ।

थो वंश्याम- लीलाललाम टेर करे ब्रजवाम
हरी आ थोजी आ थो०
अंग लियां री मृदुइली पिया-
वेयां में कीने छे सांखली ठाम ।
देह गते थांका चर गां री चिन्ता में-
मृव गयो मव चम ।
थो वंश्याम लीलाललाम टेर करे ब्रजवाम ॥
हरी आ थो जी०

थो नटनागर श्याम "सुधाकर"-
शीश कुकाय वरुं छुं प्रणाम ।
जावे छे जीव कलेजा सूं थांविन रानुंली कबलग थाम ।
थो वंश्याम लीलाललाम टेर करे ब्रजवाम-
हरि आ थो जी०

[तरज] सुरमारी हाथी तो म्हारे हाथ देदी ज्यो ।

म्हाने पहल्याई मेवाड़ा राणा क्यो ना बरजी ।
म्हारा जिया में समाय गया गिरधर जी ॥ म्हाने०
वाल पणा सूं प्रीन हमारी ।
गिरधर जी सूं लागी प्यारी ।
अबनो चो तन मन बलिहारी, करदियो उतपर जी ।
कौमल कौमल नैना सुन्दर ।
शीश मुकुट कटि पर पीताम्बर ।
मुरली श्याम सजी हाटां पर, मतड़ा लियो हर जी ॥ म्हाने०
लाग गई थव लाज कहांकी ।
हिवड़ारे विच रमगई भांकी ।
गिरधर बन गई मीरां थांकी चरण चाकर जी ॥ म्हाने०
रुठो थाप जगत सब रुठे ।
धुली प्रेम की गांठ न रुठे ।
प्रीत "सुधाकर", स नही टट, छुटे सब घर जो ॥ म्हाने०

दल लोचन प्रभो यह है निवेदन दास का । निज चरण की देकर शरण सेवक बनालो आप का ॥

ने देखी जग की रीत मीत सब भूठे पड़गये ।

मोहन घंश्याम विहारी दरस दिखाजा ।

निदन छवि धाम मुरारी म्हारे घर आजा ॥

धांकी वाट सांवरिया नित मधुवन में जोऊं छूं ।

थांकी ओल्यूं साजन अखुवन मुखड़ो धोऊंछूं ।

म्हारा नैनो निसि दिन वरसे ।

दरसण चिन जिवड़ो तरसे । ओ...

म्हारे लागी हिवड़े अगन लगन की आर बुझाजा ॥ ओ०

तीखी २ आभियां सुन्दर मनहर धूँधर गराकेस ।

मीठी २ वतियां छल बल नटवर कामणगारा भेस ।

म्हारी सुरता में जब छावे ।

तन मनकी सुध विसरावे । ओ...

मैं तड़पूं सब दिन रैन लाल जी धीर वँधाजा ॥ ओ०

पाणीड़ा रों मिस कर घरखूं नित जमनापर जाऊंछूं ।

छाने २ मन मन्दिर में थांने कान्ह बुलाऊंछूं ।

घड़ी पल छिन चैन न पाऊं ।

जिवड़ाने घणो समझाऊं । ओ...

ओ मीरां का गोपाल लाल म्हारा सन का राजा ॥ ओ०

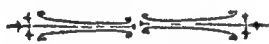
साथे मथली धर गोरस की कुञ्जन मांय पुकार करूं ।

जो मधुवन में मिलो सुधाकर, तो पलकन सँ प्यारवरू ।

मैं बन जाऊं ब्रजकी नारी ।

थे छैल वणो गिरधारी । ओ...

मैं गोपी वणूं रसाल ग्याल बन माखन ग्याजा । ओ मदन०



(तरज) जियरा राम भजन करले रे ।

सखीरी कर प्रीतम सँग प्रीत । अपनो आपां जीत ॥ स०

सांचो नेह लगाले सजनी ।

बनजा चंद्र चकोर सी रजनी ।

मन मन्दिर के मांय बसाले साजन परम पुनीत ॥ स०

प्रीत की रीत समझले पूरी ।

शीश चढै चरणन की धूरी ।

अपनी अपनता आप सिटा कर दैन निरख निज मीत ॥

विषियन को तज राग दिवाची ।

दुनियां है सब स्वप्न कहानो ।

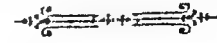
सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

माया प्रवल जर्गत की सारी ममता है भयभीत ॥ सखी०

मोर कही तू सुन अलवेली ।

अपने पिया की बनजा सहेली ।

सुरता मांय "सुधाकर," गा नित पीव मिलन के गीत ॥



(त) ओ जी म्हारा राधा गोपीनाथ री वंसी बाजी तो सही ।

ओ जी म्हाण सांवरिया गोपाल विहारी वृन्दावन वासी ।

म्हारे घर आओ जी जसोदा लाल मुरारी मोहन सुखरासी ॥

कन्हाई थांकी नित उठ निरखूं चाल ।

चलत गात सुन्दर बाल मराल ।

निहारूं चञ्चलनेन विशाल खड़ी शुभ दरशन की प्यासी ॥

मुकुट छवि निसि दिन करत निहाल ।

हरत मन धूँधर वारा बाल ।

रंगीली गल वैजन्ती माल चमक रही चञ्चल चप्लासी ॥

मुद्दावे सँग दाऊ दीन दयाल ।

लुभावे मन शोभा तरुण तमाल ।

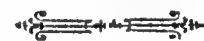
सजन थांका मोहन वचन रसाल प्रेम की डारदई फांसी ॥

'सुधाकर,' आई शरण ब्रज बाल ।

भई थांका प्रेम में विकल विहाल ।

प्रभुजी म्हारो भेटो जगजंजाल अरजकरे चरणा की दासी ॥

म्हारे घर आओ जी जसोदा लाल०



(तरज) मन मोहन ग्यारे नैनन के तारे आप हो ।

मेवाड़ा राणा गिरधर सँग लागी म्हांकी प्रीत ॥ देर

निर्मल तन ने उजलो कर लियो मान रोह ने जीत ।

मन मन्दिर में राज विराजे भांकी परम पुनीत ॥ मेवाड़ा०

सांचा मन सूं सेवा करस्यूं जग से होय नचीत ।

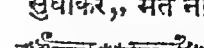
प्राणा सूं भी प्यारा म्हारा बाल पणारा मीत ॥ मेवाड़ा०

स्नान कराऊं वस्त्र सजाऊं भोग धरूं नबनीत ।

चँवर दुलाऊं चरण दवाऊं गाऊं मधुरा गीत ॥ मेवाड़ा०

मीरा दासी अब गिरधर की सांच भई परतीत ।

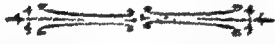
होनी हो सो होय "सुधाकर," मत ना हो भयभीत ॥



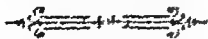
प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोक



[तरज] अचियाँ मिलाके जियाभरमाके चलेनहीं जाना ।
विननी विंदारी करें हस सारी गिरवरधारी । डेर
तोरी है शान न्यारी अ'न न्यारी वान न्यारी ।
मीठी मुक्क्यान न्यारी सुरली की तान न्यारी ।
प्यारे बनवारी जाऊं बलिहारी गिरवरधारी ॥ विन०
आथोजी आथो कान्हा मानवन चुरानेवाले ।
वंसी की प्यारी प्यारी रागों में रिक्तनेवाले ।
छवि चितहारी सोहें अति भारी गिरवरधारी ॥ विन०
फिरसे ग्यालोंके भैया भौथों को चराने आथो ।
फिरसे जमुना पे गल लीला को रचाने आथो ।
जोवें मग सारी टाड़ी ब्रजनारी गिरवरधारी ॥ विन०
विगड़ी बनाथो मेरी आथो जी 'सुधाकर' प्यारं ।
दानों के जिया में जमाथो थो नैनन तारे ।
थोजी थो सुरारी हरि दिनकारी गिरवरधारी ॥ विन०

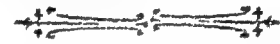


[न] भूलनेवाले भूलगये फिर यादक्योंउनकी आकनताए ।
छांडगये ब्रजराज हमें तब नैननमें काहें फिर २ आथो ।
जाथो बनो पिया, सोतनके गंग—
जानुंगा जब, मेरे मनसे भी जाथो ॥ छांड०
वोहीमुरलिया,वोहीलकुरिया,वोहीकमलिया,वोहीमँवरिया ।
मेरे तो चित में वोही छवि है—
तुम जाके छुपे तो इसे भी छुपाथो ॥ छांड०
भूलगये जब बात हमारी, मूरत ही चितवन से विसारी ।
फिर भी सनाए क्योँ याद मुम्हारी—
कान्हा जरा मोहें यह तो वनाथो ॥ छांडगये०
तुमनेही जमुनापेवंसीवजाकर, तुमनेहीवावरीहमकोबनाकर ।
प्रेम की आग लगाई है तुमनेही—
तुमही "सुधाकर," आके बुझाथो ॥ छांडगये०



[तरज] जाथोरी आली श्याम पिया को समझाथो—
ऊधो जी तुम जाथो इन्हीं को समझाथो—
बनाथो नहीं यहां वनियां ॥ हां... 'देर

चौटकभो जियने नहींगार्ह । यह कहाजाने पीर ।
जरा ! सोन के मुक्की बतलाथो —
बनाथो नहीं दिन रतियां ॥ हां... 'ऊधोजी'
चायलकी गन चायल जाने ! पीर पराई कौन पिछा-
हमें ! जान न अपना सुनाथो—
दिवाथो मत कोई पातियां ॥ हां... 'ऊधोजी०'
चेददी का दर्द न आवे । आपहसे थक हमको म्लावे ।
ऐसे ! रुपटी के नीन न गाथो—
जलाथो सन मांगी छतियां ॥ हा... 'ऊधोजी०'
या ब्रजमे हरि मथुग जाकर । मूलगयेहमें श्याम 'सुधाकर',
फिर ! नाहक मन लजचाथो—
सुनेगी नहीं कहु सखियां ॥ हां... 'ऊधोजी०'



[तरज] लागे सजनी सांवरिया के नैना बनकर तीररे ।
वैरण बनसी मनमोहन की बाजी जमना तीर रे ॥ डेर
करम की छाऊँ में वीन बजावत ।
वावरी ब्रज वनितन को बनावत ।
का, करुं सजनी चैन न आवत जिया भरमावत—
कैसे मन्वुं धीर रे धीर रे धीर रे ॥ वैरण०
नवल थोवन मेरो वारी उमरिया ।
जात ब्रन्दावन मूली डगरेया ।
में गोकुल की कान्हा गुजरिया श्याम कँवरिया—
साँवरिया बेपीर रे पीर रे पीर रे ॥ वैरण०
ऐसो मधुर रस गान मुनाथो ।
अपि मुनि जनन रो चित भर माथो ।
मन ललचायो कमल विलायो चलत थकायो—
कालिंदी रो नीर रे नीर रे नीर रे ॥ वैरण०
श्रवणन विच सुरली धुन पाकर ।
निज निज ग्रह को काज मुलाकर ।

दौर परी सब सखियां "सुधाकर," सुध विसराकर—
चलद पुलट सज चीर रे चीर रे चीर रे ॥ वैरण०



[नरज] मुखड़ा मेरा यह चांद सा है उजला आजा-

रदेसी वांके बलमां ।

ठाड़ी कुञ्जन में जोऊं कृष्ण वाट प्यारे आजा आजा
मोहन सुन्दर साँवरा ॥ हां... ठाड़ी०

ऐसी कहा भई भूल साँवरिया ।

छाँड गये तुम हमरी नगरिया ।

वारी उमरिया धीती जातहै ! मोरी तुम बिन राजन,

वारी उमरिया धीती जातहै ॥ हां... ठाड़ी०

सुन्दर श्याम सोतन सँग छाये ।

याद क्यों उनकी हमको सताये ।

निदिया नहीं आये दुख पायहै ! मेरो उन बिन तनमन

निदिया नहीं आये दुखपायहै ॥ हां... ठाड़ी०

पिया बिन निशिदिन चैन न पावें ।

रोय २ सखीयां नैन गमावें ।

घुट २ मन जियरा भाग्योजायहै ! कहा पड़गई उलफन

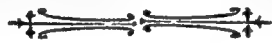
घुट २ मन जियरा भाग्योजाय है ॥ हां... ठाड़ी०

घायल की गत घायल जाने ।

विरह की चोट "सुधाकर,, माने ।

गाने मस्ताने कोई गाय है ! वन प्रेमकी जोगन-

गाने मस्ताने कोई गायहै ॥ हां... ठाड़ी०



[नरज] नैना लागे साँवरिया से मोरे सखी ।

मुरली वाले साँवरिया तोरी, मुरली की तान ।

तन मन छीनो, वश कीनो, हरलीनो मेरो प्रान ॥ सु०

श्याम जबसे सुन पाई । वावरी सी वन आई ।

भूल गई सब चतुराई ।

सुध विसराई अकल गँवाई, सुन २ सुन्दर गान । सु०

रसीली कामण गारी । अजब धुन मोहन प्यारी ।

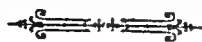
वजावत कुञ्ज विहारी ।

प्रेम कटारी लागत कारी । सजनी सांची मान ॥ सु०

'सुधाकर, वसगई तनमें । वह छवि धूमत नैननमें ।

वनूंगी अब जोगनमें ।

कुञ्जन वन में श्याम लगन में । गाऊंगी यही गान ॥ सु०



सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

[तरज] भारत में भगवान, प्रान वन आजाओ ।

नैननवा के वान, सखीरी मोरे लागेरी ॥ नैन०

मैं जल भरन जायरही जमुना ।

वीचमे मिलगये कान्ह ! भाग मारे जागे री ॥ नैन०

छीन कपट मोरे माथे से गागर ।

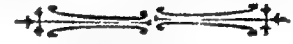
जोवनवा को दान ! श्याम मोसे मांगे री ॥ नैन०

हंस मुस्कावत वीन वजावत ।

गावत मुधुरो गान ! प्रेम रस पागेरी ॥ नैन०

सुयश न वरनो जात "सुधाकर,, ।

आनंद देख महान ! सकल दुख भागे री ॥ नैन०



[त.] सखी व्रज में खेले होरी, मोहन सँग राधे गोरी ।

सखी पनिआंभरन नहीं जाना, पंचटपे लड़ाहै कान्ह । स

मैं जल जमुना भन जानरहीमारग निकस्यो आना ।

छीनकपट मोरेमाथे की गागर, वैयांपकर लिपटाना ॥ स.

वीन वजावत जिया भरमावत, मधुर २ कछु गाना ।

हंस मुस्कावत सैन चलावत मचमें कपट भरिआना ॥ स.

सोतन के सँग प्रेम बडावत, हमसे करत वहाना ।

ऐसो नटखट निपट अनारी, मन मोहन मस्ताना ॥ स.

श्याम 'सुधाकर, वावरीकरदई प्रेमको जाल विछाना ।

सास नैनद मोसे आज लरेगी, देगी जिठानी ताना ॥ स०

[त.] धीरे २ आरे वादज धीरे २ जा... मेरा बुल २ सो-

आजा २ कृष्ण प्यारे आजा । कछु मीठो २ गा...

प्रेम की वंसी मधुर वजाकर, मोहन राग सुना ॥ आ०

तोरी वंसी ने पिया मन हर लियां मेरो... हर

वांकी चितवन की अदाने कर लियो चरो... कर.

गा, तुम्हे मेरी कसम कछु तान मधुरी गा... ॥ प्रेम०

लेगई है छीन मन, मोहन तेरी आखें... हां तेरी.

उड़के आजाते कभी होती अगर पांखें... हां अग.

ला, दया करके जरा अब ध्यान हमपर ला... ॥ प्रेम०

रोरही हैं गोपियां सब याद में तेरी... यादमें.

होगई तन में "सुधाकर,, मनकी एक टेरी... मन.

मत सतारे निर्दई, विरही को धीर बधा... ॥ प्रेमकी०



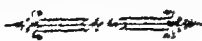
प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक



सोवार मिटे हम जिसके लिये वह धार हमारा हो न सका ।
एक धार हुआ दीवार मनम, वह धार हुआ हो न सका ॥
उम रसके कम्प की जानियेमे गोहमको इशारे हज़ार हुये ।
फिर भी दिलदार की नज़रोंसे नज़रों का नज़ारा हो न सका ॥
बृल बृल ने वद्वत चाहा गुल को सदके भी हृद कुरखौं भी गई ।
लेकिन मेयाद की चालोंसे गुलशन में गुजारा हो न सका ॥
श्री रामचर रोशन जल र कर तुमने भी गिला तो खूब किया
इस दर्द का पर परवाने को इजहार तुम्हारा हो न सका ॥
वेदाद सितम करने ही रहे फरियाद मेरी कुछ भी न मुनी ।
हँसते ही रहे राने पे मेरे यह खार गवाप हो न सका ॥
श्री परदा नयीं मैं भी तुम्हको वे परदा ही करके मानूँगा ।
परदे ही परदे में जो अगर दीवार तुम्हारा हो न सका ॥
मिलना में 'सुधाकर, मे क्योकर मिलनेको कोई तस्वीर न थी ।
तस्वीर की उलटी दुनियाँ में कुछ मन का विचाग हो न सका ॥



तेरी याद में अरे केवल मुझे खुद को खुद की खबर नहीं ।
मैंने खुद ही खुद को मिटा लिया, लिया तूने कोई असर नहीं ॥
मुझना मुदाद निदाने राम को सितम अलम तो मिला मगर ।
तेरे दीद ने कमी दीदा तर को भिला मुकून सवर नहीं ॥
किया हरक ने मुझे नातवाँ बचीं मुजलसर हैं यह उलख्यो ।
शबरोरुज तो क्या प जाने जां मुझे चेत आधी पहर नहीं ॥
अरे परदे साज ओ, लामकी में शहीदे नाज हूँ माहजबी ।
कमी परदे परदे में नाजनी क्या? नज़र पे होगी नजर नहीं ॥
मैं अजल का एक पयाम हूँ एक शुद न शुद सा कयाम हूँ ।
तेरे दर का थदना गुलाम हूँ, हूँ वह शाम जिस की सहर नहीं ॥
न मिटाई हरक की हरतियां न वदाई नालों की नदियां ।
न उड़ाई अर्शकी थजियां तो समझना मुझको 'कमर, नहीं ॥



जुनूने शोक पेभी भी कोई तक़ीर होजाये ।
के पिन्हां उक़दा सालाय निदल तक़ीर हो जाये ॥

रुखे रोशन का नज्जारा कहीं तशीर
क्यामन होके माने कहर आलमगीर
तैय्या-है तसव्वुर में किमी तस्वीर का नक़
नजर आये जिनें तस्वीर वह तस्वीर होजाये ॥
लये लाने बद्दशां के नयमुम की मसीहाई
दिले विसमिल के कामिल जग्म पे इकसीर होजाये ।
रगड़कर पीसदे गुमों बनादे गर फलक मुफकें ।
तो नज़रों में समाजाऊं मेरी तौकीर होजाये ॥
एकड़ ही लूँ कदम जाने जहाँ जाने न दूँ दिल से ।
हकीकत गर्भ मेरे ख्वाब की ताश्वीर होजाये ॥
जुनूने जोश में वेदाश हूँ या ख तुही जाने ।
कहीं काचबे में बुतखाना नहीं ताश्मीर हाजाये ॥
मुअमां हो सके मुश्किल का हल यह नामावर कहना ।
'सुधाकर,' के लिये पेभी कोई तदवीर हो जाये ॥



वह तो हनथाने,रा है जिसको निहां समझा था मैं ।
फिर वही हपेश है जिसको अर्यों समझा था मैं ॥
आलमे मस्ती में मय पीने को कोई नूर की ।
हलिये आलम को साकी की दुकाँ समझा था मैं ॥
कुछ नहीं समझा जमाने में अगर समझा तो बन ।
कैप के मानिन्द अपनी दास्तां समझा था मैं ॥
फिर भी अपने बल से शार्दां करोगे तुम कमी ।
जब जुदा तुमने किया वह जाने जां समझा था मैं ॥
थो तमाशाई तमाशा ही तमाशा है तेरा ।
है तमाशा ही तमाशा वह कहां समझा था मैं ॥
शुद न शुद गुम शुद बरामद शुदशुदा आज़िर न शुद ।
कलमका यह ही हकीकत का रयाँ समझा था मैं ॥
ख्वाब की तौवीर को सादिक 'सुधाकर,' जानका ।
आयो गिल के खेल को अपना जहाँ समझा था मैं ॥



जी की हसरतें आहो फुगों समझा था मैं ।
जी वेतावी को अपना इस्तेह्वाँ समझा था मैं ॥

न दहर में बुल बुल की किसमत का जहूर ।
सैयाद जिसको वागवां समझा था मैं ॥

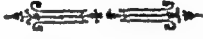
न क्योंकिर पड़ीं फुर्कत में रातें उन्न भरा ।
दिन का ही चमन को आशियाँ समझा था मैं ॥

था उकड़ा समझ में यह नहीं आया मगर ।
लस्सानी को क्यों शीरीं क्यों समझा था मैं ॥

फिरते फ़ानी से अब राफ़िल नहीं वेदार हूँ ।
फ़र्ज रूहानी नहीं जब महर्वा समझा था मैं ॥

इस से उवादा सख्त नादानी भी क्या ? होगी मेरी ।
आवो गिल के खेल को अपना जहां समझा था मैं ॥

राहनुमा कोई न था गो था ज़मीनो आसमाँ ।
तो "सुधाकर,, तुमको ही, रोशन ज़मां समझा था मैं ॥



सदाकत की मजाजी दौर में तहकीर होजाये ।
खुदी वेखुद वनादे मर्हला तककीर होजाये ॥

खुदा जाने किसी खुदा पे मैं खुद हूँ क्यों वेखुद ।
खुदी से है यह मुमकिन ना खुदा तकरीर होजाये ॥

मैं कहता हूँ अनलहक़ जजबये मंसूर के सानी ।
जिगर के पार सूली तीर या शमशीर होजाये ॥

राजब है कहर है आज़ार है आफत मुभीबत है ।
किसी काफ़िर की क़ल्बे ज़ार में तनवीर होजाये ॥

मिटाना है मिटादे, पर समझ कर रहवरे आमिल ।
शहीदे नाज़ का नामो निशाँ आखीर होजाये ॥

न होते वह जुदा मुजसे न मैं उनसे जुदा होना ।
कहूँ क्या ? मैं कि जब बल्टी मेरी तरकीर होजाये ॥

सदा यह है के बहशत में किसी वहशी का अफसाना ।
यगाना वन ज़माने के लिये तकवीर होजाये ॥

तुम्हे बख़्शा करम अपने से ओ फ़ितरत के दीवाने ।
यह मेरे नामये आअमात में तहरीर होजाये ॥

कमर से चाँदनी है तो कमर भी चाँदनी से है ।
"कमर,, को चाँदनी से किस तरह तनकीर होजाये ॥



* चारवेत *

आह किस जोक से घनश्याम घटा आके जमी ।
दामनी नाचती है जोक से वादल रमी ॥ आह०

धीमी धीमी तेरी रीहाना अदल्ले भाई ।
ठंडी ठंडी सुवे अलका की हवाएँ आई ॥

भीनो भीनो गुले सोसन पे लतारें छाई ।
रंग मस्ताना सुहाना है ! नहीं कुद्रे भी कमी । दामिनी०

मेरे पानखवार दिले जार के प्यारे वादल ।
नैन तकते हैं तुम्हें नैनों के तारे वादल ॥

वस तुम्हीं हो मेरी विरहा के सहारे वादल ।
दूर करसकते हो वस तुम्हीं मेरे दिल की ग़मी ॥ दामिनी०

धूमते धूमते तुम उनकी तरफ़ जाओगे ।
धूमने धूमते मोती वहाँ बरसाओगे ॥

चूमते चूमते लतिकाओं को दर साओगे ।
मेरे दिल की भी सुना देना ज़रा दो नज़मी ॥ दामिनी०

चंखना मेरा गरजना से सुना देन उन्हें ।
आँसुओं का गिला भड़ियों से बता देना उन्हें ॥

विजलियों से मेरी बहशत का पता देना उन्हें ।
कहना उज्जत से अज़म मेरा ! ओ, अवर अज़मी ॥ दा०

वर्क वेताव से वह खुद भी लरजते होंगे ।
आह के नारे वहाँ पर भी गरजते होंगे ॥

नैन उनके भी मेरे राम में बरसते होंगे ।
क्यों ? अमी पाके भी हम जलते हैं दो दिल जख़मी ॥ दा०

नाचते मोर हैं और बुल बुलें चहचाती हैं ।
केत की मोलसरी जूरी झुकी जाती हैं ॥

दिल को मरग़ूब वहारें यह सभी धाती हैं ।
फिर भी नाचार 'सुधाकर, तेरी धारें न थमी ॥ दामिनी०

आह किस जोर से०



श्री 'सुधाकर' प्रणीत विकार्य पुस्तकें भारत प्रिंटिंग प्रेस से

प्राप्त कीजिये

श्री शिव कृष्ण संग्राम (सत्य स्वम) कथा के रूप में

सुधाकर सुमनाञ्जली

सुधाकर प्रेमाञ्जली

आजाद भारत

सत्यनन्दहार

श्री कृष्ण बीपी विनोद (नाटक एकांकी)

सुधाकर फागन विनोद

सुधाकर विनय पत्रिका

सुधाकर पद्य प्रभा

श्री कृष्ण सुदामा

सुधाकर काव्य कुञ्ज

श्री शिव कृष्ण संग्राम

सुधाकर भीत

श्री हरि नाम शंकीर्तन माला

श्री भानु चर्यवर (अनुप यज्ञ नाटक)

वसु माता अर्थात् दुष्ट दमन (कथा रूप में)

यशवानुयास शब्द क्रोश अर्थात् गंभीरये काफिया

नोट—ग्राम पंचायतों के व अन्य न्यायालयों के लिये हुए आवश्यक कागज हर समय हमारे यहाँ सस्ते मूल्य पर मिलते हैं।

मैनेजर

भारत प्रिंटिंग प्रेस

टोक (राजस्थान)

भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक

ॐ सुधाकर काव्य कुञ्ज ॐ

समसा



24441

* रचयिता *

श्री गिरवरदास बोहरा कवि "सु-
टोंक (राजस्थान)

डा. साहब श्री शंभुदयालजी सहोबिय



सी. एम. आ. टोंक (राजस्थान) की
जन्म सेवा के उज्ज्वल में,



अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे ।
धनवंतरी के सानी, जिनमें कमाल देखे ॥

दर्शन की मूर्ता हैं, सुन्दर विचित्र हँस के । उज्ज्वल मयङ्क मुख पर नैना हैं सज्ज रँग के ॥
मणि हीर से दशन हैं, विद्युत प्रभा प्रसँग के । हैं रूप मत्र अनूप निर्मम नरोत्सँग के ॥

समपन्न सब गुणों से, जाँहर विशाल देखे ।

अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे ॥

चाणी विशिष्टता में जादू या कुछ असर है । हर दिल अजीब पन से हर दिल में उनका घर है ॥
हर नौर खुश सखु नवर दुनियां में नामवर है । हर गुल खिला हुआ है हर शाख पुर नमर है ॥

शशि के समान शीतल, मुखकर रसाल देखे ।

अमरत्व के प्रदानी शंभो दयाल देखे ॥

उत्तम चिकित्सकों में आला हैं काम जिनका । सी. एम. आ. के पद से भूपित हैं नाम जिनका ॥
हर रोग मर्ज पर हैं, क्रावू तमाम जिनका । आरोग्यता शिफा से शोहरा है आम जिनका ॥

लुकमान से भी बढ़कर, ऊँचे खयाल देखे ।

अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे ॥

करते हैं रोगियों की सेवा यों सौख्य दाता । ज्यों प्यार से मुलाती बालक हो कोई माता ॥
हाँ, ऑपरेशनों के ताँ मानिये विधाना । नस नस की हरकतों के हैं आप पूर्ण ज्ञाता ॥

तत्काल कुछ करिश्मे, सम इन्द्रजाल देखे ।

अमरत्व के प्रदानी, शंभो दयाल देखे ॥

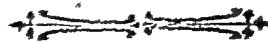
जो कुछ रक्तम क्रिया है आहवाल खुद कलम से । कोई गलत न समझे, अपने गलत फहम से ॥
है हाल चश्म दीदा जो कह रहे हैं तुम से । खाकर कसम भी कहें, पृथे, जो कोई हम से ॥

दुश्मन तेरा "सुधाकर,, गर्दिश जवाल देखे ।

रमरान की चिता में अतिगहन ज्वाल देखे ॥

"सुधाकर,,

प्रो० भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक (राजस्थान)



व

वहारे जिंदगी की जो सना है ।

के

आदि० १०-१२-५६ सुनहरी पंचवर्षी, योजना है ॥

उपलक्ष में

न को इस तरह उन्नत बनाया ।
वीरानों को जन्नत कर दिखाया ॥
जकी-जर हुक्मराओं ने लुटाया ।
तो शादावी ने खुद दामन विछाया ॥
ह आकिल, आलिमों की खोजना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

बनाये बाँध और नहरें निकालीं ।
जो बंजर थीं, वह उपजाऊ बनालीं ॥
मरुस्थल में भी तरकीबें वह डालीं ।
हजारों क्रिस्म की पौदें जमालीं ॥
खिजाँ हरसूए गुलशन से फना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

गरीबी वर जहन्नमं जारही है ।
अमीरी पुर तरन्नुम आरही है ॥
तरककी मुल्क को अपना रही है ।
फजा जोवन चमन पर लारही है ॥
यह लासानी उरूजो ओजना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

बहुत इल्मो हुनर के स्कूल हैं अब ।
शकाखाने बहुत माश्कूल हैं अब ॥
हजारों फलसकी मशगूल हैं अब ।
न मंजर माजी ओ मजहूल हैं अब ॥
अमी वाक्की बहुत आलोचना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

बहुत सीमेन्ट उपजाते हैं अब हम ।
बहुत अस्पात ढलवाते हैं अब हम ॥
लखों, टन कोयला पाते हैं अब हम ।
हर एक जा, रेल्वे लाते हैं अब हम ॥
जहाजों का जख्राडर चौगुना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

अब आजादी अमन के साँस लेगी ।
जमीं भारत की फूलेगी फलेगी ॥
यह थोड़ा खाद लेकर माल देगी ।
तुम्हें जौहर जवाहरलाल देगी ॥
खुश आबो वाद में तम्भूजना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

जो विजली भाखरा, चंचल से लेंगे ।
तो चमका सिम्त चारों चाँद देंगे ॥
जो बर्की कारखाने अब खुलेंगे ।
वह रंगली के इशारों पर चलेंगे ॥
हमें मंजिल से, ऊपर पहुँचना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

हफ्त अकलीमों से अपनी दोस्ती है ।
निकाकत बदगुमाँ क्यों ? कोसती है ॥
नशेमन पर मेरे क्या ? सोचती है ।
क्यों ? अपने वालो पर खुद नोचती है ॥
तेरी बेसूद साजो खोजना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

हम इतने ओज कुतवी पर चढ़ेंगे ।
के हद्दे जोक से आगे बढ़ेंगे ॥
जियेंगे और हँस हँस कर मरेंगे ।
तरककी मुल्को दौलत की करेंगे ॥
फलक पर अपना परचम रोपना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

जो सत्ता थी कभी केन्द्रित हमारी ।
हमारे पास है वह आज सारी ॥
हर एक हस्ती के सर पर ताजदारी ।
विकेन्द्री करण ने करदी है भारी ॥
हमें वायित्व अपना सोचना है ।
सुनहरी पंचवर्षी ०

रहें भारत के पहरेदार शादाँ ।
हमारे देश के राम खवार शादाँ ॥
“कमर,, राजेन्द्र से मुख्तार शादाँ ।
जवाहर शम्स से अनवार शादाँ ॥
सितारे हिन्द के जिनपर हैं नाजाँ ।
उन्हें वख्तो वहक उभ्रे दराजाँ ॥
सुधाकर से यही कहते बना है ।
सुनहरी पंचवर्षी योजना है ॥

पं० गिरधरदास वोहरा 'सुधाकर,, (कमर)
प्रो० भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक (राजस्थान) की ओर से-
सार्व जनिक सम्पर्क कार्यालय टोंक को समर्पण



बीहारी पंचदशिय योजना के उपलक्ष्य दे सुक देहाली बाए

का स्वागत गान

ए-माँ प्यारो प्यारो स्थाने लागि ए राजस्थान । साँची साँची लजे मान ।
मारदे देसाँ में भारत माँ को छे, ऊँचो म्यान । नीकाँ नीकाँ कीजे ध्यान ।
गंगा जमना और हुवालयो समदर छे, म्हाँको मान । मारी दुनियाँ में परधान ॥ ए माँ०
पंचवर्षी योजना में घणा लाभ पाया म्हाँने ।
धरकी उन्नति करवाने भली बात उपजी बाने ।
छाने छाने बान्ह गरीबी हानी ए अंतर्धान । सगलाई बगमी धन बान ॥ ए माँ०
बौध बणाया चंगवा, नहराँ निकाली आछी ।
मोल्तोई पाणी अपणा गेताँ में नगने आसी ।
धरती माले अब पैदा होजानी ए दूयो धान । गऊँ चगा गोशुँ मन मान ॥ ए माँ०
धरती छे म्हाँकी भे छौँ, धरती का बाबाबाला ।
बाकी मगना छे म्हाँकी महनत ने गवावा बाला ।
छौँ अनदाता ! अब जगन ने देस्यौँ ए वे परमान । ज्ञाओ चाहे मकल जहान ॥ ए माँ०
नया नया योजनाँ हूँ तेरी को काम लेस्यौँ !
कुली और हल ने पाछे अंजन के बाँध देस्यौँ ।
पढ़न्यौँ की कठनायौँ सब होजानी ए अब आसान । ज्यौँ हूँ छौँ अब तक हैरान ॥ ए माँ०
पढ़वा लखवा वे खुलगी आपणे भी पाठसाला ।
लखणा में पढ़या छोरा छोरी सब गाँव हाला ।
बिद्या ही पढ़वा हूँ तो पण आसी ए म्हाँने ज्ञान । दाँडा बगजानी इतसान ॥ ए माँ०
ओपध खाना में देस्यौँ बैख्या छे वैद जोसी ।
हारी बेमारी में भी अब कोई दुख ना होसी ।
सब रोगाँ की जाँच जुगत हूँ करसी ए वे गुणवान । तेसी सारो दरद पछान ॥ ए माँ०
सड़काँ भी बणागी म्हाँके और टेलीफोन आग्या ।
चिट्ठ्याँ पत्र्यौँ देवा ने डाक घर का डब्बा लाग्या ।
बीजन्याँ भी आसी तो चमकासी ए खेत खलान । मेला घाँटा और मकान ॥ ए माँ०

करजा लेवा देवा ने सहकारः बंक वणग्या ।
 जोँ सूँ उछले छे लोभी सेठजी के मन में तणग्या ।
 चूँट चूँट कर व्याज बोहरा खावे छा वैईमान । छूटी बाबूँ भी अब जान ॥ ए माँ०
 कोरट में अब नहीं जास्यां पंचासूँ न्याव करास्यां ।
 भगड़ा सब दूर हटास्यां आपस में मेल बढ़ास्यां ।
 भूँटा दावा करवा फिर कुण जासी ए वण नादान । कुण खोसी अपणो ईमान ॥ ए माँ०
 पसुवां रा मेला चोखा पलसा रे वारं भरसी ।
 दांडा दोरां री आछी विकरी बोपारी करसी ।
 नाटक सीनेमा में लोग उछरसी ए सुण एलान । अलगोजां पर उड़सी तान ॥ ए माँ०
 भाँके छे म्हांका कानी टरकी ईरान हाल ।
 गौरा छे मन का काला जग्मन जापान वाला ।
 इतरावे छे चीन घणो ललचावे ए पाकस्तान । ईसाई और तुरक पठान ॥ ए माँ०
 सेवक छां म्हे जनताग जनता छे राज म्हांको ।
 शासन को काज म्हांको भारत को ताज म्हांको ।
 बैरी सामे आया तो जुध करस्यां ए म्हे घमसान । खोस्याँ बाँको नाँव निदान ॥ ए माँ०
 सारी वाता सूँ म्हांको पूरो अधिकार छे अब ।
 म्हे छां पहरायत घरका म्हांकी सरकार छे अब ।
 जात पांत और छुवाछूत करदीनी ए म्हे बलदान । साराई छाँ एक समान ॥ ए माँ०
 भारत में जो भी रहसी भारती कुहासी सारा ।
 घुस कर वैध्याछे घर में थोड़ा सा ओगणगाग ।
 पण ई घरवे तन मन धन सब करस्यां ए म्हे खुरवान । गद्दाराँ का लेस्याँ प्रान ॥ ए माँ०
 ऊँचा उठवाने चोखा नेताँ री ओट रहस्याँ ।
 अपणी सरकार ही ने, अबके भी बोट देस्याँ ।
 धीरे धीरे धरमराज को करस्याँ ए म्हे उत्थान । देवराज का लोक समान ॥ ए माँ०
 गीत "सुधाकर,, माँड्यो जींको करस्याँ ए मंगल गान । और बधाई देस्याँ दान ॥
 ए माँ प्यारो प्यारो म्हांने लागे ए०

रचियता

गिरधरलाल बोहरा कवि 'सुधाकर', (कम्मर)

टोंक (राजस्थान)

[भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक]

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

ठुमरी गान



* रचयिता तथा संग्रहकर्ता
श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

आय्यो २ सांवरा, मन मोहन सुज हैं ।
साजन ठुमरी आठ में, धन धन बरसत नैन ॥

[तरज] ठुमरी ! राग भैरवी ।

पेरी सखी री मेरो जोवनचा बांटयो जाये । पेरी०
पेना री चेदरदी बतवारी, हमरे दिगहू न आये ॥ पेरी०
पिया नहीं आये, जिया धवराये ।

मेरोरीसाजन बरनसौनन, 'सुधाकर, लियो विरमाये ॥ ग०



[तरज] ठुमरी, राग पील्, तिताला मात्रा १६
में तो पिया के पास कैंमे जाऊं । हां में तो०
सखीरी थाली तोरे-बिन मोहि-को-
गक्यरी पलछिन निह्या न आवे, मोहे विहाल जावे ॥ में
रैन अँ बेरी कारी चिजली चमक रही,
बटा बूस रही, बुँदियां परन लागी ।
भीजीजाऊं भीजीजाऊं नाजाऊं नाजाऊं ॥ में तो०

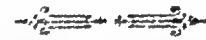
[तरज] ठुमरी, राग, मालकांश तिताला मात्रा १६ ।
जाय्यो २ मोसे करो ना लराई रे । जाय्यो०
कन्हाई छाँडो लरकाई गद्धो ना मोरी कलाई-
देखी चतुराई, करो ना लराई रे ॥ जाय्यो २ मा०
में ब्रज वनिता नवल "सुधाकर, ।
नीर भरन जाऊं तट जमुना पर ।
चपलछल काहे मग अटकाई, होगी ना भलाई-
करांना लराई रे ॥ जाय्यो, जाय्यो०

[तरज] ठुमरी, राग मालकोश तिताला मात्रा १६,
मोहे तुम बिन कल ना परे ।
पिया निशि दिन विरहा सतावे ॥ मोहे०
चैन न आबत, जिया धवरावत ।
हूक "सुधाकर, सठत हमरे ॥ मोहे०

[तरज] ठुमरी' ताठ, तिताला मात्रा १६ ।

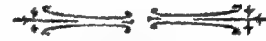
सावन बन आयो थाल ॥ सावन०

चहुँ ओर बटा द्यार्ह, सावन भिज लायो आज;
उज बिन भई विकल रैन-कासे बहूँ विरह बैन ।
कोयल की हूक सुन । पपीहा की हूक सुन ।
जियरा धवरायो आज ॥ सावन बन०



[तरज] निरवल के बलराम' सुने हम ।

प्रेमकी लीला अतंत जगत में ! प्रेम की लीला०
प्रेम हँसावत प्रेम रुनावत । प्रेम जगावत प्रेम सुलावत ।
प्रेम की द्यार्ह वसंत जगत में ॥ प्रेमकी ली०
प्रेम के नैना प्रेम के बैना । प्रेम "सुधाकर, प्रेम करेना ।
प्रेम के बश भगवंत जगत में ॥ प्रेमकी ली०



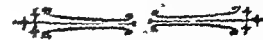
[तरज] श्याम सज्जोने नैना । (प्रेम गीत)

प्रेम का पंथ अजब है ।

प्रेम की जानि न पांती जगत में ना कोई मजहब है ।
प्रेम लगन जब लागगई तो नैनन चौट गाजव है ॥ प्रेम०
प्रेमी जन तनमन अरु धन को अपनावत ही कब है ।
चानक चाहत स्वांति 'सुधाकर, और से क्या मतलब ॥
प्रेम का पंथ०

[तरज] नाटक- ठुमरी'

सजनी द्यार्ह बहार री ।
अमन चमन जोवन फवन, सयन लतन डार डार ।
कालिन २ मुमन २ अलिंगन रहे हो निसार ॥ द्यार्ह०
आओरी आय्यो रंगीली रसीली प्यारी सजीली सुनार ।
गाओ वजाओ रिमाओ छवीली, जाओ सभी बलिहार ।
देख सखीरी गुल गँदा को चम्पा नरगिस करती प्यार ।
जुही चमेली सुधर मोतया जाय 'सुधाकर, पर बलिहार,
द्यार्ह बहार री ॥ सजनी द्यार्ह०



[ज] राग मालकोश ताल तिताला मात्रा १६।

पिया बिन कलं अब फैंसी । मैंतो पिया०
त घर नहीं कंथ, नित निरखूं पंथ ठग जैसी ॥
जिया घवरावत चैन न आवत ।
विरहा सतावत कलु नहीं भावत ।
अकुलावत प्राण "सुधाकर,-
भयोरी परदेसी ॥ मैंतो पिया०

[तरज] ठुमरी, राग भैरवी तिताला मात्रा १६

वाट चलत नई चुनर रँग डारी रे । वाट०
ऐसोरीवेददी बनवारी, ऐसोरी निडर डरतना काहूसेलँगर
अपनी जोरा जोरी करत-
वासे मैं हारी वासे मैं हारी वासे मैं हारी रे ॥ वाट०
डगर चलत मोहे रोको ना कन्हाई-
लँगराई चुनराई मोसे ना करो श्याम, बिनती करत-
मैं तोसू पचहारी मैं तोसू पचहारी रे ॥ वाट चलत०

[तरज] ठुमरी, राग भैरवी तिताला मात्रा १६।

नामारो भर पिचकारी जाऊं नूमपर वारी ॥ ना मारो०
मैंनेअजहूँ रँगई, देखेगी ननदिया बैरन देगी गारी ॥ जा
बीच डगर मोरी लाज बिगारी सारी ।
चरचा करेगी देदे तारी मानो ब्रज नारी ।
'कँवर श्याम, ब्रज नाम धरेगी -
चर्चा करेगी यों कहेंगी याकी यासू वारी ॥ ना ०

[तरज] ठुमरी, फारत कर पकरत नागर नट ।

ऐसो कियोरी कपट मोसे नागर नट । ऐसो०
ठाड़ो जमुना के तट, करे सुरली की रट-
वंसी वट के निकट घट लियो री हवट ॥ ऐसो०
गट गट गट पियो मही एन डट डट ।
कहत रही मैं तो हट हट हट हट ।
धुनर "सुधाकर,, गई री सारी फट ॥ ऐसो०

[तरज] ठुमरी, राग जोनपुरी तिताला मात्रा १६ ।

काहे कँवर कान मोसे करत रार । काहे०
नित भगर २ जावे सोतन के घर-
ऐसो ठीट लँगर यशोदा कुमार ॥ काहे०
खिल रही कलियां योवन रसकी ।
पनियां भरत मोरी कंचुकी मसकी ।
मैं तो हूँ "सुधाकर,, सी नवल नार ॥ काहे०

[तरज] ठुमरी, राग जोनपुरी ताल तिताला मात्रा १६ ।

कव मिलि है सजन मोरे प्रेम सदन ॥ कव०
मेरो तन मन धन है जिन के अर्पन ।
तिन के चरण के विमल दर्शन ॥ कव०
वरसत नैना पल पल छिन छिन ।
तुम बिन श्याम "सुधाकर,, निशि दिन ।
जरत जिया मैं है लगन की अगन ॥ कव०

[तरज] ध्रुवपद, राग मालकोश तिताला मात्रा १६ ।

प्रभु आज लाज रखले । शिरताज बिनयसुन मोरी ॥ प्र०
घरत भरम है नाथ मरम को ।
सुखद "सुधाकर,, राज ढक ले ॥ प्रसु०

[तरज] ठुमरी, राग, भूपाली एक ताला मात्रा १२ ।

तू है करुणा निधान । सत चित प्रभु प्रसुद खान ।
जगमग ल्योती महान । कमलापती श्रुति विधान ॥ तू है
तूरहीम तू करीम तू हकीम शाह जहान ।
तू अलीम तू नईम तू अजीम महर वान ॥ तू है०

[तरज] ठुमरी भूपाली ताल एकताल मात्रा १२ ।

तू ही है ॐ कार । अर्थ धर्म कर्म तू ही ॥ तू ही है ॐ
दाता बल बुद्धि तू ही । धाता जन सिद्धि तू ही ।
जाता सुख वृद्धि तू ही, तू ही है निरंकार ॥ तू ही है ॐ



भूर्त्नी मांहन आपकी वाजत है गम्भीर ।

भङ्गन को सुखदेन है, कालंद्री के तीर

[तरल] क्या ! चैन से रहेंगे हमको मताने वाले ।
हम को भुला के मांहन, सोनन के हो चुके हैं ।
दीपक सदन में धी के बैरन के जा चुके हैं ॥ हम०
अब रंग राग निशिदिन देखेगी वंस चेरी ।
ब्रज जन तो याद नेरी कर र के रो चुके हैं ॥ हम०
मुख पाइयो तू कुन्दा टन दुख विनाशियों से ।
हम मुक्त को आंमुखों से मल र के हो चुके हैं ॥ हम०
लोकोंगे प्राण भी अब उनके वियोग में हम ।
बल धीर शक्ति साहस यह सब तो लो चुके हैं ॥ हम०
दासी से लो लग्न कर भूले हमें "सुधाकर," ।
मथरा नगर बसा कर गोकुल हुआ चुके हैं ॥ हम०

एक दासी के लिये ब्रज छोड़ कर मथरा ।
घन्य है लीला तुम्हारी घन्य तुमरे काम को ।
छल कपट नट खट तुम्हारे जो रूप ये अब
यह 'सुधाकर, होगये विख्यात सारे प्राम को ॥

[तरज] दिन की आहें न मई रान के नाले न लये ।

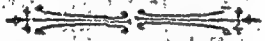
[तरल] जाने जाँ चोट बराबर की बुरी होती है ।
वंसी अवरन पे अघर घर के बजाई तुमने ।
सारी ब्रज बाल को नंदलाल लुभाई तुमने ॥ वंसी०
तुमने बहु साज सजे गोपियों के काज प्रिये ।
प्रेम से रास रचा श्याम कन्दाई तुमने ॥ वंसी०
कुद यमुना में गये पुष्प कमल लाने को ।
नाग काली की कठिन पीर मिटाई तुमने ॥ वंसी०
पूतना कंस ने भेजी थी धमय पाने को ।
काम कुद कर न सकी मार गिराई तुमने ॥ वंसी०
धार गिरवर को स्वयं नाम बराया "गिरवर," ।
ड-ड के कोप से हरि ब्रज को बचाई तुमने ॥ वंसी०

ऊधो तुम जाओ ब्रज श्याम के समझने को ।
कैसे बिन दीद शमा, चैन हो परवाने को ॥ ऊधो०
क्यों सितम हमपे किया कौनसी तकसीर है वह ।
जिसपे कर तर्क दिया दर्स भी दिखलाने को ॥ ऊधो०
पहिले क्यों प्रेम लताओं में फसाया हमको ।
आज पानी जो लिखी जोग के समझने को ॥ ऊधो०
ब्रज वहां आप रहें आप की प्यारी कुवजा ।
हमको छोड़ेंगे नहीं पर कभी बरसाने को ॥ ऊधो०
है, यही वीनवी गोविन्द सुरारी गिरधर ।
दिल है त्रेचैन 'सुधाकर, की शरण पाने को ॥ ऊधो०

[तरज] जिदगी जैसी हमारी है हमी जानते हैं ।
जब तुम्हें लोट के दर्शन ही दिखाना था नहीं ।
प्रेम का बीज मेरे दिल में उगाना था नहीं ॥ जब०
योग कुवजा के सिधे जोग की शिक्षा हमको ।
ज्ञान तुम ऐसे सिल्लाओगे यह जाना था नहीं ॥ जब०
एक दासी ही की कुद लुच्छ सी सेवाओं पर ।
सत्य पूछो वो तुम्हें श्याम रिक्तना था नहीं ॥ जब०
छोड़ ब्रज बाम को मथरा ही जो जाना था तुम्हें ।
श्याम फिर गोपियों से प्रेम बढ़ाना था नहीं ॥ जब०
छीन बर जोरी से माखन तुम्हें खाना था नहीं ।
बजाना वांसुरी और रास रचाना था नहीं ॥ जब०
चलहना ऊधो मेरा यह उन्हें समझा देना ।
प्रीत क्यों हम से लगाई जो निमाना था नहीं ॥ जब०
और सुनलो मेरी एक बात "सुधाकर," चित से ।
पंसी पाती यहाँ लेकर तुम्हें आना था नहीं ॥ जब०

[तरल] प्रेमियों के दोन्धे जानिव से हशारे हो चुके ।
ननहरन सुखधाम मधु सदन मदन बनश्याम को ।
कोई पूछे तो सही क्यों तजगये ब्रज बाम को ॥ मन०
दासियों को तो सदा हित से तुम्हारा ध्यान है ।
कय भुला सकती हैं हम चित चोर लीला धाम को ॥ म०
भूलजाओ गोपियों को और रावे को भी तुम ।
हममी फिर जपती रहेंगी कृष्ण कुवजा नाम को ॥ म०

आजा २ मेरे बंसी के बजाने वाले ।
 कहती हो कि गोकुल में ही आना था नहीं ।
 कुमुदि का कुङ्कुम भार हटाना था नहीं ॥ तुम
 नहीं त्याग के ब्रज मथरा में जाना था मुझ ।
 मात पिता को क्या छुड़ाना था नहीं ॥ तुम
 यदि भूले कोई प्रेम में अन्धा होकर ।
 दीर उसे कैसे दिखाना था नहीं ॥ तुम
 गनना दूब दही चोरना तुमने जो कहा ।
 गक तालियाँ फिर हम को नचाना था नहीं ॥ तुम
 वांसुरी हमने बजा रास रचाया जो वहाँ ।
 तो इजारे में किरी के बह ठिकाना था नहीं ॥ तुम
 ईर्ष्या रखती हो कुवजा से तुम पे गोपियो क्या ?
 मान लावण्य का तुम को भी बढ़ाना था नहीं ॥ तुम
 जाओ ऊँचे उन्हें फिर ध्यान से समझाओ जरा ।
 चलहना भूट 'सुधाकर,' को पठाना नहीं ॥ तुम



[चित्र] मुज अदलोवेजार को हसरगो को मि. दिया ।
 वांसुरी, बजादे प्रयाम माधुरी लतान में ।
 अकट प्रकट निकट हो कान्ह आन कुञ्जस्थान में ॥ वां
 वाधरो, की अम कोई विधा, तिहारे तो सही ।
 विन अतल जो जल रही है प्रेम की चिन नमें ॥ वांन.
 क्यों वहे ! न, नैन नीर जब वियोग की हो पोर ।
 दरस विन हुई अधीर मीन के समान— में ॥ वांसरो
 हा, न, दृष्टी लेखनी वियोग जिन लिखा हमें ।
 संत जन क्या ? सोगये थे, जा सभी मसान में ॥ वां
 रंग राग आप के दासी कुटिल के संग हों ।
 और मल भवति अंग खूब ध्यान ध्यान में ॥ वांसरो
 टेंर, यह विपन भरी तू जाके कहियो सहचरी ।
 देर ना पायन की है प्रेमिका के प्रान — में ॥ वांसरो
 राधिका के प्रेम चंद्र कृष्ण, 'सुधाकर,' गुकंद ।
 वीनती आनंद कंद लाओ नेर ध्यान में ॥ वांसरो

[तरज] क्यामय आपके गुण गाने वाले और होते हैं ।
 वसी है दिल में सुन्दर मूरतो माधव सुहारी को ।
 अतोखी सांवरी भांकी है वांकी ब्रज विहारी को ॥ व
 विराजत संग मनहारी है श्री अणभानु सुहारी ।
 मधुर सुसक्यान सुखकारी है रावे प्राण प्यारी की ॥ व.
 न वर्णन होसके महिमा तो दूँ किससे भला उपता ।
 निराके दंग की सुखपां है पीतम छवि तिहारी की ॥ व.

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं ।

गजव की वांसुरी मोहन हरन करने को तन मन धन ।
 सधन कुञ्ज में निशिदिन देरती है दुःख हारी की ॥ व.
 लगी जिस को लगन सची मिटाये से मिटेगी ना ।
 न भूलेगा 'सुधाकर,' भी दया आनंद कारी की ॥ वसी

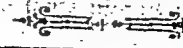


[तरज] एक फिल्मी गायन ।
 पनघट पे कन्हैया आताहै । आनाहै धूम मचाता है ॥ प.
 वह मानन मिसरो खाटाहै, जमना पर रास रचाताहै ।
 सखियों को खूब खिजाता है ॥ पनघट
 एन २ में गाये चराताहै । अथरन धर वैन बजाताहै ।
 मनमोहन तान सुनाता है ॥ पनघट
 कर पर गिरराज उठाताहै, और इन्द्र का कोप मिटाताहै ।
 गुवाला के प्राण बचाता है ॥ पनघट
 ऐसा मोहन मदमाताहै । ब्रज राज 'सुधाकर,' भाताहै ।
 जो गीता ज्ञान सिखाता है ॥ पनघट



[तरज] जुश गुल से रहे बुल २ भला फिर कैसे राहतही
 मिलेगा कब कहां दर्शन वत्त राधेरमन तेरा ।
 किसी ने कुङ्कुम नहीं पाया पता काली दमन तेरा ॥ मिले.
 जहां अह्लाद अरु ध्रुव खं अनेकों गुल सुशोभित थे ।
 नजर आताहै वह खाली अरे माली चमन तेरा ॥ मि.
 खयर लेनाथा दीनो की कमी अथतार लेले कर ।
 अय होता क्यों नहीं संसार में आत्रा गमन तेरा ॥ मि
 भरा है नार निरमल नैन दो में गंग जमन सम ।
 खड़ा है चर्ण धोने को दयालय दास जन तेरा ॥ मिले
 मदन माधो सुकुट धर कृष्ण दासोदर मोहन मनहर ।
 योही होता रहे गिरधर 'सुधाकर,' चितमन तेरा ॥ मिले

[तरज] उपरोक्तानुसार !
 जुदा क्यों कर भला हो ब्रह्म से जब उस की माया है ।
 अगर है धूप सूरज में तो उस के संग छाया है ॥ जु
 अलहदा किस तरह हो वह लुपी हो दिल में जो ऐसे ।
 कि जैसे लहर जल में और लहर में जल समाया है ॥ जु
 जहाँ है चांद तो फिर चांदनी भी साथ ही होगी ।
 भला विन चांदनी आकाश पर कब चांद न था है ॥ जु
 सुधाकर में सुधा है तो सुधा में भी सुधाकर है ।
 सदा से ही 'सुधाकर,' भी सुधा को संग लाया है ॥ जु



❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ गङ्गल कुञ्ज ❀



* रचयिता *

श्री गिरधरदास वोहरा कवि
दोंक (राजस्थान)

[न.] अगर कुञ्ज मरतना चाहें तो कर खिदमत फ़क़ोरोंकी,
नेरे, शंभो बहुत बाहिर रहे अथ घरमें आजाओ।
हृदय मन्दिर में राजो और नैतन में नमाजाओ ॥
त्रिनोचन ताप मोचन आपहें विन्यात जग भगवन्।
तो फिर अथ भूत भावन भीर रुक्तन की मिटाजाओ ॥
नेरे अभिमान मद मोदादि अथ नाना विकारों को।
जनाकर योग अग्नि: में चिभूली तन रमा जाओ ॥ मे.
कभी विजेश अने ज्ञान का दुग्ध बजाकर के।
तुन्हीं इस नाट्य शाला विश्व का अभिनय रचाजाओ ॥
बड़ी बच है निवेदन नत्र निर्वल, दीन प्राणों का।
सुधाशिव नाम रत्नता पर 'सुधाकर', के वमाजाओ ॥ मे.

—❀—

[न.] किणक जलानें हमने साक्षात्, लहू रियाहे शब्द करके,
हैं धन्य जीवन उन्हीं के जगमें—
जो यर्म वृत पर अड़े हुए हैं।
मिटा वग्म वह मिटे स्वयं भी -
जो होके निर्वल पड़े हुए हैं ॥ हैं धन्यः
सदैव स्वर्णाक्षरों में चमके—
हैं, विश्व नंदन में नाम उनके।
स्वदेश सेवाको शुभ कर्मों पर—
जो तीर बनकर चढ़े हुए हैं ॥ हैं धन्यः
मिलैया मिट्टी में जिनने नन धन -
सदैव अपना पराये कारन।
उन्हीं के बल पर यह विश्व के सब—
मुकाम कायम लड़े हुए हैं ॥ हैं धन्यः
करी जो निश्काम शुद्ध भक्ति -
मिली उन्हीं को अमूल्य शक्ति।
स्वरूप देवों में आसमाँ पर—
सितारे बनकर जड़े हुए हैं ॥ हैं धन्यः
मुख्य उन्हीं को मिला है उत्तम—
शरण "सुधाकर", में जो गये जम।
प्रभा के चर्णों में जिनके हरदम—
यह नैन दोनो लड़े हुए हैं ॥ हैं धन्यः

[तरज] मैं लैला ही लैला पुकारा कहूँ

मेरे घंश्याम, गुण धाम, प्यारे हरि:
हो कृपा भक्ति तब चिर में धारा कहूँ।
वेद विख्यात व्रत सब धारी नेरी,
सारी लीला रंगन से निहार कहूँ ॥ मेरे०
सर्व सुख छंद रस रंग धन धाँडे के,
रंग समता के भगवन् गुजारा कहूँ।
होके निर्वन्द जग फंद को त्याग कर,
दुष्ट लृणा को मन से निकारा कहूँ ॥ मेरे०
जय हो गोविंद माधव कमल नाम की,
श्रीम मित्येकरं ब्रह्म प्रभु आपकी।
खुद संकट निवारन तिहूँ ताप की,
प्यारी मांको मैं तन में सवारा कहूँ ॥ मेरे०
मैं हूँ शार्णागत देव यद्वात्मिक,
सर्व लोक: प्रतिष्ठं, अजं व्यापकम्।
पुरुष अव्यक्त वरदं वरिष्ठं विभु,
शान्ती मुख सदन मैं सुधारा कहूँ ॥ मेरे०
बन यही कामना है करो पालना,
नश्व संकट विपत दुःख अथ टालना।
ई न पर यह दया की नजर डालना,
जो सुधाकर "सुधाकर", उचारा कहूँ ॥ मेरे०

[तरज] चैन लेने नहीं देते यह सताने वाले।
भक्ति में नेरे कोई लीन प्रभा होता है।
धर्म धारा में अशुभ कर्म का मल धोता है ॥ भक्ति०
जिसने दुनियाँ में कभी नाम न हरि का लोना।
जाके यमराज के द्वारे पे लड़ा रोता है ॥ भक्ति०
जन्म जग बीच लिया देह मनुज की पाई।
ऐसे बहुमूल्य समय को क्यों वृथा खोना है ॥ भक्ति०
स्वार्थ वश पाप किये हमने अनेकों लेकिन,
फिर भी अफसोस नतीजे में सिफ़र होना है ॥ भक्ति०
चोंक कर जाग रे मन ! ध्यान लगा ईश्वर से।
मोह निद्रा में तू आराम से क्या सोता है ॥ भक्ति०
गंसे विपयों में फसे, अथ "सुधाकर" जग में।
जिन से दिख एक निमिष को न जुदा होता है ॥ भक्ति०

‘ही की कुड़नी चानी कि अब त हृदोर किरती है,

आत्मा मेरी तुम्हीं परमात्मा मेरे ।

सर्वे श्रुति: में प्रकट जीवात्मा मेरे ॥ तुम्हीं०

भवसिन्धु तरन अध उधारन जग उचारनहो ।

भार हारन दो तुम्हीं जीवात्मा मेरे ॥ तुम्हीं०

गत भक्त दुख हारी हो करुणा सिन्धु सुख कारी ।

कृष्ण बनवारी हो तुम परमात्मा मेरे ॥ तुम्हीं०

हैं शर्णा में मगवन किया छपन है तन मन धन ।

असाध आनंद धन करो परमात्मा मेरे ॥ तुम्हीं०

कृपा कर नथ दिख भर सुधाकर, विश्व सुख सागर ।

चरण रज में रहै चाकर तेरे परमात्मा मेरे ॥ तुम्हीं०



[न ज] तेरे कूचे में अरमानों की दुनियाँ लेके आयाहूँ ।

जनाये प्यारे मगवन, भक्तों का उदार कब होगा ।

निहारेंगे दर्शन वह दिन मेरे सरकार कब होगा ॥ वता०

सुकुट नाथे धरधर मुरली कमलिया कंधे कर लकुटी ।

मनोहर माधुती उस मांकी का दीदार कब होगा ॥ वता०

गयेथे नुन विदुर वर प्रेम के बश शाक त्वाने को ।

सुदामा सम नुद्रा चाँवन मेरा लिखकर कब होगा ॥ व-

शिठ, ऊँ तुमको आँखों में पिलाऊँ दूध निज करते ।

त्रिपट जाऊँ चणों में मुझको यह अधिकार कब होगा ॥ व-

लुथा हर है अनार्थों की तरह क्यों ? नाथ के होते ।

सुदर्श चक्र से दरिद्र के शिर पर चार कब होग ॥ व



[तरज] उपरोक्तानुसार ।

किसी के दिलमें थार अरु किसी के नैन में आये ।

प्रभो तुम चैन बनकर इस दिले वैचैन में आये ॥ किसी०

हृदयजिन के लगे हों प्रेम शर मन्थर को चिबवन के ।

उसे फिर चैन कब सुख नैन दिन अरु रैन में आये ॥ कि-

सुकुट साजे अधर मुरली लकुट करनै निःशहं में ।

दयामय रूप में भी दृश्य वह नित रयनमें आये ॥ कि०

तेरे जीवन के प्राणधार वस प्यारे तुम्हीं तुम हो ।

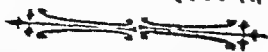
रक्षा बन तुम्हीं तो प्रेमा जनके नैन में आये ॥ कि०

किसी प्रमावा क भवितव्य नभ पर चंद्रमा बनकर ।

सुनने का डगर सुखकर अँदोरी रैन में आये ॥ कि०

प्रभाकर दूर हों सब दुँड अरु आनंद रहजायें ।

‘सुधाकर, जब चरन छवि चितहरन चित मनमें आये ॥ कि-



सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक है ।

[१] सब ठाट पड़ा रइजायेगा जब लाद चलेगा धनल ।

मन मोहन मोरसुकुट धारी—

मुरलीधर ब्रज मोहन प्यारें ।

रघुनंदन त्रिभुवन सुखकारी—

धर्याम वदन धनुवर धारे ॥

मन मोहन०

पितु मात सहायक बंधु सखा—

हरि नैनन के हो तुम तारे ।

वट घट व्यापक भगवान प्रभे—

तुम भूमण्डल के रखवारे ॥

मन मोहन०

तन मन धन तुमपर बलिहारी—

हम जीवन धन करते सारे ।

हम शर्णागत हैं जगदीश्वर—

भक्त वत्सल नाथ विपद हारे ॥

मन मोहन०

तुम, परं “सुधाकर,, धरणी धर—

गिरधर मनहर आनंद कारे ।

भज, रघुवर रघुपति रामेश्वर—

मन आनंद धन के गुण गा रे ॥

मन मोहन०



[तरज] उपरोक्तानुसार ।

सर्वेश तुम्हारे चरण युगल में—

मन मेरा निश्चल करदो ।

करुणेश कृपा कर जन्म मरण की—

जटिल समस्या हल करदो ॥

सर्वेश०

संसारी सुख प्रभु ना चाहिये—

दर्शन की आश श्रवण करदो ।

चंचल मन की चिन्ताओं को—

हरि दुर्बल और निश्फल करदो ॥

सर्वेश०

ममता मल हर कर गिरधर धर—

मन बुद्धि विमल निर्मल करदो ।

निज प्रेम सुधा से लालाइत—

प्रभु पूरण हृदय पटल करदो ॥

सर्वेश०

फिर तान सुनाकर वंसी की—

जसुना पर मन पुलकित करदो ।

यही कानना स्वाम “सुधाकर,, हैं—

जनकी यही आश सुफल करदो ॥

सर्वेश०



प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोक



* स्वभंगा *

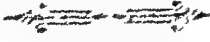
दिवस की आँखों में दिवस वन रहना-
मेला है साइव या ओई मज्जाक है।
हनुके कर्मानों को पूरा कर देना-
असहने हो तो जिन्ना बेबाक है ॥ दिवस ०

अगर हीदार करना है अइद के आन पैदा कर :
विचलित गर के अविष हो-गोमी आन पैदा कर ॥
विप्रेजा उदरको आ र-गोमी का सामान पैदा कर।
न दित में कोई इमान अर नू अरमान पैदा कर ॥
कोई अरानों का यानी का पैना ॥ खेनहै साइव या ०

कौनसी राय है दो आत्म में, जिसे पा न सके,
कौनसी जाई इमान में, जहाँ जा न सके ॥
कौनसा समझै पैना जो, दिवस में का न सके।
कौनसा जगह, सीनेदे- जो उदा न सके ॥
गर्दियों गदू को हँस हँस कर- पड़ना ॥ खेनहै ०

बादमें होश भी गर आया तो करिय द, नदी
जोर सइ ० के भी करगहै, यह वेदाद नदी ०
खाना बरबाद में आगना भी आबाद नहीं।
दिने नायाद भी कहता है, धँ नायाद नहीं ॥
सूत कुत पुल कर चरमेतर से बहना ॥ खेनहै ०

मिठायेगा जो इन्की बस, बड़ी हीदा चारैगा।
गुजर कर राइ दनभी से, ओई समकवार जायेगा ॥
अमर टागा जो मर मर कर गुजर मिलमें मिठायेगा।
बशाद तुम्हको नजर फिर वह कमर, राइवा सा आयेगा ॥
है मेरा आराध यह सूद इनका बहना ॥ खेनहै सा ०



चारवेत

चाक थीला यह भेरा मे कले बाइताद न कर-
सुकुकी पैनाव न कर।
मेरी बरबादी का अमवाव इनेकाव न कर-
यों सजायाव न कर ॥

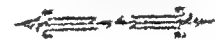
कुछनो उम्मीद दिलेजार भी घर आनेदे।
पैत में उग्र यह थोड़ीसी गुजर जानदे ॥

सुन मिवाइ कावदी नमकीन हरा पानेदे
याना राम खरर को अमान में मरजापेदे
असने नावार बहावार का सूँ आव न कर-
चाहे साइव न कर ॥ चाक थीला ०

अर्थने अइ के कुछ नाम दिये ता साका।
दिने विचलित में कहीं माल है उग्रक वाली।
निजकालि बर मुनासब नहीं बइ अकलाही।
नरने वाले से नहीं जेव अमा ता चाकी ॥
मेरा अगमानों को जालिय नू जकर मयाद न कर-
यारे पैनाव न कर ॥ चाक माल ०

एक दिन तुमने कहाथा कि निमाना होना।
परतः बेकार मइय दिवसो जकासा होना ॥
मैं न नरका था के कुछ तुम्ह उदान होना।
क्या खबर था के अबत खु- बहना होना ॥
कौन नाई की- गिरा अतिशो पैनाव न कर-
सूद इन्काव न कर ॥ चाक थीला ०

अह की करके नहर आ मेरे आने दिवस
कहर होजाये न बरबा कहीं नुदमार मुकर ॥
चैत दम भर यो नहीं पाता है जगने सुदतर
तुम्हो कुरवान है हर आन हजो जानो जिना ॥
"कमर" के सामने सउहर अइव उरु व न कर-
ओई दिवाव न कर ॥ चाक थीला यह मेरा पै ०



चारवेत

लाज रकवोंगे तुम्हीं आज आं दीनों के बनी।
दास पर आरके विपदा है बनी आन बनी ॥ नू ०

छोड़कर आम्हो संसार में उद से आया :
चैत वैचैत था दमसर नहीं मिलने पाया ॥
जाल नाया का चई और कुछ पैमा आया :
कैल गहै जिसमें दरकप वार से मेरी काया ॥
जान पदती है यह तुनियो सुके माले की अनी।
लाज रकवोंगे तुम्हीं ०

और क्रोध ने जोरों से मुझे घेर लिया ।
 और मोह ने मुझे तुमसे मेरा फेर दिया ॥
 चोरी व दगा बाजी में रहता है जिया ।
 देशों ने सदा चारों से भी दूर किया ॥
 खंड ने फेरी है मती मेरी घनी ।

रखोगे तुम्हीं०

ज और शर्म का क्या काम जहां य; सब हों ।
 स्य और शील कहां जब के करम वेदव हों ।
 नेम और धर्म भला कैसे बनें और कव हों ।
 क्यों न डूबूंगा मेरे साथी ही घाती जब हों ॥
 मैं कुसंगत में फँसा होगया पूरा व्यसनो ।
 लाज रखोगे तुम्हीं०

अब तो बस आँसरा तेरा ही लिया है मैंने ।
 साथ इन पापियों का छोड़ दिया है मैंने ॥
 हाँ ! परन तेरी ही सेवा का किया है मैंने ।
 खोजकर सार सुधा रसको पिया है मैंने ॥
 ओ. " सुधाकर, मेरी मुन लीजिये अरजी इतनी ।
 लाज रखोगे तुम्हीं०



चारवैत

जब तक के सदाकत पे वक्तों ला न सकेंगे ।
 हम उनकी मोहव्रत का पना पा न सकेंगे ॥
 नाकाम दिलेजार की हस्ती को मिटा दे ।
 अरमानों की दुनियां को कुचल ! आग लगा दे ।
 कोनेन से मा बैन के पर्दे को पछा दे ।

वर ! नफन तमन्ना से अगर आ न सकेंगे ॥
 हम उनकी मोहव्रत का०
 धरवाद अगर होते हैं हो जाँय बलासे ।
 सोते हैं अगर भाग तो सो जाँय बलासे ।
 खोते हैं अगर होश तो खो जाँय बलासे ।

दिल खोलकरे गर तीरे सितम त्वा न सकेंगे ॥
 हम उनकी मोहव्रत का०

गर इज्जो वक्रत शर्मो हया जाय तो जाये ।
 सर रंजो अलम राम की घटा छाय तो छाये ।
 चल आती है गर मौत तो वह आज ही आये ।
 सीने को अगर चीर के दिखला न सकेंगे ॥
 हम उनकी मोहव्रत का०

दीदार की ख्वाहिश है वह दीदार भी होगा ।
 जो प्यार " क्रमर " चाहिये वह प्यार भी होगा ॥
 आगियार जिसे समझे हो वह यार भी होगा ।
 फरमान पे कुर्बान अगर जा न सकेंगे ॥
 हम उनकी मोहव्रत का०



* गजल *

किसी के हुस्न पर क्यों ऐ दिले नादां मचलता है ।
 भला ऐसी भी बातों से कहीं कुछ काम चलता है ॥
 हसीनों की नुमाइश में है सौदा सर करोशी का ।
 सो इस बाजार में चलता, नहीं फिर वह सँभलता है ॥
 राखव की शोखियाँ हैं इन बुतों की चरमे जाविर में ।
 तवस्सुम क्रहर का शोरी जहर मारों उगलता है ॥
 अजब अंदाज का नक्रशा है इनकी वे हिजाबी का ।
 किसी की जान जलतो है तो इनका दिल यहलता है ॥
 जो उलभा जुल्फ पेचां में सुलफने ही नहीं पाया ।
 मुकद्दर कां चुरा कहकर, कफे अफसोस मलता है ॥
 मुच्चाले जिदगी है आशिकों का मुन्तकिल होना ।
 जो सुरज आज ढलता है वही कल फिर निकलना है ॥
 " क्रमर " जेबा नहीं तुमको ख्याले मुन्तशिर होना ।
 अबस ना आक्रोषत अंदेश क्यों हस्ती बदलता है ॥



* गजल *

एबह उगता है सुरज शाम को जिसतोर ढलता है ।
 युनी नाकाम अपनी जिदगी का दौर चलता है ॥
 मजाजे हुस्न में रोशन फना है जिसतरह देखो ।
 वक्राजिसकी नही उस शमअँ पर क्यों यार जलता है ।
 मेरी दानिय में तो वहतर है वह सारे जमाने में ।
 जो इन जालिम हसीनों की हवा से दूर टलता है ॥
 शिकार इन नाज नीनों का जो वनजाता है वदक्रिमता ।
 तो वह फिर वनके मजनू दशतेहरों में टलता है ॥
 दरीदा पेरहन में वहशियाना हाल है उसका ।
 जो ऐसे जाहिलाना शोक के साँचे में ढलता है ॥
 वह काबिल है जो ईमाँ पर रखे सावित क्रमर धरना ।
 वह काबिल है कि जो खुलुआर चिकनों पर फिसलता है ॥
 'क्रमर, तू जिसको समझा है क्रमर, जुगनु से है बदतर ।
 तो ! इनको प्यार करने से नतीजा क्या निकलता है ॥





मुजतर कदम सङ्क चो बरपा गरदद ।
मद उकदये मुश्किल बदमें वा गरदद ॥
मतलूव शवद तालियो तालिय मतलूवा
मजनु सिफत हस्तिये लैला गरदद ॥

[तरज] चर बेत ।

दिल लगी मे दिल मेरा, ए जानेमन जनजायगा ।
दिल की बेताबी मे यह नारा चमन जनजायगा ॥
आह तेरे टस्कने मरनाना मुझको करदिया ।
मिस्त गमया नूने ही परवाना मुझको करदिया ।
'नेरे तन्त्रु ने ही दीवाना मुझको करदिया ।
एक भी नो करना नहीं यो के दहन जलजायगा ॥
दिलकी बेताबी)

रहने दे माह लका ज्यो का त्यो अपना नकाव ।
बरना गरव दायेगा एक नया टनकलाव ।
लाखों को नपुमायगा गुञ्जा दहन यह डिजाव ।
पर तेरे दीवार मे रंजो मोहन जलजायगा ॥
दिल की बेताबी ०

मुनयो रे जाने जहां कुद मेरी करियाद को ।
कर न खतम वे गुनाह आशिके नाशाद को ।
मत मुके बिस्मिल बना छोड़दे वेदाद को ।
बरना सितम नाज यह चर्खे कोहन जलजायगा ॥
दिल की बेताबी ०

चाहता हूँ जी मेरा चूमनू तेरे कदम ।
और लिपट जाऊँ मैं सीने से तेरी कणम ।
जान "सुधाकर," तुमके पूजा कहूँ रे सनम ।
पर मेरे इस काम से विरहमन जलजायगा ॥
दिल की बेताबी ०

[तरज] आदिना वर्गमूल व फिशां व मज

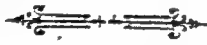
फिरना है चरमे नाज अदा मे किली के साथी ।
सीने में दिल तड़पता है किम वे बमी के साथ ॥
तुम जान को लेकर क्या मेरी जान करोगे ।
ए जान लेगो जान जाँ चाहो हँसी के साथ ॥
परवाह न करो हालपे किममन है सिकन्दर ।
दिन चाहे गुजरने हैं मेरे वे कमी के साथ ॥
क्या तौर उनरने हैं जिन्म सोज में शीरी ।
है नर की वारिश नजरे नरगिरी के साथ ॥
जलता ही रहेगा सदा परवाना शमयां पर ।
या चैन भी पायेगा कमी सुखलिमी के साथ ॥
है तुम्हें जिन्दी का हमी में तो "सुधाकर," ।
रहती है बेकरार तबीयत खुशी के साथ ॥

[तरज] कह रहा है आसमां सारा समां कुद भी नहीं ।

कुद अच्छी है नहीं सरकार रहने दीजिये ।
किसको दिखलाने हो कुद आर रहने दीजिये ॥
पूछते हो हाले विसमिल किसलिये मोहसिन मेरे ।
अपनी उलफत का मुझे बीमार रहने दीजिये ॥
उनपे करना महरवानी उनपे ही नजरे करम ।
मेरे दिल में तो नवकना खार रहने दीजिये ॥
गम अलम रंजो मोहन गर्दिश सितम महमां मेरे ।
जिसकदर दुनियां के हैं आजार रहने दीजिये ॥
एक की चौसर में बाजी खो के गर रुठे हैं आप ।
तो जीन तुम लेलो हमारी हार रहने दीजिये ॥
अब नखे रोशन से परदा दूर कर छोड़ो हया ।
बल्ल का थादा करां इनकार रहने दीजिये ॥
मत निगाहे नाज से टुकड़े "सुधाकर," तुम करो ।
मैं तो खुद मरने को हूँ तैयार रहने दीजिये ॥

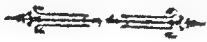
[तरल] एक फिल्मी गीत-

ओ, दिलवर प्यारे ने ।
 डिक्रिये किसजोरसे, डग दिलके दिलवर प्यारे ने ॥
 नैना थे या खल्लर । लो कारी हुए जिगर पर ।
 अररर रर बस बाचल करदिया -
 जालिम नीर करारे ने ॥ ओ-
 श्लफत में हम रोते हैं । आंसुओं मे मुँह धोते हैं ।
 अररर रर बेचैन किया फिर-
 उनके लैन नजारे ने ॥ ओ-
 मत भूल के आँख लड़ाना । श्लफत में मत पड़जाना ।
 अररर रर फिर खून बड़ाया-
 दिल पर जखम करारे ने ॥ आ-
 रम्मीद न थी यह हमको । यों देंगे 'सुधाकर, गुम को ।
 अररर रर अंजाम मोहज्वत-
 देखलिया जग सारे ने ॥ ओ-



[तरल] ग. दर्ददिल वनादे कबतक नू कम न होगा ।

दिलमें है याद तेरी आँखों में नूर तेरा ।
 जो कुछ भी देवताहूँ, सब है जहूर तेरा ॥
 कदमाँ में सिर मुकाये दामन विद्याये दर पर ।
 रहता है लौ लगाये वन्दा हुआर तेरा ॥
 एक हूक सी जिगरमें उठ उठ के कह रही है ।
 जलवा बिमाने जाना होगा जरूर तेरा ॥
 जाने पियूष दिलवर हम शक के पीचुके हैं ।
 हरदम ही अब रहेगा कायम सुखर तेरा ॥
 मिल लूंगा मैं "सुधाकर," दिलसे लगी हुई है ।
 आली मुकाम प्यारे लोकेन है दूर तेरा ॥



[तरल] क्या खबर थी इनकिलाये आसमां हो जायगा ।

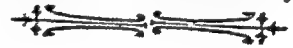
चैन कैसे हो नुस्की कदो मेरे दिल के लिये ।
 तेग रहती है ननी हरवक्तन तिसमिल के लिये ॥
 वाद मुर्दन माहरू चशमों में अशके नाज भर ।
 आया बर करने को मदकन में मेरी गिल के लिये ॥

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

कल्ल होने पर भी अरमां कुछ तो निकलेंगे जुहर ।
 ग मसीहा हो अगर कुछ जीस्त साइल के लिये ॥
 पूछताहूँ सच बतादो इशक के कानून दां ।
 क्यों नहीं रक्की सजा अबरूप क्रांतिल के लिये ॥
 रनकी फर्माइश में खोया जानो माल ईमान भी ।
 था वही मुमकिन भी मुक नादान जाहिल के लिये ॥
 ओ सुधाकर आज हो खामोश अरु गमगीन क्यों ।
 कुछ न कुछ तो चाहिये तज, ईन महकिल के लिये ॥

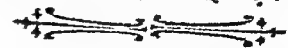
[तरल] दिलकी लगी बुफाजा ओ दूर जाने वाले ।

देखा जो गौर करके संसार वे वफा है ।
 कोई नहीं किसीका आजार है शिका है ॥
 मदहोश क्यों हुआ है दिन चार की वक्ता में ।
 ऐ दिल बतादे आगिर वहां हुक्मको क्या नफा है ॥
 वेखोक धूम होकर आजाद इस चमन में ।
 कर प्यार गुल से बुल बुल मिलकर दफा २ है ॥
 लाये तो कुछ नहीं पर लेजाने को सँग अपने ।
 जोरो सितम अलम गम रंजो मोहन जफा है ॥
 बेकार है बतन में फिर अपना आना जाना ।
 जब चाह दिल की पूरी होती नहीं रफा है ॥
 क्यों बार बार प्यारे करताहूँ जुदा हम को ।
 सच तो बता 'सुधाकर, नू मुक से क्यों खफा है ॥



[तरल] दिल में है याद तेरी आँखों नूर तेंग ।

वदनाम न होजाना ओ प्रेम के डीवाने ।
 दिल थाम जरा अपना गर वान मेरी माने ॥
 जललाओगे जाओ भी, यह आतिशी शीशे हैं ।
 जो आग में गिरते हैं, जल जाते हैं परवाने ॥
 इस राह में खतरा है जी जान से जाने का ।
 मूले न कदम रखना हम आवे हैं समझाने ॥
 है नाजो अदा शोखी वेदाद जफा इन में ।
 वस आँख के मिलन ही लगते हैं सितम वाने ॥
 कुछ टंग नहीं अच्छे कहना है "सुधाकर," यह ।
 पढते हैं जने क्या क्या इस राह गुम खाने ॥



प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक



❀ नगमा ❀

दोचुका दोरे खिजाँ अब दे कियोँ छाने को ।
न याद कीजिये गुजरे हुए जमाने को ॥

बुद कियोँ ही से पहाड़ों को मसल दूंगा अब ।
बाल मूज की टगारों ने बदल दूंगा अब ॥
कौंपही माँगेगा उसको भी महल दूंगा अब ।
कारेकुदरत में भी एकवार देखल दूंगा अब ॥

कौन दुनियाँ में मुझाखिल है मेरे छाने को ॥ न याद०

मिसाल ही नहीं जिसकी वह ला मिसाल हूँ मैं ।
जवाक ही नहीं जिसको वह ना निदान हूँ मैं ॥
न जिसको डर है क्यामत का वह इकबाल हूँ मैं ।
अजब कमाल सिकुन हम जहाँ का लाल हूँ मैं ॥

अबल से वादे सबा आई है जनलाने को ॥ न याद०

फिर नये हंग ने दुनियाँ को बसाना है मुझे ।
फिर नया रंग जमाने पे जमाना है मुझे ॥
फिर नया जंग खिलाकत से मवाना है मुझे ।
आग पानी में लगा कर के दिखाना है मुझे ।

याम खाने लगी चकर मेरे समनाने को ॥ न याद०

पाँव से रुंधा हुआ फूत भी खिल जायेगा ।
मिलगया धूल में वह रंग नया लायेगा ॥
एक मिट कर के अनेकों को जिला पायेगा ।
शान से फिर वह गुलिस्तान में लहराये गया ॥

दुल वुलें शोक से बेताब हैं चढ़वाने को ॥ न याद०

जरेँ जरेँ पे जमी के मैं फतह पाऊंगा ।
अस पर जाके इवाथों पे किले छाऊंगा ॥
अब दारों को भी सीमाव द्वा तड़पाऊंगा ।
कौंहे आनिश को मनुक आव बना ऊंगा ॥

ध्यान से सुनिये "सुधाकर," के इस अफसाने को ।

न याद कीजिये गुजरे हुए



❀ नगमा ❀

नेला मजनु मे लगी इत तरह समने
न याद कीजिये गुजरे हुए अफसाने

इरक में दल वही होता है सुधाकों का
खाक उड़ते हुए लेते हैं मजा फकों का ।
खून पीरी के जिगर खाने, सियाह दागों का ।
हस्तो भिट जाने से ही नाम है अरशाकों का ॥

जिदगी कहते हैं वमइरक में मरजाने को ॥ न याद०

फिसी ने मुझको जला कर के जलाया तुम को ।
फिर भी मैंने तो गले ही से लगाया तुम को ॥
गोद अपनी में हर्जी जान खिलाया तुम को ।
जाम उरकत ही का हर बार पिनाया तुम को ॥

गमथी भी कड़ने लगी आज यों परवाने को ॥ न याद०

जुल्क पेचों में तुहीं ने तो फँसाया दिल को ।
दरते हैरों में तुम्हीं ने तो गुमाया दिल को ॥
इरक ने, जान की बाजी में, लगाया दिल को ।
गम अलम रंजो मोहन ही में मिदाया दिल को ॥

अब नहीं मानेंगे जैतान के वहकाने को ॥ न याद०

जाम पर जाम दिये जा अरे मक्की भर भर ।
जिदगी पायेंगे दुनियाँ में नई मर मर कर ॥
आज फिर जे शे जुनुँ इरक का छाया सर पर ।
आ पड़े चार बकन बांध के तरे दर पर ॥

अब कहां जायेंगे हम छोड़ के मैदाने को ॥ न याद०

आथो दिलवर तुम्हें आँलों में बिठालूँ अपने ।
चीर कर सीना कलेजे में छुपालूँ अपने ॥
दिल ही में दिल के सब अरम न मिटा लूँ अपने ।
बच्चे कानी से सर अंजाम उगालूँ अपने ॥

फिर "सुधाकर," क्यों सुवा लाया है बरसाने को ।

न याद कीजिये गुजरे हुए



✽ गज़ल ✽

कभी दिल का अरमान होगा ।

पर फिर भी बंधा तो कुरवान होगा ॥

ने आलम से मुझको उजाड़ा ।

तो आवाद मदरुन का मैदान होगा ॥

अदा से बताया जो मुझको ।

तो बोले यह कोई वेईमान होगा ॥

अदो मिटादो चढ़ादो उड़ादो ।

समझना हूँ ! यह उनका फरमान होगा ॥

मेरा हाल पूछें तो क़ासिद यह कइना ।

के कुछ देर का और महमान होगा ॥

जिसे चाह तेरी न होवेगी दिलवर ।

भला कौन ऐसा भी इनसान होगा ॥

नजीजां यही आखरी है "सुधाकर," ।

न कोई तेरा हाल पुरसान होगा ॥



तुम्हीं राम हो और तुम्हीं हो रहीम ।

दयालू तुम्हीं हो तुम्हीं हो करीम ।

प्यारे अलीम प्यारे अलीम ॥ तुम्हीं ०

तुम्हीं सर्व जाता तुम्हीं हो फहीम ।

तुम्हीं भोग दाता तुम्हीं हो नर्दम ।

हे कदमों पे खादिम दुजानू मुकीम । प्यारे अलीम ० तु

तुम्हीं दो जहाँ के हो मालिक अजीम ।

तुम्हीं लामकाँ के हो रालिक मुनीम ।

मुदायम रहे हमपे लुत्के अमीम ॥ प्यारे अलीम २ तु

तुम्हीं हो मसीहा तुम्हीं हो हकीम ।

तुम्हीं हो "सुधाकर," की प्यारी नसीम ।

अरज़ दस्त वस्ता करे यों यतीम ॥ प्यारे अलीम २ तु



मिटाने को मेरी हसती खड़े वह तेग़ तने हैं ।

मिटाने के लिये मुझको उन्हें लाखों चहाने हैं ॥

जमीनो आसमों आवो हवा शमशो क्रमर तारे ।

मिटेंगे यह भी सारे, हम विचारे कौन मानने हैं ॥

क़यामत होगा तो हमइम मिमाले यार भी होगा ।

शहीदे नाज़ हैं मिटने की तो हम खुद ही ठाने हैं ॥

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं ।

यह नज़रें नाज़रीं बेज़ार हैं नज़रों से मिलने को ।

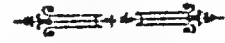
नज़र उनकी हुई नज़रों पे तो अपने ज़माने हैं ॥

मिटाना और बनाना यह तो अदना खेल हैं उनके ।

यसान हैं ज़माने और कभी उनको मिटाने हैं ॥

भरे अरमान हैं मुरदा सिकत लाखों ही इस दिल में ।

यह मुरमाये हुए गुल कुछ "सुधाकर," के ताने हैं ॥



करूँगा सामना कबतक मैं उन के तीरों का ।

कलेजा बनगया घर यार की शमशीरों का ॥

जियेगा किस तरह नाचार आवो दाने विन ।

असीर दामे कफस इश्क की जंजीरों का ॥

है लव पे आहो फुग़ाँ चश्म से दरिया जारी ।

नतीजा है यह मेरी वस्ल की तदवीरों का ॥

मिटो दिये गये साइल सवाल से पहिले ।

महज़ यह हाल हुआ हुस्न के फकीरों का ॥

किसी को क्या कहें रंज और गम अलम अपना ।

खुदा ही जानता है हाल हम असीरों का ॥

पकड़ के सीना "सुधाकर," सँभालिये दिल को ।

इलाज कीजिये जखमी जिगर के चीरों का ।



मुसलमां और हिन्दु ध्यान में लायें तो अच्छा है ।

हैं भाई भाई जो आपस में मिल जायें तो अच्छा है ॥

रहें दोनों ही मिल कर गुलिसताने हिन्द के गुलची ।

मिसाले गुल व बुल बुल दिलको एलमयें तो अच्छा है ।

करें परवाज़ दोनों इस चमन की डाली २ पर ।

नशेमन एक में दोनों ही रह पायें तो अच्छा है ॥

नहीं सैयाद का खकरा है, है अब दौरे आज्ञादी ।

तिरंगे ध्वज को मिल दोनों ही लहरायें तो अच्छा है ॥

बढायें दिल में सादिक इत्काक़ और इत्हाद अपना ।

गले से राग दोनों एक ही गायें तो अच्छा है ॥

'सुधाकर,' की गुज़ारिश, भाइयों से दस्त वस्ता है ।

क़म खादिम पर नसबुलएन क़मयिं तो अच्छा है ॥



✽ रचयिता ✽

श्री गिधर दास बोहरा कवि "सुधाकर"
टोंक (राजस्थान)



✽ सुधाकर काव्य कुञ्ज ✽
श्री राम जन्म वधाई

दोहा

मुनो रँगीला राजवी, टाडनियां रा कंथ ।
राम जनम की धूम में मुनकर आई पंथ ॥
का मृग्य मृं चर्यांन करूं महिमां अमित अनंत ।
द्रव्य लुटावत कोप ते नृप दशरथ श्रीमंत ॥

जिव लनचायो ए, पलना मुलायो ए, दिवस बढ़ाव
राजन मुत पायो ए रघुवर लाडलो ॥ सखी०
चरण कमल सम कोमल सोई नील जलद ननुश्य
मृगमद निजक मुनिन मनमोहे मृदुल हाश्य अभिराम
ललना लढायो ए। रूप दिखायो ए। काज बनायो ए।
सुन्दर मुवदायो ए रघुवर लाडलो ॥ सखी०
घर र मंगल होरया सुरम मुजस न बरख्यो जाय ।
दास "सुधाकर,, कहत वधाई प्रभु पद सीस नयाय ॥
वेदन गायो ए। परं अचायो ए। ईस मुक्कायो ए।
मधु रस बरसायो ए रघुवर लाडलो ॥ सखी०

[वरज] न्मारो जोवन वीश्या जावे छे ! छैला बेईमान ।

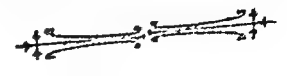
म्हाने केसरया लेचालो ना नृप दशरथ रे द्वार ।
बांकेराज भवन में लीनो सा त्रिमुवन पति अवतार ॥
कौशल्या कैकेई सुमित्रा महिषि मृदुल मुधार ।
चतुश्चन्द्र सा चार मुवन जिन जावा रसिक कुमार ॥
फूले फिरें नगर नर नारी हर्षित दिविध प्रकार ।
जय जय ध्वनि कर मंगल गाये मुघर मुहामनि नार ॥
विश्र विशारद वेद बत्वाने कर पोडन उपचार ।
देश र तंगुण जन आने, महिमां अमित अपार ॥
मैं गुलनार अजय अलबेली, रँग भीनी रँगदार ।
तेरातालन बनकर नाचूं मोतियन मांग सँवार ॥
टाडनियां री मुनो "सुधाकर,, अरजी बारम्बार ।
मणि मुका घन अनंत लास्यां आज वधाई पार ॥ न्हां.

[नरज] लेल्यां र जी वरवृजो मजादार-
जालन म्हारी बाढीको ।

लो!नो लीनो जग में त्रिमुवन पति अवतार-
वधाई रघुवर राम घरां ।
कीनो कीनो प्रभुजी निज जन रो उद्धार-
वधाई रघुवर राम घरां ॥
पूर्व जनम में मनु सतरूपा कीनो तप भर पूर ।
नेहि के कारण राजसुयन बन आया आप हुजूर ।
राणी कौशल्या रा महलां रा सिरणार ॥ वधाई०
जव ते जनम लियो जग मांही आनंद मंगल छाया ।
धन्य बढी धन भाग नवल मांकी रा दरसण पादा ।
आने गोद्यां ले ले करस्यां सुख से प्यार ॥ वधाई०
श्यामल र चंद्रवदन घन सुन्दर भाई चार ।
राम लक्ष्मण भरत गुनुहन रुपां रा भण्डार ।
व्यांकी महिमां मुख से गावे सव संमार ॥ वधाई०
मधुर र छवि प्यारी लागे मनहर कामण गरी ।
जाय 'सुधाकर,, तन मन से उन चरण पर वलिहारी ।
म्हाने पाया भूमि भार चनारणहार ॥ वधाई०

[न.] म्हारो मही मत लूटो जी मैं छूं गोलक की कान्हा गूजरी ।

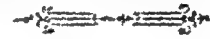
सखी आनंद छायो ए ! दशरथ घर आयो ए -
रघवर लाडलो ॥ सखी आनंद छायो ए० टेर
स्नम भयोई राम फों सरस वाजे रँग बचाय ।
फूली कौशल्या फिरे अधिक आनंद उर न सामय ॥
अति मन भायोए । मुख उप जायोए । जगत सराह्योए ।
नैनन उर भायोए रघवर लाडलो ॥ सखी०
पीत मँगुलिया तन लसे सुभग पग नृपुर रहे बाज ।
गोइ खिलावत राम को ! मदन कोटिन छवि रही लाज ॥



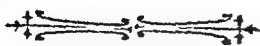
[तरज] जागो जी जागो भागो वापखाणो मोल्यो आगो,
 की तिहारी, बनी आज, कैसी प्यारी प्यारी ।
 सज कर आई हैं सिणगर सखियां न्यारी न्यारी ॥
 मोतियन चौक पुराओ, सली आओ आओ ।
 राग बधाओ सुख पाओ प्यारी, गाओ गाओ ।
 द्विज, पृथ्वी रे काज लाजा नर तनुधारी ॥ कां०
 शिव ब्रह्मादि सुर आय सारे नम पर छाये ।
 पुष्पन करियां लगाय, आनंद मंगल गाये ।
 सुख निधि, त्रिभुवन राज तुमपर तन मन, बारी ॥ कां०
 घर घर में बांधी, बंदन चार मार्ग हाट सजायो ।
 अत्रधपुरी सों मानो देव संरो लोक — लजायो ।
 नीकी बधाई रही बाज मुनि मन मोहन हारी ॥ कांकी०
 रघुवर रघुनंदन राघोराज लीज्यो सुध सुखकारी ।
 भक्ति, सुधाकर, जग शिर ताज अनुपं महिमा भारी ।
 उपमा कहा बरखूँ आवे लाज, लाला ललन विहारी ॥ कां०



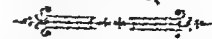
[तरज] थाने गेले मिलेली गणगोर म्हारा-
 मैं सुण आई सखीरी नई वात राणी कौशल्या रे डोटा जायो री ।
 अरी पण जायो लाला री काई वात ।
 बांके त्रिभुवन पति महलां में आयो री ॥ मैं सुण०
 चन्द्र वदन मुख मंद हसन श्रवि ।
 अरी लल चायो ! उन श्याम वरण पर मन लल चायो री ॥ मैं०
 कंचन धार सजाओरी सजनो ।
 अरी पण पायो ! मंगल गावण रो शुभ दिन पायो री ॥ मैं०
 मोतियन चौक पुराओ री आली ।
 अरी सुख छायो ! सब सखियां आज बधा ओ गाओ री ॥ मैं०
 रान लक्ष्मण भरत यशुहन ।
 अरी ओ धरायो ! राजाने बांका नाम धरायो री ॥ मैं०
 श्याप मुनी जन दरान ने आया ।
 अरी मन भायो ! सब अत्रध पुरी में आनंद छायो री ॥ मैं०
 कहन वगत नहीं सुजस "सुधाकर," ।
 अरी मैं मुलायो ! लखिलय रघुवर की ध्यान मुलायो री ॥ मैं०



[तरज] लेहरदार चीन्ही माचरो लोभी चीन्ही ।
 सुन गम जनम को आई मन र्थाई जी कामनियां -
 नाचे नार हाडनियां ।
 म्हारा लालनरा पगल्यां में नून सुन बाजे जी पाजनियां -
 नाचे नार०
 म्हारा साँवल सा बँदड़ा रा नख पर लाजे जी दामनियां -
 नाचे नार०
 थांकी चन्द्र द्वापर तन मन धन बलिहारी जी साजनियां -
 नाचे नार०
 म्हांकी गोदयां मांही मुलक र किजकारो जी लालनियां -
 नाचे नार०
 मैं फूली नाये समाऊं सुध विसराऊं जी राजनियां -
 नाचे नार०
 थांकी मोहनसुन्दर रूप "सुधाकर," भावे जी भावनियां -
 नाचे नार०



[तरज] रावेश्याम मुगरी रे साँवरो वंश्याम कन्हैयो०
 म्हारा रघुनंदन जी रे थेतो वणा दना में आया ।
 प्यारा राज कुँवर जी रे थांका दरसन मनमें भाया ॥ म्हा०
 राजा दसरथ जी रा वेटा कोसल्या जी जाया ।
 राम लक्ष्मण भरत सनुघण ज्यांका नांव पड़ाया ॥ म्हा०
 हरया र गोबर पीलो सूँ आँगण चोक लपाया ।
 गांव र सूँ भाँड भाँडणी आकर मंगल गाया ॥ म्हा०
 सजा र कर न्याण देवता आकासां पर छाया ।
 देव र कर लीला थांकी फूल घणा बरसाया ॥ म्हा०
 वसवामंतरजी की लारां जाकर होम कराया ।
 राकस लड़ाया आया तो थे तीर कुवाण चजाया ॥ म्हा०
 आगे त्रेता जुग में म्हांने रावण घणा सत था ।
 थे न आया जी पहल्यां तो राजघणा दुख पायो ॥ म्हा०
 अत्रध पुरी के मांय "सुधाकर," सरजू जी पर धाया ।
 महमां थांकी असी सुणी जो सूरजवांद थकाया ॥ म्हा०





[तरज] राखोला म्हारी, थेही दया निधि लाज ।

मनाऊं देवा ! गणपति परम रसाल ॥ मनाऊं०
पूज्य प्रथम तुमरो यश गाऊं । गीत सुनाऊं स्वर ताल ॥
पोड़स विधि से सेवा रचाऊं । पुष्प चटाऊं गुथ माल ॥
नाना भाति के भोग लगाऊं । भर भर लडुवन थाल ॥
वर्षा ऋतु में हित से ध्याऊं ।
सुखद "सुधाकर," लाल ॥ मनाऊं०

[तरज] नाटक ।

श्याम, श्याम, श्याम भँवरा मधुर २ गूँजत मधु वनमें ।
श्याम, वान, तान मुरली कूकत सजनी पुमनन वनमें ॥
बहार आई सुमन फूले, घटा छाई सुश्रानन में ।
प्रकाश एकदम हुआ अभ्रुत सुवर कुञ्जनमें काननमें
पधारे सांवरे रावे रसन, ज्यों चन्द्र तारन में ।
रगन में माधुरी कांकी बसी अरु प्रेम प्राणन में ॥
फूल फूल फूल, कलियां चटकल लागीं सुधर चमन में ।
ब्रान मान ध्यान बिसरत-
बसत 'सुधाकर,' जिन चितवनमें ॥ श्याम०

[तरज] मेरो कंधर गयो वनश्याम-

भँवरिया पार लगाय ! नैया बही जाय ई जीवन की ॥ सां-
काम कोच की छई बंदरिया, मान मोह की भई अंधरिया ।
नाँय डगरिया लखाय ॥ नैया०
भवसागर मायाजल भरिया, विन पतवार न कोऊतरिया ।
करिया तुमही सहाय ॥ नैया०
जो भवन रह्यो भँवर रचैया, जेहि विच तरनी डोलत रहैया
आओजी कन्हैया धाय ॥ नैया०
कोठन 'सुधाकर,' धीर बंधैया टेरतहूँ जिमि बछ विन गैया
भैया लेहु वचाय ॥ नैया०

[तरज] लहर चढ आई रे वीछूड़ा री खाई

बंदरिया कारी जी बरसत रिम किम प्यारी ।
घनन २ घन गर्जन लागे, नभ मण्डल पर भारी ।
सावन में वनश्याम घटा को विजली करत वजारी ॥ व.
दादुर मोर पपैया बोले, ढोले त्रिविध बयारी ।
कली २ फूलन पातन पर, भँवर करे गुजारी ॥ बढ०
उमग २ कर ताल तलैयां करी दधि मिलन तयारी ।
सज सिणगार रही पृथ्वी भी थोढ़ हरी रंग सारी ॥ व०
सरयू पर सिचाराम सुहायत, यमुना कृष्णसुरारी ।
कुञ्ज संघन में सखियन के सँग श्रीत्रयभानु दुलारी ॥ व०
निकसत दुरत हँसत मुसकावत, चन्द्र छटा सुखकारी ।
पट धूंगट में भाव दिग्वायत, जोह विध चञ्चल नारी ॥ व.
ललित लाल लावण्य लता लाख, चकित भई ब्रज नारी ।
नवल लली ललना लालन पर जाय 'सुधाकर,' वारी ॥ व.

[तरज] नाटक ! भर भर जाम साकिया दे ।

बदरा घूम घूम छाये ।
मोरे कान्ह मान प्रान ! अजहुँ न आये ॥ बदरा०
छाई बंदरिया काली । गरजे घटा तिराली ।
आये नहीं वनमाली,
मैंतो जाऊंगी पिया के ढिग आली ।
जियरा ने यही, लगन लगाली ।
मोहे खान पान गान कछु न सुहाये ॥ बदरा०
छाँढ गये वर्षा ऋतु में ब्रजराज मोहे सुन ऐरी सखी ।
दासीसे नेह रचाय, गये ब्रजवासी बिसारके कुञ्जगली ।
जीवन की कुमलायरही मुरझाय गई सखी कुन्द कली ।
मोहनश्याम 'सुधाकर,' के विन यह ऋतु लागत नांयमली ।
ऐरी श्रान वान तान विजली डराये ॥ बदरा०

[रज] आओ हमारे प्यारे सुरारी सँवरिया।

बदरिया करी, घटारी उजारी में।

हार प्यारी, फुलचारी हमारी में ॥

घन गरजे चम र चमके रिमफिम र वरसे री।

ओ खिले कूँ तोज गये जियरा हों री।

आओ री आओ लगाओ री तान।

गाओ "सुधाकर," सुघर गान।

सुजाति करे री ध्याने रिती समान, पथिरो मनि ॥

वदरिया करी ॥

[तरज] लहरदार विह्वडो। माथारो लोभी ब्रीह्वडो।

कारे र वदरा वजपा आये रे कन्हडा, बरसनको-

होय रहे आरुडा। अब का होयगो वलरमाडा ॥ कारे०

गरजेत घन विजली चमक भमक डरपाये रे कन्हडा।

कम्पे धरती आकाश सुवज थर्राये रे कन्हडा।

रजनीसम दिनभयो श्याम प्रलय होजाये रे कन्हडा।

कियाकोप सुधाकर, इन्द्र कुपल न दिखाये रे कन्हडा।

वरसनको होय रहे आरुडा, अन्नकाहोओ प्रलसमडा, का-

॥

[तरज] नाटक! दिन हैं वृहार के।

कैसी वहार है। हां... कैसी०

उमड घुमड कर छाये वदरवाँ घूम घूम धरसे। कैसी०

विजली चमके डरलगे, गरजेत है घनघोर।

श्याम हमारे घर नहीं मोहन मन के चोर।

सघन जमन में देख सखीरी, कलियन बीच निखार है।

डार डार पर नैना बोले, कोयल रही पुकार है। हां... कै-

॥

[तरज] जोदू भरे तोरे नैना सितमगर।

कवसे छड़ी तोरे दर्शन को प्यारे में ॥

निमक रही है विजली श्याम घटा छाई है।

सुरारी देखो चमनभे, जो वहार आई है ॥

चमेली मोगरा नगिस लुही खिलाई है।

हरेक सुलने सघर कर, अदा बनाई है ॥

लगी रिमफिम "सुधाकर" है। मेह कीभडी ॥ तोरे०

॥

[तरज] सखी मोरे नैना वेदरदी से लागे।

आज सखी मधुवन बोले शोभा देना ॥

सुरलीवाजी श्याम सुन्दरकी, उठतरहे घन घोरा। आज०

घनी र वूँदन वरसनलेनि, पवनवहे मक मोरा।

चमकत दामनी घन र गरजेत जियालजेत नहीं थारा। आ-

वाट निहार रही। साजनकी, रे न भीई भयो भोरा।

हेरी सुधाकर, अलहने प्रायोतमहरलीको छोरा ॥ आ-

॥

[तरज] सखी मोरे नैना वेदरदी से लागे

सखी मोरे वद कपालन लागी।

सोय रही पियासग भवनमें, घनगरज्यो तब जागी।

उमडघुमडे कर छाये वदरवाँ श्याम वरसा दुखदागी ॥ स-

दादुर मोर पपैया बोले, कोयल सुखद सुहागी।

उत चातक मधुस्वाति चहे, इत नैन सजन अनुरागी ॥ स-

याचतुमें आनंद प्रीतमसंग प्रावत, सोही वडभागी।

सुन्दर शोभा देख मोहनकी प्रेम "सुधाकर", पागी ॥ स-

॥

[तरज] सखी मोर नैना वेदरदी से लागे।

आज सखी शोभा वरनी न जाई ॥

प्रात समय निकसे मनमोहन, सोहन श्याम कन्हई।

घन र गरजेत दामनि के संग सुघर घटा घनछाई ॥ आ०

पोतवसन पहिरे तनसुन्दर कसुमल पाग सुकाई।

गल वैजन्ती भाल विराजत, अधरन सुरली सुहाई ॥ आ०

नौलाम्बुज नैनन में आली, अंजन रख लगाई।

कर लकुटी अरु कंधे कमलिया लाजत सुन्दरताई ॥ आ०

याविधि जाय सघन सुमनन घनमें सखी वसो वजाई।

दौरपरी सब वीर सुधाकर, धीर न काहुमन आई ॥ आ०

॥

[तरज] सखीरी मोरे नैना वेदरदी से लागे।

सखीरी आये भीजत नंद कुमार ॥

सीस मुकुट मकरा कृत कुण्डल, गल मोतियन को हार।

सुरली मधुर वजावत मोहन, सुन र धाई वज नार ॥ स०

राग सुनावत, अति सुख पावत, गावत गीत मल्हार।

श्याम सुधाकर, की छवि ऊपर, तन मन घन वलिहार ॥



[तरज] चँद्रावल शिवनार अकली गहगइ रे ।
सखीरी में तो सावनमें, सुमरुं गणपति लाल ॥ सखी०
श्रुध सिध सुखसम्पती के दाता । मंगलरूप रसाल ॥ स
प्रथमपूज्य को प्रथम मनाऊं । धर महिपर निजमाल ॥ न
पंगु चहें गिरी जाकी कृपासे । मूक होहि वाचाल ॥ स०
बन्दीं चरण सरोज 'सुधाकर, । शर्णागत प्रतिपाल ॥ स०

[तरज] ओ सांवरा आज तमां म्हारे घर आवज्यो ।
ओ लालजी नैन में कुताऊं थाने लाइला । डेर
नैनन के डोरन सूं बांध के हिडोरना ।
पलकन थी पाटली विछाऊं ॥ ओलालजी०
त्वेद बीच शयम तामें गहन श्यान माधुरी ।
श्याम श्याम श्याम गीत गाऊं ॥ ओ लाल जी०
सुरतारी कुञ्ज सघन नेहरी फुलवारी में ।
चुन २ गुल हारगल सजाऊं ॥ ओ लालजी०
चावसूं उद्यावसूं बलिहारी वारी वारी जाऊं ।
सीस युगल चरण में झुकाऊं ॥ ओलाल जी०
मंद मंद अथर २ सुधर 'सुधाकर, दे लोरि ।
असुवन जल प्रेम थी बहाऊं ॥ ओलाल जी०

[तरज] बैरण मतलंडं ए म्हारा आलीजा टोला ने-
मोहन लालजीरे थानेनेणारे माँय कुलाऊं सुन्दर सांवरा,
रूप रसालजीरे थाने कजरारी ओट छुपाऊं सुन्दर सांवरा,
वांकी सी झंकी अनोखी छे थंकी ।
सांहनी सुध विसरावे छे म्हंकी ।
श्याम घटा भी छटा थंकी देख के-
बोली में बलिहारी जाऊं ॥ मोहन०
सूरज थे में सरोजनी थंकी ।
नैनन रे विच धूमत झंकी ।
लागी लगन, छूं मगन थंका प्रेम में-
दिवड़ा सूं अत्र ना मुलाऊं ॥ मोहन०

आम करे ज्वांकी प्यास बुझाओ ।
थांकावणे ज्वांका थे बणजाओ ।
जो म्हारे सनमुख आओ साँवरिया-
तो भुज भर कण्ठ लगाऊं ॥ मोहन०
मुण्णयो 'सुधाकर, बीनती म्हारी ।
ठाकुर थे छो तो में छूं पुजारी ।
चरणों री शर्ण में राखी विहारी-
में थांका ही गुण नित गाऊं ॥ मोहन०

[तरज] वर्षा के दिन आवे री सजनी ।
नेह नयो अरु, मेह नयो सखी-
श्याम नवल, त्रपभानु किशोरी ।
नव पीताम्बर नई २ चूनर-
भीजन दोउ मिल मोहन गोरी ॥ नेह०
नव वृन्दावन नव फूलन वन फूलो री ।
मल्हार राग नई गाओ, नवल झूलो री ॥
समय मुहावन सव भाँति है अनुकूलो री ।
रिझओश्याम 'सुधाकर, सखी न भूलो री ॥
नव भूपण नव मुकुट विराजत-
लाजत मदन, लखत छवि का री ॥ नेहनयो०

[तरज] जाओ जी जाओ झूटी बातों के बनाने वाले ।
झूलो जी झूलो, श्रीत्रपभानु की दुलारी प्यारी ॥ झू०
आहँ सावन की वारी ॥ धाई वादरिया कारी ।
बोले कोयलिया मधुर वैन, चूमे डारी डारी ॥ झू०
श्यामा के संग नये ढंग से झूलें वनवारी ।
गावें मल्हारें मधुर राग से गोकुल की नारी ।
कृष्ण मुरारी जग हित कारी, असुरारी पर हो-
बलि हारी ॥ झूलो जी झूलो श्री०

करमन का गात न्यारी ।

रही है ब्रज नारी ! छवीली प्यारी ॥ देर
हात निशङ्क नवेली । योवनमद की मारी ॥ छ०

सखि सुमन झरत मोहन पर ।

चितवन मन हारी ॥ छवीली०
विधन चमन में घटा द्यारही कारी कारी ।
त्रिविध सुरंग छटा श्याम पे न्यारी न्यारी ।
न मिस आई सारी ॥ छवी०

बहे समीर त्रिविध सहचरी गावें गारी ।
कुलावें श्याम 'सुधाकर, को सुखद मनहारी ॥
श्री ब्रजमानु दुलारी ॥ छवीली०

[तरज] चंद्रावल शिवनार अकेली रहगई रे ।

कुञ्जन वनमें आज, हिंडोरो है आली ॥ देर
उमड़धुमड़ कर द्याये बद्रवा । विजली चमकरही गाज ॥
रतनन मणिले जड़ियो हिंडोरो ! रेशम तणियासाज ॥ हिं
भूजतहै श्यामासंग मोहन । अरु वंसी रहोवाज ॥ हिं
सखी ललिता चंद्रावल आदिक । ठाड़ीं कुलावन काज ॥
श्याम 'सुधाकर, हँस २ भूले । ब्रजभूषण ब्रजराज ॥ हिं०

[तरज] कैसी कहं मोरीवीर, पिया मोसे रूठ रहे ।

आर नहीं घनश्याम ! सुहावन सावन में ॥ आए०
कम कम चमके बीजुरी रिमझिम वरसे मेह ।

घन २ गजें घन घनो, थम थम लजें देह ।
भूले हिंडोरे ब्रजवाम ! सुहावन सावन में ॥ आए०

मन मोहन सुरली वारा । मधुसूदन कामण गारा ।
अनुराधा नैनन तारा । मतवारा नंद दुलारा ।

सोहन सुखमां धाम ! सुहावन सावनमें ॥ आए०

छाय विदेश रहेरी पिया, नव नेह का नाता तोड़ दिया ।
दासी से प्रीत लगाय रूप ब्रजवामी वनाय कटोर हिया ।

चैन मोहे दिन रैन नहीं, निन नैन बहावत री नदिया ।
जायजिया दुखपायहिया सखी भर २ आवतरी छतियां ।

तनक नहीं री विश्राम ! सुहावन ॥ आए०
आओ प्राणाधार श्री राधावर कुञ्जन में ।
सखियां रहीं निहार "सुधाकर, माधो वन में ॥

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

पिया मिलन की आस लगाकर घन तन मन में ।
जोवत निशिदिन वाट, खड़ीसव प्रेम लगन में ।
सुना है सब नंद ग्राम ! सुहावन ॥ आए०

—*—*—*—

[तरज] (नाटक) बद्रिया रिमझिम वरसण लागी ।
री. अनयां ! हिल मिल भूलन को चलियां । देर

गोरी २ सखियां । भोरी २ अखियां ।
प्यारी प्यारी राधा संग भूले नंदलाल ।

मोहनियां ! हिलमिल भूलन को चलियां ॥ री०
चमुना रुचिर कदम तले भूले श्याम श्याम ।

गोपी जन दें लोखिया, सुन्दर रूप ललाम ॥
पूछत लेख हाथ में छड़ी खड़ी ब्रज वाम ।

वतलाथो जी मोहन, वरसाने वाली को नाम ॥
आई अणु भलियां । ग्विले गुल कलियां ।

गावत वांसुरिया में परम रसाल ।
सजनियां ! हिल मिल भूलन को चलियां ॥ री०

राधे २ कृपत मुरली कोयल चातक मोर ।
वृन्दावन कुञ्जन में गोपीजन को मच रह्यो शोर ॥

भूलरही मुध बुध तन मनकी, प्रेमा सरमें बोर ।
निरखत मधुसूदन अनुराधा नागरी नवलकिशोर ।

मीठी २ वतियां ! करें गजगतियां ।
भूलत "सुधाकर, - कुलावें ब्रजवाल ।

दुल्हनियां ! हिल मिल भूलन को चलियां ॥ री०

[तरज] मांड, वना म्हांने प्यारा लागी जी ।
जी राधा बाईरा निरखणहार, कुञ्जनवन फूलन फूजांजी ।

जी म्हारी लाबलरा सिरदार कुलावेथाने प्यारीभूलोजी ॥
प्यारी कुलावे थाने, मोहन भूलो जी ।

ओजी राणी रुकमणिरा भरनार ॥ कुञ्जन वन० जी राधा-
कदम की डार सुहावत भूलो जी ।

ओजी प्यारा भूलोने नंदकुमार ॥ कुञ्जन० ओजी रा०
श्याम कुलावे थाने, श्यामा भूलो जी ।

ओजी लाला गोरी २ वैयां पसार ॥ कुञ्जन० ओजीरा०
लाल "सुधाकर, सांवर भूलो जी ।

ओजी थाँपे नन मन घन वलिहार ॥ कुञ्जन०

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टॉक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

❀ प्रेम कदानी ❀



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधर दास बोहरा कवि
टोंक (राजस्थान)

(तरज) वृष्ण नृ ना गर्द, दिन २ प्रबल भई रो ।
चन्दा नही बता, मेरे श्याम को पना ॥ चन्दा०
सबही वन २ दृंह फिरी में वृन्दावन की वारी में ।
बंसी बट जमुना के तट पर वृष्ण की कृष्णवारी में ।
चैन नहीं दिन रैन पिया बिन-
साजन अब ना सता ॥ चन्दा०
है! वृत्ता देखे कहीं, तुमने मेरे मीन ।
जाने प्रीत लगायके बीनो जियदो जीत ।
नरगिण चमेली अल बेली सोहनियां-
बोल २ माधुरी लता ॥ चन्दा०
छाड़ गये चंश्याम हमें वेदों को नेकहु पीर न आह ।
नार बहाय रह्यो अश्रियां गयो धीर उदासी पिया बिन आह ॥
प्रीत नहीं अनपीत करी तुमही कुछ सो वो विचारो धरदाह ।
वासीसे श्याम मिला ब्रज वासी नहीं अब हांगी लोग हँनाह ।
दादुर मोर चकर- कोयलिया-
सुगनी कह देरो भी मता ॥ चन्दा०

हाय कहुं तो जग जले जंगल हू जरदाय ।
पापी जियदा न। जरे जामें हाय समाय ॥
कागा सब तन लाइयो चुन २ बियो मांस ।
दो नैनो ना ग्यादयो पिया मिलन की आस ।
श्याम "सुधाकर," वेगसिधा श्रो-
नाही तो बनाईगी चिना ॥ चन्दा०

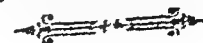


(तरज) मेरा साँवरिया गोपाल री बंसी बाजी कुञ्जमें ।
परी मेरो विसर गयो चंश्याम कौन वन हूँ हूँ री आली ।
परी सखी सुन्दर सुवमां थाम वसन मेरा मनमें वन माली ।
भोर मुकुट भकगकन कुण्डल अधर कपोलन नाली ।
वरणी न जाय मनोहर शोभा मूरव सांचे ढाली ॥ कौन०
नीरज तनपर मुरंग पीत,स्वर श्रवण निकट लट काजी ।
श्याम करन में सौहत मुरली देतर राग रसाली ॥ कौ०
काह कहुं कहुं कहत वने ना प्रीत की रीत निराली ।
जाके तन लागे सौही जाने जियरा की जंजाली ॥ कौन०

आधो 'सुधाकर, प्रेम सदन में हृदय भवन-
उन नैनन ने हरिचरणन में अपनी लगन लगा

(तरज) मोरो लागी लगन गिरधर से ।
ब्रजके कृष्ण कन्हैया । पार लगादो नैया ॥ ब्रजके०
बोच भँवर में नाव पढ़ी है थो जगके रखैया ।
तुम बिन कौन उचारें प्यारे, निरल के बल भैया ॥ ब्र०
रैन अवेरी मुक्त नाहीं पवन वहै पुरैया ।
इगमग २ तरणी इने नार अथाइ मरैया ॥ ब्रजके०
मुन बिन दारा मित्र कुटुम्बी कोऊ न करत सहैया ।
भीर परे पर आवन नाहीं साजन पीर हरैया ॥ ब्रज०
जीवन की है नाव पुरानी, जग को सिधु भरैया ।
निज पापन को भँवर भयानक कर्मव पवन बुलैया ॥ ब्र०
तुम ही आय बचाओ सुख कर गिरधर गिरके छँैया ।
मेरो दुःख गिरव है भारी ध्यान 'सुधाकर, लैया ॥ ब्र०

(तरज) रे मन कर कुछ ध्यान ।
सुमको फूल समान ! जवानी दो दिन की मिजमान ॥ स०
मालो ने एक वाग लगाया । लुइ अनोखा रंग जमाया ।
सुख पंखी देख लुभाया ।
विसर गया सब ज्ञान ॥ जवानी०
बीज दगा कुछ दिन सरसाया । फूला फला और कुमलाया ।
जान अकारथ दूर हटाया ।
रहा न नाम निशान ॥ जवानी०
मस्त जवानी अजब दिवानी ।
जिसमें अम गये ऋषि मुनी दानी ।
ज्वर सम गति हम तेहि की जानी ।
है, एक दूध टकान ॥ जवानी०
पानी का सा बुद २ पाया । चण भंगुर सी जौवन छाया ।
नश्वर है तन कञ्चन काया ।
सांच "सुधाकर," मान ॥ जवानी०



ज) पिया तुम दिन चैन न आवे-

डगर हमारी ! मन मोहन श्याम विहारी ॥ च०

भना जल भरन जाते हैं दिल मिल सखियां सारी

अग रोकत कान्हां नट नागर बनधारी ॥ च०

फोरी चुरियां तोरी वैयां मरोरी न्यारी ।

मेरी सगरी मोरी अंगियां मसका डारी ॥ च०

अचरन पर हाथ छुवायो दूंगी हजारन गारी ।

भो से जाय कहेगी मारी रगल मुहारी ॥ च०

तुम गोकुल के कँवर कहेया हम ग्वादन मनवारी ।

तुम नंद जी के लाल 'सुधाकर', हम ब्रपमान दुनारी ॥ च०



(नरज) हित से राम सुमर रे प्राणी ।

अखियां दर्शन ही की प्यानी ।

छांड गये सुखरामी ॥ अखियां०

कारो है तन तैगो मन भी है कारो ।

का, जाने पर दुख दई मारो ।

डार गयो गल फांसी ॥ अखियां०

निठुर निर्दई निपट अनारी ।

बात बनाकर सगरी विगारा ।

वैरण धर भई हांसी ॥ अखियां०

चैन न आवत उन दिन मजनी ।

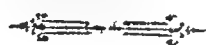
दिन काटूं तो कटे नहीं रजनी ।

निसि दिन रहत रदासी ॥ अखियां०

भूट कपट की बात बनाकर ।

छांड गये ब्रज राज 'सुधाकर', ।

रावे चन्द्रकला सी ॥ अखियां०



(नरज) भारत में भगवान प्राण बन आजायो ।

मोहन मोसे ना बोलो-

जाओ मोहन के संग ॥ मजन मोसे ना०

प्रीत की रीत कहां नुम जानो ।

घायल की गत कैसे पिछानो ।

मूर गयो सब अंग ॥ मजन मोसे ना०

ना समझी थी मैं प्रेम कहानी ।
सो तुम मंग कर प्रीत मैं जानी ।
अब ना चढ़े कल्लु रंग ॥ सजन मोसे ना०
ब्रज वासी धर ध्यान तिहारो ।
एक दामी नव चाव हमारो ।
वैरण कर दियो भंग ॥ सजन मोसे ना०
मैं ना सुनूं अब श्याम 'सुधाकर', ।
कुवजा ही राखिगी कंठ लगाकर ।
दूद नियो नव डंग ॥ मजन मोसे ना०

(नरज) प्रीत लगाये पड़ी उलझन में-

डोलत है कोई विग्रहित तन में इन नैनन में आव २ ।

झूलत है मन हृदय भवन में पड़ उलझन में हाथ हाथ ॥

विरह मतावे बल नहीं आवे ।

चातकनी कव चन्द्र को पावे ।

विना निरि दिन गाय ख व ॥ डोलत है०

जब साजन को पीर न आवे ।

ज्यों फिर उन की याद मतावे ।

मौन रूंद दुख पाय पाय ॥ डोलत है०

प्यारे अपनी आन नभारो ।

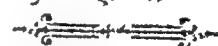
दानी को निज प्रेम निहारो ।

धिनय कहां गिर नाय नाव ॥ डोलत है०

आयो 'सुधाकर', प्रीतम प्यारे ।

जोजन नैना विकल हमारो ।

तुम दिन कल्लु न मुहाय हाय ॥ डोलत है०



(नरज) बन गया ओ बलम भोरे मनमें ठठ उथाले ।

पीतमया ओ, पीतम, मोहे, नैनन बीच छुपाले ।

मड भरे नैना—मोहन बँना मोहन मन मतवाले ।

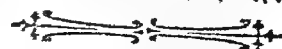
सुन्दर छाँद पर बाल २ जाऊँ साजन कंठ लगाले ॥ पी०

रूप तिहारो ने डारके जावू मोहा सब संसर ।

चिनगन वाणने तन मन वींवा कामगु मुकपर मार ॥

प्रेम की हूक उठे दिन रनियां पीर जीया में चाले ।

राज 'सुधाकर', मन मन्दिर में बसजा और बसाले ॥ पी०



सर्वाधिकार स्वार्थीन लेखक हैं

प्रकाशक भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक



(१)

श्री गणराज कृपा करो मोषे -
में फागण ताँय से मनाऊँजी । श्री गणराज०
श्रव्या की डार गुलाब की कलियों ।
अपने हाथ चढ़ाऊँगी, चढ़ाऊँ देया -
अपने ही हाथ चढ़ाऊँगी ॥ श्री गणराज०
चाँवा चंदन और अरगजा ।
लहुवन भोग लगाऊँगी, लगाऊँ देया -
लहुवन भोग लगाऊँगी ॥ श्री गणराज०
इच्छा राम गुरुपति के शरणा -
निशाने दियो जम गाऊँगी, गाऊँगी देया -
विहारो दीयो जम गाऊँगी ॥ श्री गणराज०

(२)

सदा थाँके मन्दिर वरसे रंग ।
राजन के महाराज श्रीजी ॥ थाँके मन्दिर०
मन्दिर तो थाँको खूब जग्यो छे ।
उड़न ध्वजा पचरंग ॥ सदा थाँके०
चाँवा चंदन अतर अरगजा -
केसर रंग अर्थग ॥ सदा थाँके०
वदन गुलाज लाल भये वदरा ।
पिचकारिन के संग ॥ सदा थाँके०
घाजन ताल मृदंग कूँक डफ ।
थरु सुली मोचंग ॥ सदा थाँके०
मीरां के प्रसु 'गिरधर, नागर ।
निशिदिन रहे अ नंद ॥ सदा थाँके०

(३)

रंग की पिचकारी भर मारी रे, साँवरिया प्यारा ।
मोहन बनवारी, मनहारी रे, साँवरिया प्यारा ॥
लेरंग सबिन मङ्ग करे जङ्ग मुरारी ।
भारत अविर् गुलाल श्री वृषभानु डुलारी ॥
है शोर चहूँ और श्री ब्रज गूँजती सारी ।
नाचें नचावें सङ्ग, राधेश्याम विहारी ॥
गोकुल की नारी गावें गारी रे, साँवरिया प्यारा ।

'गिरधर, बकिहारी तुम पर बारीरे, साँवरिया
रंग की पिचकारी०



धून- नारी । (४)

वरजो जसोदा जी नाना, गलिन में किरत दिवाना ।
मैंदधि बेचन जान वृंदावन, मारग निकस्यो आना ।
छीन कपट मोने माथे की गागर, ले अवीर मुख साना -
मखी सब देन हैं नाना ॥ वरजो जसोदा०
भर पिचकारी मुख पर मारी, कंचुकी गटं ममकाना ।
उट ग्याम नवयोवन लाव मेरो, परे हट तान बजाना -
निठुर नहीं नेक लजाना ॥ वरजो जसोदा०
पकर वाँह मोरी फगवा खिलावन वरजत एक न माना ।
ले कुंमकुंम तक मुखपर दीनो हगन नीर भर आना -
गयो मटकन मस्ताना ॥ वरजो जसोदा०
कँवर कान्ह यशोदा डिग बोलत मात यह करन बहाना ।
भूंट ही हमरो नाम लगावत, मम हिय लागत बाना -
'सुधाकर, कह सुसमाना । वरजो जसोदाजी कान्हा ॥



धून- मांठ । (५)

मुनग्याम कन्हारैरे होरियां खिलाईरे, जमना तीर पे ॥
भर केसररंग पिचकारी । मोरे गोरे वदन पर मारी ।
मोहैं सुधहू न आईरे, भूली चतुराईरे, जमना तीर पे ॥
मत श्याम करे वजोरो । काहें बड़्याँ हमारी मरोरी ।
मोरी नरम कलाईरे, आँढो मुखदाईरे, जमना तीर पे ॥
परोहट नट नागर जाँरे । अचरन डिग हाथ न लारे ।
तोय लाज न आईरे, कीनी निठुराईरे, जमना तीर पे ॥
जब मान जसोदा आगे । गुलचे गालन पर लागे ।
तव भूलो ठकुराईरे, वन में बनआईरे, जमना तीर पे ॥
अब मान मोहन बनवारी । 'गिरधर, गोविंद मुरारी ।
बिनती चित लाईरे, देवी प्रभुताईरे, जमना तीर पे ॥
बलदाऊजी रा भाईरे होरियां खिलाईरे जमना तीर पे ॥



(६)

मिल चालो सभी आज लाला पे डारो री रङ्ग ।

अविर गुलाल के वादर छाये ।

रङ्ग सुरंग ॥ नखी मिल चालो०

गावत व्यंग विलासनी गारी ।

सखी ताल मृदंग ॥ सखी मिल चालो०

कुञ्जन में हरि फाग रच्यो री ।

युवतिन के संग ॥ सखी मिल चालो०

नागरि लाल से होरी खेलन की ।

छाई मन में री उमंग ॥ सखी मिल चालो०

प्रेम लसित छवी देख 'सुधाकर' ।

अमर वृंद भये दङ्ग ॥ सखी मिल चालो सभी०



(७)

समझ कर दीजे मुरारी लाज भरी मोहे गारी ॥ स०

तुम अति ठीठ भये मन मोहन सोहन श्यामविहारी ।

होरी में वरजोरी करत हो, लींचत हो रँग सारी ।

वड्यो जन छूयो हमारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ स०

काहे लाल भगरत फल भोरत तोरत कल अँगियाँरी ।

ढीट लंगर तौय लाज न आवे, छूवन कुच हर वारी ।

निटुर तोहे समझाय हारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ स०

कोमल अग सुकुमार सुहावनी सुघर सुलोचन नारी ।

तुमरे संग रमत गजगामनी कामनी तन मन हारी ।

नहीं मैं वो राधा प्यारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ स०

मानो मोहनमोरी मानो 'सुधाकर', जातर लेहुँ निहारी ।

कर दोऊ पकर चुनर से वाधू गुलचे लगाऊँगी चारो ।

छेल पन देखेगी उतारी, लाज भरी मोहे गारी ॥ सम०



(८)

चालो सब, चालो सब, गोरियाँ री-

देखो कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥ चालो सब ।

गई मैं नीर भरन सीस साज गागर री ।

अकेली जान मोहे घेर लई नागर री ।

करी जिन चोरियाँ री कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥ चा०

सुरङ्ग रंग भरी हाथ लिये पिचकारी ।

वनी उमङ्ग से चट ताक कुचन पर मारी ।

करी भक भोरियाँ री, कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥

अविर गुलाल भरो भोरियन में सखियन के ।

मुरारी कान रहे मार वान अखियन के ।

दई रँग चोरियाँ री, कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥

मजीरा वाँसरी मृदंग चङ्ग वाज रहे ।

सखिन के बीच 'सुधाकर', मुकुंद राज रहे ।

मनोहर जोरियाँ री कुञ्जन में श्याम रची होरियाँ ॥

चालो सब चाल सब गोरियाँ री, देखो कुञ्जन में श्या०



(९)

सखी नंद को लाल रह्यो रंग डाल,

सब ब्रज की वाल भई लाल लाल ॥ सखी०

डारत गुलाल नाचत गोपाल ।

सब गुवाल वाल प्रिये देत ताल ॥

सखी नंद को लाल रह्यो रंग०

मैं गईरी भोर मधुवन की ओर ।

मच रह्यो री शोर जहां चपल चोर ।

मोहन किशोर रंग चोर चोर ।

दई मोयको चोर जसुदा को वाल ॥

सखी नंद को लाल रह्यो रंग०

वाजत मृदङ्ग ढरु ढोल चङ्ग ।

वनसी की तान कररही री दङ्ग ।

सब पिवत भंग अरु करन जंग ।

मैंने नये री दङ्ग को देख्यो ख्याल ॥

सखी नंद को लाल रह्यो रंग०

वृजचंद आज सखियन के काज ।

कहा सख्यो री साज तज कुल की लाज ।

“गिरि धरन,, राज सुर सीस ताज ।

रंग भरत भाज नई चाल डाल ॥

सखी नंद को लाल रह्यो रंग डाल, सब ब्रज की दा०



(१०)

चुनर रंग डारी विहारी काह कहूँ दइया जी ॥ चुन०

जो चुनर मोरे पिया ने रँगई, मोतियन लगी है किनारी ।

सो चुनर मोरी रँग में भिजोई, सास जो लरेगी हमारी ।

लालजी कुछ ना विचारी ॥ काह कहूँ दइयारी०

चुनर रँग मेरो मन भी रंगदियो गुरुजन नाज विसारी ।

रूप छकी बस तेरे सखरे श्री ब्रजराज विहारी ।

रसिक रस रीत विचारी ॥ काह कहूँ दइयारी, चु०



❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

अनोखी होरी



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधरदास बोहरा कवि "सु-
[कमर] टोंक (राजस्थान)

[तरज] आज ब्रज में मटरी ऐंगी होरी ।

मानों मानो जी छैल गिरवारी ।

गत मारो जी लाल पिचकारी ।

शॉकी माँवरी मूरत पर जाऊँ चारी चारी ॥ मानो २ जी०

मुरंग चुनर मोरी मतना विगारो ।

अचिर गुलाल नैनन जन डारो ।

म्हारा हिवड़ा रा जिवड़ा मोहन बनवारी ॥ मानो०

नवल जोवन मोरी चारी उमरिया ।

मृगलोचन मृगनी भी कमरिया ।

मोरी छाँडो जी डगरिया नातर दूंगी गारी ॥ मानो०

अगिया समक भोरी छतियाँ कसकगई ।

धैयाँ मुरक मोरी चुरियाँ करक गई ।

लारा विदिया सरक गई सिर की हमारी ॥ मानो०

जो तुम मो सँग न्वेलोगे होरी ।

मानोगे नाहीं करोगे धाराजोरी ।

तो मैं जखोदा मैया मे कडूगी गत गारी ॥ मानो०

श्याम 'सुधाकर', मदन मुरारी ।

ब्रज भूषण ब्रजराज विहारी ।

म्हारा जिया में समाश्रय जी साजन मनहारी ॥ मानो०



❀ रसिया ❀

उड़त है मन मन्दिर में मन मोहन सँग रंग ।

चिरह की जलरही होली—

ठिठोली मचरही सुखमण संग ॥ उड़त है०

तन गागर में मन को सागर ।

जिस में ज्ञान को रंग बुलाकर ।

प्रीतन के सँग प्रेम बढ़ाकर रँग लियो सारा अंग ॥ उड़०

आइ की भर पिचकारी ।

नैन अपने से मारी ।

राग सँ फाग वो गावें गारी बाजे चित को चंग ॥ उड़त०

प्रेम लगन भरपूर लगी है ।

ब्रह्म रंध्र में ज्योति जगी है ।

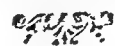
माया ममता दूर भगी है देख अनोखो दंग ॥ उड़त०

यही होली है अपनी ।

याद पीतम की जपनी ।

पहरि 'सुधाकर', तन पर कफनी कर विषयन से०

उड़त है०



[तरज] मोरी बनहीं में बन आर्ट कान्हा ।

एरी सखी डारत रंग गिरधारी ।

मैं तो लागत अंग आली, भई री त्रिभंग—

ऐसा दंग मूँ मारी पिचकारी ॥ एरी सखी डा०

मदन मतंग मन छाई री उमंग बन ।

सखी जन संग मोहे अर्थंग भरत उद्यंग—

ना मूँ जंग रच्यो रा बनवारी ॥ एरी सखी डा०

छवि उन्मंग की मुभग पतंग सी ।

लजित अनंग भयो कल दंग ललित प्रसंग मोहे—

गगन विहंग विहारी ॥ एरी सखी डा०

सम्बा अहयंग नाचे क्याल हृदयंग राचे ।

बाजन मृदंग मुरली मुचंग मारे द्रग खंग, गावे—

व्यग धड़ंग सी गारी ॥ एरी सखी डा०

श्याम 'सुधाकर', भानु सुता पर ।

कात डकंग शुचि अभिपंग मुद्रित अर्थंग, ता सुख—

लटके भुयंग लटारी ॥ एरी सखी डा०



[तरज] गली री होरी आज जलो चाहे कान जलो ।

बेददी ने मारदई भर पिचकारी ।

एरी मोरी श्याम चुनर भीजी सारी ॥ बेददी०

प्रीत को रंग चूवत नैनन में ।

मोह लई मोहें मधु नैनन में ।

नंद नदन बनवारी ॥ बेददी०

छैन बनो ग्यालन सँग डोले ।

ब्रज वनितन सँग एंडा सो बोले ।

नट खट निपट अनारी ॥ बेददी०

आग लगो बलजाश्रो यह होली ।

राधे चंद्र लजावन घोली ।

श्री ब्रजभानु दुलारी ॥ बेददी०

रसिक 'सुधाकर, वीन वजावे ।
गोपी ग्वाल परं सुख पावे ।
इच्छो री व्रज भरी ॥ वेददी०



[तरज] मनो नीत ।

मग रोके नटवर कान्हारी मैं नाजाउँ पनियाँ भरन ।
सखी जमुना कूल मुरारी ।
भर भर मारत पिचकारी ।

वनवारी ! गिरधारी !

दे गारी निलज मस्तानारी ॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०
मोरी वारी उमर रंग राती ।
जिया कंपत धरकत छाती ।

वह धाती ! उत्पाती !

मदमाति निठुर निडरानारी ॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०
सखी काहुकी कंचुकी खोले ।
अरु काहुके अचरा टटोले ।

मधु बोले ! रस बोले !

तहाँ डोले निपट दिवानारी ॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०
अनि ढीट 'सुधाकर, आली ।
घर घाली धुरत कुचाली ।

वनमाली ! चिरताली !

मतवाली काग रचानारी ॥ मैं नाजाउँ पनियाँ०



[तरज] गाँवरिया मे लागीरो लगन नाही छूटे ।

सखी री भोग को वारा सा जोवनवा सताये ।

ना माने सजनी ! चोली में जुलम मचाये ॥ सखी०

मस्त अलस्त फिरुं मदमाती, पिया न अँग लिपटाये ।

सूनो भवन देख सेजरियाँ, छाती धड़का लाये ॥ स०

मैं हूँ चंचल चन्द्रा वदनी, देख चन्द्र शमयि ।

काली र जुल्केँ मुख पर, नागन सी लहराये ॥ सखी०

कोमल कमल चपल चितवन में, चंचलता रही छाये ।

भौं कमान ने नैन वान से लाखों जन तड़पाये ॥ स०

गोल र जोवन के निचुवा, तोड़न के दिन आये ।

आली मेरो दाग जवानी, माली विन मुरभाये ॥ स०

आथ्रो पीतम आओ प्यारे, दासी मुन्हें बुलाये ।

राखूँ दिवड़ा बीच 'सुधाकर, लूँगी कंठ लगाये ॥ स०



[तरज] धरम तुम्हारो ए नार पती की मेवा करना ।

हाय मैं मरगई राम, ईं सासू रे घाले ।

हाय मैं पड़गई राम वेददी के पाले ॥

वड़े सवेरे उठ कर चाकी पीसूं रगड़ रगड़ के ।

चार हेल पाणी की ल्याऊँ, दिनभर माथो भड़के ॥

हाय मैं मरगई राम०

आली लकड़ी गीला छाणां धर चूहा में फूंकूँ ।

तीन जेट रोठ्याँ की करके, ऊँ गजवो ने सू पूँ ॥

हाय मैं मरगई राम०

आप रांडकी घी गुड़ खावे मने चवावे मक्का ।

गया घराँ के पाने पड़गई मिल्या करम का धक्का ॥

हाय मैं मरगई राम०

छाने छाने करे कमाई बुला गाँव का खोजा ।

वजा र कर आप परल ले मने कहे जा सोजा ॥

हाय मैं मरगई राम०

ईं दुख से तो आप घात कर प्रेत जूण ने पास्युँ ।

अब तो तू चाहे सोकर फिर मैं उड़ र कर खास्युँ ॥

हाय मैं मरगई राम०

घड़ी एक नीड़े नहीं बैठ्यो कभी न हँस वतलायो ।

पकड़ केस नित जूता म्हाड़े, सासूड़ी रो जायो ॥

हाय मैं मरगई राम०



[तरज] मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूँगर वाले ।

मैं तो हारगई रे राम घर को धंदो करती करती ।

वड़े सवेरे उठ कर चाकी पीसती पाणी भरती ।

चार जेट रोठ्याँ की कर, सुसराजी आगे धरती ॥

मैं तो हारगई रे राम०

वरतन माँज बुवारा काहूँ चोका से नहीं टरती ।

नाज वीण चरखाने कातूँ फिर भी सासू लड़ती ॥

मैं तो हारगई रे राम०

दौरानी ईकस की मारी नित बेकाम मगड़ती ।

नड़दल दावादार रंगीला भायेलों पर मरती ॥

मैं तो हारगई रे राम०

छोरा छोरी रोवे ज्याँकी न्यारी पीर अखरती ।

ईं दुख से मैं पीतमजी के, भेले सोताँ डरती ॥

मैं तो हारगई रे राम०

दूत भिड़ई करवा ने पाड़ोसण बोल उचरती ।

सौँच 'सुधाकर, मान जिठानी जोवन म्हारो हरती ॥

मैं तो हारगई रे राम०



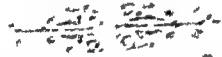
शुभाकर काव्य कुसुम

सुभासन होली



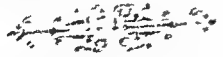
रचयिता श्री गिरधर राम योदरा कवि (राजस्थान)

[न.] न्हारी मही न- न्हारी, मैं छूँ गाँव न भी जाना गूनी श्री जनक नंदनी होरी न्वेले जी, राज राम मँ ॥ टेर हाथ लियां अंजन पिचकारी उन जनः श्रीगण । इन ठाड़ी श्री जनक नंदनी, मंग अयध की वस । श्री- केसर रंग अयंग घुनायो नट सरगु की वस । अश्वि गुलान गगन में आयो, देवगु घायो गाम ॥ श्री० राम लक्षण अरु भग्न शत्रुहन, उन चारों मुँह आन । इव सीना धुनि कोनि उ भिता मा लक्ष्मी ललित ललाम ॥ श्री नम विगन देवन का आया, यधुवन ललित तलाम । अश्वि मुनि इन दरशन ने आया पाना पूरण ललाम ॥ श्री राम रंग अय रमा परसपर, सोहे श्री वनश्याम । महिमा अर्पित निहार "सुभाकर,"— हनुमन करे प्रणाम ॥ जी. श्री जनक नंदनी०



[नरज नाटक] मोरे पिया से कहियो ।

मोरे मारी पिचकारी वनश्याम — मैं कछु न बोली, मैं कछु न बोली, मैं कछु न बोली ॥ मो मैं जल मरन गई श्री जमुना, सिर पर नागर धरके । आन अचानक धरलई, दंड अचरा लीन पकरके ॥ दईसारा जसोदा को जान । मैं कछु न बोली ३ ॥ मो० सचावत शोर नवल क्रिशोर होरी है होरी । ठांडे सध गोप स्वात अरु ब्रज की गोरी ॥ मारत रंग सुरंग वृन कृष्ण चंद्रम गोरी । हात अश्वि गुलाल "सुभाकर," पर दरगोरी ॥ मोमे पूछे वता तेरो नाम । मैं कछु न बोली ३ ॥



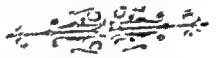
[नरज] मत मारो मोहन पिचकारी ।

यस होली, होली, होली । मोहन मत करो छिटोली ! वस होली, होली, होली ॥ क्रोमल २ नैन हमारे ता सें गुलाल डारो ना । नन्ने चार ज्ञानवा की सुन्दर दूटा विगरो ना ॥ बांकी चितवन नेक सँभारो ! नीचे तिरछे तीर न मारो । मतना खोलो चौली ! वस होली, होली, होली ॥ मो. पीत रंग सें पीतम रंग रहे, प्रीत की रीत पुनीत ।

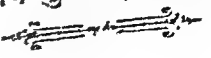
सद्वियन नंग उन मोहन यजनो— उन नाजन सँग सीत ! उन नाजन सँग सीत । भर २ केसर पिचकारी । अचरन पे 'सुभाकर,' न- न मैं बोली ! वस होली, होली, होली ॥



[नरज] रिम क्लिप्त वामे वादरवा, मरन दवायें ठाई- होरी न्वेदन संयगिया, सुभावन कुड्ड मयन में, मोहन आयो, आयो, मोहन आयो ॥ होरी० दिन होरी न्वेदन के साजन आगये आगये । कृनु वलन के सुमन लतन पर आगये आगये । जीवन धन नट नागरिय जसोदा साँ के आँगन में ॥ मो. योर मुहुट पीतान्वर की छवि नाचुरी माचुरी । यही कपलिया दायें करन लालुरी लालुरी । नन केसरिया सागुरिया, अकन के प्रेम लदन में ॥ मो० दूध मठाई नागन सिमरा लाने को, लाने को । कर गोपियन की छेड उलढना लाने को, लाने को । भर अयधन पर सागुरिया, फिर से उल नंद भवन में ॥ मो. वन वासी सब वाट निहारी जोते हैं जोते हैं । श्याम "सुभाकर," के दर्शन कर होते हैं होते हैं । वस गुण रूप उजागरिया, न्यालन सँग रंग खेलन में ॥ मो



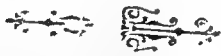
[न.] गल्ली आनंद गंगल छापे भगवान अयध में आये । सखी नृप वरारथ की पोरी रघुनंदन खेले होरी ॥ टेर रंग सुरंग के साट भराये, केसर नागर घोरी । भर मारत कंचन पिचकारी, देन सलिन को घोरी ॥ इत ठांडे रघुवर रघुनंदन उन श्री जनक क्रिशोरी । चन्द्र ज्ञानवन सद्वियन के सँग, राम सिखा वर जोरी ॥ ६. बाजन ताल सृगंद भाँज डफ, शोर नगारन होरी । डारन अश्वि गुलाल कुम कुमां, केसर चंदन रोरी ॥ रघु. सुरपति सुमन देन सुरपुर से जैजैकार क्रियोरी । नय सपहल छापे विमान, कल गान करे सुर गोरी । अकन मये देखन हरि लीला, सुरज चन्द्र चकोरी । महिलों वरनी न जाय 'सुभाकर,' सौ आनंद भयोरी ॥ रघु०



चत्रा जाये गुजरिया मटकनी हां ।
 जो साजन नीके ढंग में—
 पिचकारो गोरे अंग में ॥ हां, होरी खेलो
 सब मिल कर गोरी । दिनन की थोरी थोरी ।
 वन सुन्दर भोरी । लगी सब खेलन होरी ।
 भिजोई सारी रंग में ॥ हां, होरी
 चारासा जोवनवा की विली कलियां ।
 पाई, फूलन सी रखीली छतियां ।
 गोवू नारंगी चोली तंग में ॥ हां, होरी
 न सनाओ, रिझाओ लुभाओ जिया ।
 आओ २ लगाओ हिया स पिया ।
 मदमाती मदन की उदंग में ॥ हां, होरी
 प्यारे नैना से नैना मिलाओ जरा ।
 होवे मन का कमल जो "सुधाकर,, हरा ।
 मै तो हारी जोवनवा के जंग में ॥ हां, होरी



[तरज] होली खेलें सीता राम ।
 होली वजरंग वाजा की । टेर
 पवन तनय अतुलित बल विक्रम कठिन कराला की । हो
 श्री रघुपति के प्रेम रंग को वसंत मन भायो ।
 असुर दलन को रुधिर रंग लंका में बरसायो ॥
 जय जय अछनी लाला की ॥ होली
 राम रजा सुन खेलन होली दक्षिण दिशि धावे ।
 रावण पुरी जला होली सम सीता सुधि लाये ।
 जय जय सङ्कट टाला की ॥ होली
 कंचन वरणी देह "सुधाकर,, विकट वीर पाई ।
 रोम २ में राम २ की मूरली दिखलाई ।
 जय २ भक्त विशाला की । होली

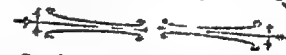


[त.] पिया नहीं आये सखी ऋतु फगन मास की आई ।
 सखी री काह कहुँ तो से मोहन की निठुराई । टेर
 मैं जमना जल धरन गई तहां ठाड़ो कँवर कन्हाई ।
 दोरके गागर फोरदई मोरी, बैयां पकड मुरकाई ॥ स.
 कहन लगे तुम कौन की गोरी हो भोरी सी देहु वताई ।
 नवल जोवनवा पे कान्ह वेदरदी ने ध्यानके वाँह चलाई ॥ स.
 अंगिया मसक मोरी चुरियां करक गई वेसर लट डरभाई ।

सर्वाधिकार स्वाधीन लेखक हैं

वाके कपोत भये कजरा युत हमरेट्ट वीक लगाई ॥ स०
 कर वरजोरी कंचुकी तोरी चूनर कीन्ह पहराई ।
 श्याम "सुधाकर,, हरिनट नागर भुज भर कंठ लगाई ।

[त.] पढ़ो मन भागवत गीता, भजन विन रह गया रे रीता ।
 श्याम संग कर २ वरजोरी ।
 सखी मव खेल रही होरी ॥ टेर
 हाथ ले कंचन पिचकारी । कृष्ण जी रात्र पर मारी ।
 भीज गई अंगिया गुल सारी । हुंसे मनमोहन बनवारी ।
 केसर रंग गुलायके करत सखिन सूँ जंग ।
 ग्याल बाल मिल ताल बजावें गावें फगावा व्यंग ॥
 सुनावें गारो लज ग्योरी ॥ श्याम सँग
 खडौं उत श्री राधा प्यारी । संग ब्रज गोपन की नारी ।
 उठाकर केसर रंग झारी । झपट झट मोहन पर मारी ।
 अविर गुलाल का थाल ले सुन्दर परम रमाल ।
 नंद नान जो रा मुवडा ऊपर, सखीजन देत उझाल ।
 डार रही कुम २ भर गंगारी ॥ श्याम
 वाज रही मुरली चंग मृदंग । डोल डफ सारंगीकेसंग ।
 घोटकर छान रहे कोई भंग । सुहावत अजब अनोखे ढंग ।
 वृन्दावन रे मांय ने, कुल गलिन रे बीच ।
 भांति २ का रंग बरस रखा, मच रखा केसर कीच ।
 रपट बर गिर गई एक गोरी ॥ श्याम
 देव सब देखण हित धाया । गगन सज २ विमान छाया
 अमित वरशण कर सुख पाया । फूल नटवर पर बरसाया ।
 ऋषिमुनि जन भी मोह सूँ भूत गया निज ज्ञान ।
 छूट गयो कलाश ऊपरे, शकर जो को ध्यान ।
 "सुधाकर,, लख लीला तोरी ॥ श्याम सँग



[तरज] सखी होंगे श्राज जलो, चाहे काल ।
 सखी होरी खेलन के दिन आये ।
 मेरो पिया विन जिया बवराये । सखी
 नव पलव कुसुमावली फूली जीरण पात भराये ।
 नूतन लता छई वृत्तन पर, नूतन कमल खिलाये ॥ स.
 जोवन सचन बनी फुलभारी, निवुवन पर रँग ध्राये ।
 अँवुवन डार पे कोयल बोले, चातक पिव २ गाये ॥ स.
 चारों जोवन मोरी तरुण उमरिया मदन किलोर मचाये
 कसुमल अंग पे सरस "सुधाकर,,—
 रंग सुधा बरसाये ॥ सखी होरी

प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस डॉक

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀
रसीली होली



❀ रचयिता ❀
श्री गिरधरदास बोहरा काव्य "सुधाकर"
[कन्नर] टोक (गजस्थान)

❀ कविता ❀

धान धान शान देखो नैनन के धान देखो मैंनेँ वमान देखो हवन प्राण आतुरी ।
योवन उफान देखो कुचन को उठान देखो अधरन पर पान देखो मृसक्यान अति साधुरी ॥
अलकन महधान देखो अन्निगन गुञ्जान देखो सुन्दर नोजवान देखो शोभाखान चातुरी ।
सुधाकर, समान देखो मायाकी धान देखो भोग को भिधान देखा मत्तान नी पातुरी ॥

❀❀❀

[तरङ्ग] उत्तर म्हारो कीट्टो धो जाहू नाग छैन ।
मैं, किणु सँग होरी नेनूँगी मेरो श्याम वस्त्र परदेस ।
मेरा मन रो दरपण तो इन्द्रियो कुवजाने देकर देख ॥ मैं ०

मनो छौंड़ी कँवर बन्दाई ।
चेहरदी ने दया न आई ।
निरदई कती निरुराई ।

दाहरे दईरे उदी तनपर, मनमें धर्यो कजेल ॥ मैं ०

सब सखियाँ खेलें होरी ।
निज निज पीनय मैंग गोरी ।
कर कर हितमूँ वरजोरी ।

मोरीरे २ बड़कत छनियाँ, चिन्डा कहँ विपेग ॥ मैं ०

कर कर मोहन री हौंसी ।
विलभा लिया कुटिला दासी ।
वा सोतन सख्या नासी ।

ब्रजवासी २ तज दीनो ब्रज बगुगया अत्र मधुरस ॥ मैं ०

थे छौंढ गया वन माली ।
वो मैं भी 'सुधाकर, चाली ।
पी प्रेम सुधा की प्याली ।

आलीरी २ निरस्युँ वन वन कर जोगन का प्रेम ॥ मैं ०

❀❀❀

[तरङ्ग] श्रीजी जैसे कायल करे पुकार, मोठी सी मैना वाने ।

श्रीप सखी रावे नंद कुमार, कुञ्जन में खेलें होली ।
श्रीजीहन ब्रज को सुन्दर नार उत्र ब्रज गोपन की टोली ॥

भर केसर रँग पिचकारी ।
रावेजी का श्रँग पर मारी ।

श्रीजी तव श्री तपमानु दुनार सुसका कर उनसे बोली ॥

श्री, नटवर निडर मुरारी ।
सब भीजगई गुल सारी ।

श्रीजी नदारी चूनर गोटा दार मसकागई तन की चोली ॥

मन्दी ईस ईस फागा गावें ।
गद मानी शोर मचावें ।

श्रीजी जैसे कायल करे पुकार, मैना ने बाखी ब्योली ॥

इन सरस चाँदनी छाई ।
उन श्याम घटा शरमाई ।

श्रीजी दोऊ त्रिभुवन रा उजियार सूरनियाँ भोली भोली ॥

कभी ग्याल गुलाल उड़ावें ।
कभी सखियाँ रँग वरसावें ।

श्रीजी मँवरन के चनेँ कटार नैनन सँ मारें गोली ॥

छवि किस विध वरणी जाये ।
जहाँ सुन्दरता सकुचाये ।

श्रीजी त. ई चमके चंदा चार, महिशा नहीं जाय सतोली ॥

जब श्याम 'सुधाकर, हरसे ।
तब रुदियन में सुख वरसे ।

श्रीजी धन प्रेम मिलन धन प्यार बोलन में मिसरी बोली ॥

❀❀❀

[तरङ्ग] शंवन यो दिन चार बुझाओ जल्दी आगो ।

आयो फागन मास श्याम की मुख कछु नहीं आई ।
कुवजा ठगनी नार लिया मोहन ने विलमाई ॥

सखी वंद्याम हमारे आता ।
नित होरी में रोल मचाता ।

वंसरी नई २ तान मुनावा—
सजन रसिया ब्रज मुख दाई ॥

कुवजा ०

भर २ केसर रँग की गगरी ।

ग्वालन वरसाने की सगरी ।

नवल लाल ने पकरि—

रँग देती दर आई ॥ कुवजा०

तय सखी लाज भरी दे गारी ।

मोहन कँवर कान्ह बनवारी ।

चूनर रँग में चारो—

प्यारी अँग लिपटाई ॥ कुवजा०

हिबड़ नेह 'मुधाकर, साले ।

पड़गई नितुर श्याम के पाले ।

तन में हूक प्रेम की चाले—

उदासी मन में घन छाई ॥ कुवजा०

ॐ

[तरजू] पतली कम्मर ऊपर सोहें ए मुन्दर नार धागरियो ।

देखो मारग में वरजोरी नंद कुमार की जी ।

गुजरी कहे करो मत छेड़ पराई नार की जी ॥

मोहन क्यों इतना इतराओ ।

सखियों देख देख मटकाओ ।

बालत घूँगट खोल दिखाओ अदा मिंगार की जी ॥

लाला अटपट बचन न बोलो ।

पट भट मन घूँगट रा खोलो ।

मानो सुरत करो मत नाहक में तकरार की जी ॥

हँस कर चंचल छैल कन्हाई ।

ग्वालन पकर अँग लिपटाई ।

सुलता बाल लीला ललचाई ललित विहार की जी ॥

भर भर केसर रँग पिचकारी ।

तक २ नवल कुचन पर मारी ।

'गिरधर, कान्ह भिजोदई सारी चुनर सुकुमार की जी ॥

ॐ

[तरजू] मैं न ममक २ बाणी बोल गोरीरा पिया गजकरमे ।

प्यारी राधा रा राजन रिभाय होरी खेलोरी कुञ्जन में ।

गारी गावत माजन सुनाय गोरी मिल मधुवन में ॥

पिया प्यारी रे गोरे २ अँग रँग लारे री नैतन में ।

सोहे ग्वाल बाल सब संग समकावे री सैनन में ॥

ललिता भौरी में अविद गुलाल लियो ठाड़ी सखियनमें ।

वाजे ताल मजोरा मुरली चंग राजे आलीजा सवनमें ॥

देखो युवतिग रा हिबड़ारी लसंग मोला त्वावेरी जीवनमें ।

माने नाहीं कन्हाई करे गेर कच्छ हेरे कुचियन में ॥

लाग्यो - सखी री नयो नेह मन मेरो री मोहन में ।
लाला आओनी म्हारे नैणों माँय थाने राखूँ पलकनमें ॥
थाँकी बंभी री सीठी २ तान खाँवल त्वाले म्हारा मनमें ।
बाँकी बाँकी 'मुधाकर, थाँकी देख मैतो छाई उलकनमें ॥
प्यारी राधा रा राजन रिभाय होरी ०

ॐ

[तरजू] मुकटधर महर का साँवरा ।

भरन रँग लागी राधा प्यारी जी ।

ले सखियन ने संग जी ॥ भरन रँग लागी ०

श्याम मोहन कर सोहे विचकारी जी ।

मारत गोरे गोरे अँग जी ॥ भरन रँग लागी ०

इत ललितादि मय सोहें ब्रज नारी जी ।

इत मन मोहन उमँग जी ॥ भ न रँग लागी राधा ०

अविद गुलाल भोरिन भर सारी जी ।

डारत मुख ब्रजचंद जी ॥ भरन रँग लागी ०

गावन विहारी अँग सदा मुख कारी जी ।

वाजे मजोरा मुरली चंग जी ॥ भरन रँग लागी राधा ०

नीखा तीखा नैणा में कजरा री शोभा भारी जी ।

धिंदली लिलवट पर कररही दंग जी ॥ भरन रँग लागी ०

अचरा न झूयो कान्ह दूँगी नातर गारी जी ।

माना मचाओ नहाँमूँ जंग जी ॥ भरन रँग लागी ०

मानो जी मानो म्हारी मानो 'गिरधारी जी ।

खोलो ना अँगियो रा बंद जी ॥ भरन रँग लागी ०

ॐ

[तरजू] म्हारा नया नगर की नठायी ० [रनिया]

होरी गेजण ने नंदलाल बना म्हारे महल पधारो जी १

केसर रँग चूँ भर भर गगरी ।

ठाड़ी ग्वालन सिर धर सगरी ।

नवल नागरी उमँग भरी ॥ म्हारे महल ० ॥१॥

अविद गुलाल से भर भर भौरी ।

वाट निहार रही सब गोरी ।

मैं अरज करूँ कर वर जोरी ॥ म्हारे महल ० ॥२॥

निरंछी चितवन से मत भाँको ।

नवल नार को जोवन बाँको ।

ये, मारग में मत चाखोजी ॥ म्हारे महल ० ॥३॥

मोर मुकुट पित्तान्वर धारी ।

श्याम 'मुधाकर, कृष्ण मुरारी ।

थाँकी बंसरी कानगगारी जी ॥ म्हारे महल ० ॥४॥

ॐ



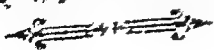
[न.] मन्म महानो कर्म ह्यो पीतम की शाल्युं आवेद्ये
दो वयो ववराये छे ।

आश्रो न सांवरिया मन मोहन मदन सुरांग जी—
नटवर गिवर धारी जी ।
धाने सांको याद मदी कुञ्ज में राया धारी जी ॥ नट.
सुर २ सुवदा कर चमके चन्द्र दजारी जी ।
मोर सुकृष्णोनाम्बर कुण्डल किल्ली री अदिन्यारी जी ॥ न.
कमल २ अदियां सुन्दर मनहर कामण गारी जी ।
बाने द्वियदा मांय नजर की निश्चो कठिन कटारी जी ॥ न.
नतमन धन जोधन नवियन को जोधन धन पर धारी जी ।
चंद्र वदन मनहरन धरन अचने मुली मु व धारी जी ॥ न.
शान्त जियो धिन च द्रत चरता निरनरन चरु नुम्हारी जी ।
बाणी सांचो प्रीत द्वियासे अत्र नदी जाय विनारी जी ॥ न.
बाल कमल में अज करेके थांको प्रेम पुजारी जी ।
दुर्गा देगे गोपाल "मुवाकर," श्री ब्रजराज विशारी जी ॥
नटवर गिवर धारी जी



[नरज] इन्नां म्हारा मुग्गयो जी ।

रंग भर लाई जी ।
रंग भर लाई जी म्हारा में खेतन हारी अई जी ॥ न.
तरुण अमरिया मोला वरमयी ।
कोमल कुचियां भरगई रमकी ।
नांय जशानी वषकी मजन, जांवन नहराई जी ॥ रंग ०
में मम्नानी नर नवेली ।
मदन द्विवानी धन अलवेली ।
चंचल चपल सहेली चतन चितवन चनुराई जी ॥ रंग ०
नीले नैना भीह कटारी ।
कोकिल कंठ मधुर मनहारी ।
श्याम मुव सुकृषारी, सुवत सरोवा सरोवाई जी ॥ रंग ०
श्याम, "मुवाकर," कृष्ण न्हाई ।
किस कारण पिया वंसी बजई ।
सांच केश समझई याद क्यों दामी अईना ॥ रंग ०



[तरज] सांच्याई म्हारा मांयमा रंग लाग्यो ।
सांच्याई म्हारा सांवर रंग लाग्यो ।
बानो द्वियदा रो धोकां पण भाग्यो ॥ रे सांच
आश्रो २ जी सजन, म्हाने देयो दरसन -
आ मोहन म्हारा सांवर रंग लाग्यो ॥ सां०
चंद्र थारं चांदणे रे तडी निहाळ गेल ।
सांचो कददे लाडला कद आर्मी म्हारा छेल ।
वांका मीठासा वचन, करे दुख ने दमन -
वन २ म्हारा सांवर रंग लाग्यो ॥ सां०
गैन नुम्हारी सांकरी जी कठिन मितण का जांग ।
किस विद् आऊं जी, पिया छे चुगती खाणां लोग ।
गरगायो जी जावन, नन धायो जी मदन -
गुल वदन थो सांवर रंग लाग्यो ॥ सां०
आश्रो म्हाके पावणां जी पीतम प्राणा धार ।
आलांजा के कारणे में छोदयो सब संसार ।
धामू लागी छे लगन, म्हारा मन छे मगन -
लो मचन म्हारा सांवर रंग लाग्यो ॥ सां०
पूरां धाने साहेवा जी कहा 'मुवाकर, वान ।
व्यों रावी छी सेज में थे क्यों छिटकायो हाथ ।
म्हारा सुख रा सदन, जरे लिया में अगन -
थांके धिन म्हारा सांवर रंग लाग्यो ॥ सां०
जांवनवा ने कैसे कैसे जुतमवा डाये ॥
दिन रैन रो सजनी चैन ना, पिया, धिन आये ॥ जांवन.
मारी जांवन फुलवारी में पान फूल सर साये ।
निवुधन से नारंगी वनगई कृणु वसंत रही धाये ॥ जो.
कलियन को मुख भंवर चूमै कांयल गीत सुनाये ।
चातकनी वैठी चिन्तामें चद्र विना दुखप्राये ॥ जो.
पो.पो. रटन पयैया पापी पिय की याद सनाये ।
देख देख मूनी सेजरिया, छाती फट फट जाये ॥ जो.
चंचल नैना धूंगट्टहा में धूम धूम ववराये ।
माली केमन प्रीत नहीं वहां जल धिन वागमुवाये ॥ जो.
कासे कइ विरड की वनियां कोन सुने चितलाये ।
सांचो जान 'मुवाकर, पनियां लिल लिज हाथ काये ॥

[तरज] लेल्यो २ जी सरवजो मजादर—

जहरीली घुटवाइ रे, म्हारा श्याम ! भांगइली ॥
जोरोसू क्यो पाइ रे, म्हारा श्याम ! भांगइली ॥
मना किनारे भरवा, पाणोडो आई रे ।
लेमां रे भोले कान्हां, थांसू वतलाई रे ।
नैणा में गरणाइ रे, म्हारा श्याम ! भांगइली ॥
सासू लडेली म्हारी, करस्युं अत्र काई रे ।
नणदल रा वीरा कहसी, कुणसू उलमयाई रे ।
म्हाने मनगती र वण्ड रे, म्हारा श्याम ! भांगइली ॥
सुण र मुरली री घुन में मोइन विलमाई रे ।
मीठा मधुरा बोलणमें, लालन लज्जाई रे ।
म्हारी नस र में सरणाई रे म्हारा श्याम ! भांगइली ॥
ओ-जी "सुधाकर,, प्यारा नटवर नैदराई रे ।
कीन्ही थे ओगणगारा म्हांसू निठुराई रे ।
म्हारा जोवनियां पर छाइरे म्हारा श्याम, भांगइली ॥
आछी जहरीली०

[तरज] जोवन,यो दिन चार बुडापो जल्दी आवेगो ।
म्हाने दे दे कर विश्वास श्याम सोतन घर जाओ छो ।
कंठां हाय लगाकर भूँटी सेगन खाओ—छो ॥
कहो सांची नंद लाला । लगी पृच्छन ब्रज वाला ॥
मुकुट धर रूप रसाला । अधर मुरली रर माला ॥
त्रिभुवन पाला रखशाला, जग नाथ कहाओ छो ॥ कं०
हैं अरुण नैना कपोलन पर जो लाली पान की ।
रख काजल और मिस्सी भी लगी अनुमानकी ॥
पाग लटपट चाल डगमग सी है रैन जगानकी ।
देत चितवन सूचना वैरण के सँग रति दानकी ॥
कर म्हांसे अनरीत किमीसे प्रीत लगाओ छो ॥ कंठा०
बस कर लियो पिया थाने एक दासी ।
विलम गया थे मन हर सुख रासी ॥
कहत वनत नहीं कछु ब्रज वासी ।
इत घनो दुख मोहिं छत घनी हांसी ॥
कर कुञ्जा सँग भोग जोग म्हाने समभाओ छो ॥ कंठा०
अत्र म्हे जाए लई जो प्यारा । थे छो पूरा कामणगारा ।
ब्रज वासिन से होकर न्यारा, नाम राधारो लजाओ छो ॥
निठुर नटवर वनवारो, "सुधाकर,, कृण मुरारी ।
मनहाते गिरधारी कष्ट की वान बनाओ छो ॥ कंठांहा.

नोटः—सर्वाधिकार मरचित है ।

[तरज] तीखा २ नेना सूं म्हाने मारो मत ना ।
काई जादू करदीनो मोहन ओल्युं थांकी आवे ।
कामण गरी मतवारी थांकी चितवन जीव लुभावे ॥
थांका सांवलडा सा मुखडा उपर मुरली की शोभा ।
थांका तीखा २ नैणा सुन्दर लागे छे चोखा ॥
वाही वांकी म्हांकी तो वैरण म्हांको जीव जलावे । का०
म्हंतो पाणोडो भरवाने जमना सरवर जाता ।
मारग माहीं सांवरिया म्हांके सामां थे आता ।
वांका निरञ्जा नैणा सूं क्यो नटवरिया सैन चलावे ॥ का०
माखन मिसरी खावाने थे कुञ्जन में आवे छा ।
धर गल वैयां जमना पर म्हांसू रास रचावे छा ।
भोली २ मुरतियां पर म्हांको मन लल चावे ॥ काई०
आओ २ जी साजन सताओ मतना ।
छवि थांकी अनोखी ने छुपाओ मतना ।
थांकी प्यारी अनुराधा पीतम थां विन प्राण गुमावे ॥ काई०
मानो २ "सुधाकर,, प्यारा दासी री चिन्ती ।
उवी जोऊं वाटडल्यां रेखां हाथारी गिनती ।
म्हारी वारी उमरिया जोवन, वीत्यो जावे ॥ काई०
[तरज] म्हारा छैल भँवर रो क्रांगसियो पातरियां लेगइरे ।
थांकी वंसरी सुण कर आइजी मुरारी में माधो वनमें ।
थांकी मेघ वरण छवि छाइ जी विहारी म्हारा नैननमें ॥
थांकी वंसरी सुणकर० टेर
में ग्यालन जोवन मड मानी ।
गोकुल सूं वृन्दावन जाती ।
थाने माखन श्याम खयाती जी नित आतो कुञ्जन में ॥
लागी लगन म्हारी कान्ह कँवर सूं ।
काम नहीं कछु अपणा घरसूं ।
में तो प्रीत करुंली गिरधर सूं याही बसगई तनमन में ॥
मन मोहन म्हारा पीतम प्यारा ।
जीवन घन छो नैनन तारा ।
पण दीग्या थे कामणगारा जी विलमालई सैनन में ॥
चैन नहीं पिया थांविन आवे ।
घड़ी घड़ी वरसां ज्यां जावे ।
म्हारी अखियां नीर वहावे जी ब्रज वासी दिन २ में ॥
नट नागर गोवर घन धारी ।
श्याम "सुधाकर,, थांपर वारी ।
थांकी जव सूं सुरत निहारी जी में पढ़गई चलमनमें ॥



[तरज] लगी आम नुम्हारे दर्शन की-
थॉकी नेह लग्यो न्हारा सैनरमें, मनमोहन सुन्दर साँवरिया
थाने हूँ हकिरी सारा कुञ्ज नमें माधो वनमें नट नागरिया ॥
थॉकी नेह लग्यो०

थॉकी याद सनावे श्याम सदा ।
थॉकी चितवन रतन चली सुवशा ।
न्हारो छीः लियो रित थॉकी अदा ।
किहँ मरन मगन वन, वावरिया ॥ थॉकी नेह०
दाधि वेचणुने भिस आऊँ पिया ।
थॉका दर्शण कर सुख पाऊँ पिया ।
न्हारा मनमें न रुका समाऊँ पिया ।
थॉकी, मंदनदन सुख सागरिया ॥ थॉकी नेह०
आनंद वन मोहन वनवारी ।
जन जीवन गोवर धन धारी ।
कहँ तन मन थॉपर वक्तिवारी ।
ब्रज मृषण रूप राजागरिया ॥ थॉकी, नेह०
अब लागी सजन बांसु प्रेम लगन ।
न्हारा जियवदा में जल रदा गडरी यगन ।
माना साँच 'सुधाकर, न्हारी कहन ।
सुख मदन मदन गुण आगरिया ॥ थॉकी नेह०

[तरज] मजा देतेहैं क्या चार तेरे बाल धूँगरबाले ।
राधेजी का कर सिंगार बेणी गूँथन बेच्या माधो ।
तीनी लोकोँरा, भरवार, ज्यों का देखा प्रेम थगाथा ॥
तरह तरह का फूल मँगया ।
बाल बाल में गूँथ मजाया ।
कौंसियो ले लट सुलभाश पकड़ प्रीत तूँ काधो ॥ रा०
फूलन हार फूलन का सहना ।
फूलन साँग मरी सुख देना ।
बाजल रेख लगाकर नैना, श्याम करे अनुगाथो ॥ रा०
चमकें चँदा हन किलाटी ।
जिमपर सुन्दर पाड़ी पाटी ।
राधे कहै सिसक कः, गाँठो, मोहन धीरे बाँधो । राधे०

दरपण हाथ दे-र, गिरधारी ।
बोल्या सुण ब्रजभानु कुमारी ।
पूरण चंद्र सुखी नृ प्यारी और 'सुधाकर, आबो

[तरज] रंगरी सेजा में भूल्याहै सा न्हारा-
थॉका दरमण करवा आइजी, न्हारा, साँवरिया गोपाल ।
थॉचिहँ माधन मिमरी ल्याइजी प्यारा भर कंचनरो थाल ॥
चंद्र सुकुट पर किल्लंगी मोहँ कुण्डल रतन विशाल ।
दायाँ रुदला पग पैजनिथोँ उर वैजन्ती मात ।
मोहन नुरली अजब मजाइजी धर अवरन पर परं रसाल ॥
श्याम वदन पर सुरंग पीताम्बर नील कमल सा गाल ।
ज्याँपर रतनाग आभूषण, धूँगर वारा बाल ।
चंचल नैगा में अरुणाइजी, मृग मद सोहै सुन्दर माल ॥
कुञ्ज गानिन रे साँच सुगरी हिल मिल गोपी ग्याल ।
ब्रज वानी थाने नाच नचावे, हँस दे दे ताल ।
मैं तो देव २ मुख पाइजो छो गोविंदा थॉको ग्याल ॥
मारग जानोँ, धेनु चरानोँ, निरगुँ थॉकी चाल ।
वंसी बजानोँ, गीत सुणानोँ, होजाऊँ बेहाल ।
मोहन लीलापर ललचाइजी 'सुधाकर, कँसी प्रेम के जाल ॥
थॉका दरमण करवा०

[तरज] मैं सरीरे २ राम दरद विचू-
थे आबो न्हारा श्याम मोहन वनवारी ।
आलीजा न्हारे गाम, गोवर धन धारी ॥
थॉकी हरदम याद सनावे ।
न्हारो जीव धणो दुख पावे ।
नित नैना नीर वहावे ।
ललचावे लीलाधाम लगन थॉकी प्यारी ॥ थे०
थे प्रीत लगाकर प्यारा ।
क्यों ? होगया हमसे न्यारा ।
नट नाग नन्द हुलारा ।
थो कामखगारा श्याम साजन सुख करी ॥ थे०

पहल्याँ तो थे आवेछा ।
कुञ्जन में मिल जावेछा ।
म्हारी माखन भी खावेछा ।
आवेछा लेले नाम सोहनतन, गारी ॥ थे आ०

अब अरजी मुणो, मुधाकर, ।
दासी पर करुणा लाकर ।
मैं तन मन वारूँ थाँपर ।
रूँ चरणा चाकर श्याम मदन मनहारी ॥ थे०

❦

[तरज] मोरी बांकी नजर या सौँवरिया सूँ लागी ।
मानो मानो सौँवरिया सोहन बनवारी । मानो०
कैसे नानू गुजरिया योवन सतवारी ॥ कैसे०

रँग डारो ना मोपे प्यारा सौँवरा सजन ।
जाडा लागे जी कांपे मेरो नाजुक वदन ।
भोली भोली सुरनिया उमर मोरी वारी ॥ मानो०
लचकावे लजावे मुमगावे मङ्गी ।
चित मेरो चुरावे यह पायन वजनी ।
बल खावे कमरिया नागन जैसे करी ॥ कैसे मानू०

मेरा वारासा जोवन पे ना भारो अग्नियों ।
छोड़ो र जी चुनर नाही छूयो कुचियाँ ।
हठो छौँडो डगरिया नातर दूँगी गारी ॥ मानो०
जादूगारी जवानी तोरी नाही बसकी ।
कारी अँगियाँ में भूमे दो नारंगी रसकी ।
गोरी गोरी वैयाँ रो छवि लाने प्यारी प्यारी ॥ कैसे०

मैं तो आई भएन जल जमना ने तट ।
मत छेड़ो ना खोलो मेरा मुखरो बूँगाट ।
काहे साँडी भगरिया, ओ निपट अनारी ॥ मानो०
मेरो लागे योवन कर इस मग रो ।
दूरी धरदे ग्वालन या माथा री गगरी ।
तोरी बाँकी नजरियाँ री लागी री कटारी ॥ कैसे मानू०

म्हारी विन्ती 'मुधाकर, जो नाही मानोला ।
गेले जातौँ विहारी हठ भूँटी ठाणोला ।
तो मैं मैया जसोदा से कहूँगी गति सारी ॥ मानो०

❦

[तरज] मारा मायोसिंह के नजर लगी—
आओ र प्यारी लाड कुँवरि रा चाव—
एए हाँजी उमराव म्हारी राधा वाइ रा नवल पिया ॥

आई आई थाँके सब मिल द्वार—
एए हाँजी सिरदार खेलण होरी रँग रसिया ॥
चालो र प्यारा कुञ्जन रे माँय सवन वन माँय—
गागर रँग भर रखिया ॥

डारूँ डारूँ थाँपर अवीर गुलाल—
एए हाँजी नंदलाल सोहन तन मधु हँसिया ॥
बाँकी बंमरियाँ री मीठी मीठी तान—
एए हाँजी प्यारा कान्ह मोहन म्हारे मन बसिया ॥
लेस्यूँ लेस्यूँ थाँका मुरली पट छीन रहोला आधीन—
मग्नि विच आय कैमिया ॥

मानू र नाही थाँकी कान्ह एक तजूँली नहीं टेक—
कहोजी अब कैसे बचिया ॥
बाँकी सौँवरी सूरत वारो भेस—
एए कारा कारा कस चुरावे चित 'गिरधरिया, ॥

❦

[तरज] मेवाड़ा राणा गिरधर सँग लागी म्हौँकी प्रीत ।
नखराली राधा थारा नैणा में ऐसो काँई ए ।
सुए प्यारी थारा कइणा में मोहन कुँवर कन्हांई ए ॥

निकसी घर से गुजरी सिर धर गगरी रँग भर सगरीए
प्यारी, लालन पर अवीर गुलाल उड़ाई ए ॥ न०
चंचल चंद्रा वरणी जादूगरणी तन मन हरणी ए—
प्यारी, ब्रज धन पर चितवन अजब चलाई ए ॥ न०

श्री ब्रजभानु दुलारी ललिता नारी संग सिधारी ए—
प्यारी, गारी मोहन ने सुधर सुनाई ए ॥ न०
वोले अटपट बोली खोले चोली करत ठिठोली ए—
प्यारी, भर र तन ग्वालन अँग लिपटाई ए ॥ नख०

मानो 'मुधाकर, मानो हठ मत ठानो बोले कान्हो ए—
प्यारी, होरी खेलण में क्यों शरसाई ए ॥ नख०

❦



दोहा:— द्वार खड़ी नव नागरी ले कलसन में रंग । होरी खेलो सांवरा ब्रज युवतिन के संग ।

[त.] पतन्ती कम्बर ऊपर सोहे पमुन्दर नार घागरि यो ।
मुन्दर ओढो ए पतिवृत धरम सनी अनमुइयां सो सारो ।
रन गया जिस सारो में श्याम मनोहर मोहन बनवारो ॥

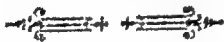
मुन्दर ओढ सती को सारी ।
पतिवृत धर्म ही लजा धारी ।
शोभा करसी सब नर नारी ।

रात्रो परपुरुषां की शरम करो म । अगुम क्रम प्यारो ॥
कुमती मन से दूर निकारो ।
सुमती से सब अंग सँवारो ।
शीतलता को सुमो, सारो ।

समके अरणाहितको मरम सुजारो अवगुण सब भारी ॥
भीणो ओढ न अंग दिखारो ।
वायल मलमल ने विसराओ ।
खादी पहिरो मत शर्मओ ।

बोझो मीठी मधुरी नरम सभी से कोमल मन हारी ॥
फाटा मत ना गायो गीन ।
या नही थांका कुलकी रीत ।
देख्यां देख न करां अनीत ।

ईमें लोग भरेंछे, मम "सुधाकर", गावे यों गारी ॥



[तरज] मजा देते हैं क्या थार तेरे बाल ध्रुवर बाले ।
हटीली दे जौवन रो दान कान्ह यों ब्यालन सों फरमावे ।
रगोली रंगवांनी नादान झवीजी क्यों मन में शरमावे ॥
वारो जौवन वारी उमरिया ।
मृग लोचन मतवारी गुजरिया ।

गोर मुख पर श्याम चुनरिया मारे नैना वान—
अश्रु सों भोह कमान चलावे ॥ हटीली ०

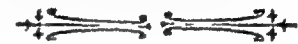
तू नित गोरस बेचन जाती ।
लचक मचक हँसती सुसकाती ।

अश्रु चपल उधाडी छाती मद माती मस्तान—
कमरिया नागन सी वल खावे ॥ हटीली ०

चाले चाल अजब अलवेली ।
नाजुक नखरादार नवेली ।
करे गजब छिंदगारी छैली जुलमण जवर जरी
कटक एही अचरा उछलावे ॥ हटीली ०

नकवेसर में चमके मोती ।
जैसे ध्रुव तारा की ज्योती ।
पीर अधिक हिवडा में होती हरती तन मन प्रान—
माननी मोह को जाल विश्वावे ॥ हटीली ०

वरसे नूर सरल मूखडा पर ।
उस विजली का सा टुकडा पर ।
देख रूप शर्माय (सुधाकर), भूले अपनो ज्ञान—
ध्यान एक पलभर में विसरावे ॥ हटीली ०



[तरज] जौवन यो दिन चार बुढ़ापो जलदी आवेगो ।

म्हारा प्यारा पीतम नवल लाल मन मोहन सुख रासी ।
थाने निरदर्ई नन्द कुमार मोदलियो चैरण एक दासी ॥

प्यारा किसविध आँस लगाई—
ब्रज गोपियन से कर चतुराई ।

राखे किस विध श्याम भुलाई—
चन्द्र मुख चञ्चल चपलासी ॥ थाने निरदर्ई ०

ओल्युं जिस दम थाँकी आवे,—
छाती भर भर जिय घवरावे ।

अखियाँ हरदम नीर बहावे—
प्रेम रस दरसन की प्यासी ॥ थाने निरदर्ई ०

पहल्यां प्रीत लगाकर प्यारा,—
अब क्यों होगया हमसे न्यारा ।

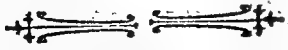
म्हारा नैण विचला तारा—
कामणगारा ब्रज वासी ॥ थाने निरदर्ई ०

वा एक निरलज ठगनी नारी—
फुवजा कुण्डल कुरुप गँवारी ।

ठग लियो मोहन श्याम विहारी—
बुरी सोतन सत्यानासी ॥ थाने निरदर्ई ०

कहतां आय "सुधाकर,, लाज,-
समझो मन का मन में काज ।

न छोड़ गया जी ब्रजराज—
क्री डाल गले फांसी ॥ थाने निरदई०



ज] सगीजी जान मानजा कहयो नैणा मारी ।

गिरधारीलाल आवजो हठीला राज म्हांके ॥ टेर
आवो मोहन वनवारी । निरखत हम वाट तिहारी ।
तन मन धन सखि जन वारी । कर कर सब तुमपर हारी ।

आवो २ नँदलाल । ठाडी सब ब्रज बाल ।
होरी खेलन थांके ॥ १ ॥

आई मिल ब्रज क्री गोरी । क्रोमल अंग भोरी भोरी ।
केसर रंग गागर घोरी । खेलण ने तुम सँग होरी ।

चतुर चलत चाल । गज गमनी विशाल ।

चंचल नैना बांके ॥ २ ॥

खेलत सब सखियां नीकी । लिलवट पर धर शुभ टोंकी ।
लागत चंदा छवि फीकी । सुध बुध विसरत है जीकी ।

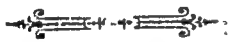
रही दर मणि माल । मधु मुरली रसाल ।

चितवन तिछीं भांके ॥ ३ ॥

वाजत मुरली मधु वन में । नाचत नटवर कुञ्जन में ।
बरसत रंग सचन चमन में । हर्षित मन सदन सदन में ।

कहत न वने हाल । ऐसो प्रिये भयो ख्याल ।

सुमन "सुधाकर,, टांके ॥ ४ ॥ गिरधारी लाल०



[तरज] लहरद्वार वीछूडो ।

हां नटवर नागरिया !

या थां दिन होरी आइरे आग लगाई ओ साँवरिया ।

क्यों श्याम हम विसराइरे नवल कन्हआई ओ साँवरिया

आप तो जाय हरि मभरा में छाये ।

लियो वा वैरण विलमाई रे साँवरिया -

लियो वा वैरण विलमाई लाज गँवाई ओ साँवरिया ॥

म्हाने जोग भोग कुञ्जने ।

लिख २ पतियां पहुँचाई ओ साँवरिया -

लिख २ पतियां पहुँचाई दया न आई ओ साँवरिया -

विरह गुलाल उदत जियरा में ॥

नैनन से रंग वरसाई रे साँवरिया -

नैनन से रंग वरसाई नीर बहाई ओ साँवरिया ॥

जो थाने विछुरन छे लाला -

फिर नाहक प्रीत लगाई रे साँवरिया -

फिर नाहक प्रीत लगाई जान जराई ओ साँवरिया ॥

मोहन नाम लजा राधा को -

कुञ्ज रा कृष्ण कहाई रे साँवरिया -

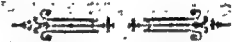
कुञ्ज रा कृष्ण कहाई कहा मन भोई ओ साँवरिया ॥

जिव धवरात "सुधाकर,, मेरो -

पर थाने दया न आई रे साँवरिया -

पर थाने दया न आई सुध विसराई ओ साँवरिया ॥

हाँ मोहन नागरिया०



[तरज] भरन रंग लागी राधा प्यारीजी ।

मुकुट धर महर कारे साँवरा ॥

नन्द को कहुँ कि वसुदेव को रे साँवरा ।

दोय वापन को जाम रे ॥ मुकुट०

एक माय थारी देवकी रे साँवरा । दूजी जसोदा माय रे ॥

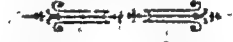
गोरा ई वसुदेवजी रे साँवरा । गोरा ई चलराम रे ॥

श्याम वरण कैसे भयो रे साँ- जाको ठीक न ठाम रे ॥

जमना तट वसी वजी रे साँवरा । मोथा छे तीनो धाम रे ॥

हिल मिल गारी देगयो रे साँवरा । ऐवी गोवी नाम रे ॥

पद्मैया की वीनती रे साँवरा-सुणव्यो "सुधाकर,, श्याम रे



[तरज] केसरिया थांका नैणा में लाली जी ।

साँवरिया प्यारा क्योंकर आऊं रे । पणहरि थारी-

चितवन ने तन मन सांय वसाऊं रे ॥ सां०

थारी वाटडल्यां लालजी, न्हालू रातडल्यां सारी ।

नेणा री नीडडली विसराऊं रे ॥ साँवरि०

सासू लडे छे म्हारी-थासू बोलण ने वरजे ।

सखियन से किस विध प्रीत छिपाऊं रे ॥ साँवरि०

नणदल रा वीरा मारे छडियां हर चडियां म्हाने ।

कुण २ ने किए २ विध समभाऊं रे ॥ साँवरि०

नेहा लग्योछे थासू गिरधर नटवर नँद लाला ।

चर्णा री शरण "सुधाकर,, पाऊं रे ॥ साँवरि०

प्रकाशक— भारत प्रिंटिंग प्रेस, टोंक (राज०)



[निरुद्ध] पग ही कि क-कृप व्याप कियो ।

ना ही निरुद्ध पग धार कियो ।

हरि जाय कुजनाई नैव करीजा पीद-
मर्वा विवा मेरो प्रेम विचार कियो ॥ पग ही ०

आली नयागी मोहन विवा दामी ने भजन-
मेरा प्राण ही जीवन रो उधार भयो ॥ पग ही ०

आंज आन लगे थे बलजाओ ही मोहन-
हारा जीवन रो वन पन मारि कियो ॥ पग ही ०

आँ पे विजली गिरे थे मन्जाओ जी वेरग-
महारा मानन ने नैव नूँ गार कियो ॥ पग ही ०

हो जी मेसी कोई आंके मन भाई चित आई-
जी ममाई दुमर दाई हो व्यक्तः कियो ॥ पग ही ०

महाने जावेजी जीवन कुमलावे जी वदन-
मन मोहन रो तन रो विचार नयो ॥ पग ही ०

आँ के महाने मेसी क्व की लड़ाई जी कलाई-
काई मेसे आँके हप्रने विचार कियो ॥ पग ही ०

महाने अद्विच में क्यो छिटकाई जी जलाई-
दुमपाई पललाई में लगाव कियो ॥ पग ही ०

महाने छाने २ अन्वियाँ लगाई जी रिमाई-
कललाई रंगो निगट गँवार कियो ॥ पग ही ०

कैसी सीठी २ बतियाँ बगाई जी मुणाई-
मन भाईजी सुधाकर प्यार कियो ॥ पग ही ०



। तरफ) महाने वारु २ होवे ए मा देसी वारो वार ।

महाने पग्लीहो भर लेवादे थोड़ी थी गगुगारा श्याम ।

छाँटी २ जी महारी ईहोली थाने सोमूँ छे काई काम ॥

थेनो र ग मथुरा का वानो में व्रज की छूँ वाम ।

थाँके महाने नाँव वगे जाओ थे कुवजा रे गाम ॥ म्हा ।

एक ही मात पिता की छूँ बेटी एक ही महारो नाम ।

दो मायह रा कँवर कदाओ थे दो बापाँ रा हो जाम ॥

उदल गई थाँकी बहल सुमरा अर्जुनजी के वाम ।

पूत जसोदा एक जगयो थाँका भाई कियो बलराम ॥

गौराई अनुदेवजी रे गौराई बलराम ।

म्यान वरना थोँ वदान हुयो लामा जी को छी-

आनन चौर नचैवा नचैवा वंसी बलैया उ-

थाँका वन की हीन वृषी, थाने दूर ही नूँ परमा

जाग अरेली कुमलारी थाने पाई 'सुधाकर, राम ।

गुल्चा चार वन सुवहा पर छूँ नही थाँके गुलाम ॥

महाने पार्लो हो



[निरुद्ध] महाने मेसी मे उठनारे वन रो गोरी वा वानस ।

महाने थारे मे चुड़लो पहिराओ रे जान-

ओ सनिहारण भायेली ।

गारी होमन वेगोँ छे पूत समान ॥ ओ सनिहारण ०

कौनमा देम की हो सनिहारण-

कौनमा गाँव में थारी दुवान ।

सैनकी छोरी कियोरी लजोरी ओ-

भांगी ० गोरी २ नादान ॥ ओ सनिहारण भा ०

नाजुक नारी थे मुन्दर चारी हो-

चन्द्र उजारी गो हप की मान ।

लाहली प्यारी कुमारी दुलारी सी-

कामगुनारी हो मोहन प्राण ॥ ओ सनिहारण भा ०

रंग उमंग रो चुड़ल थंग नूँ-

जीवन जंग सचाव महान ।

प्रेम प्रसंगरा दंग ने देख सही-

महं दंग में भूली रो जान ॥ ओ सनिहारण भा ०

चं बललाई वणी चिन दाई-

नहीं चानाई रो होय वदान ।

आन की आन में प्रात हरे-

थाँकी भाँह कमान सूँ नैनन वान ॥ ओ सनिहारण ०

थे सुख सागर लोक उजागर-

हो नद नागर कीना में ध्यान ।

ई भिम आकर आप 'सुधाकर, -

दीनो द्यावर प्रीन को वान ॥ ओ सनिहारण भा ०



उतार म्हारो वीहूड़ो ओ जाहूगारा छैल ।

या थाँकी बंसरिया में भूली म्हारो ज्ञान ।

पर नेवर पहर चाई मैं पग को नेवर जान ॥ सां०

बंसी की धुन प्यारी । तन मन की सुरत विसारी ।

मोहन श्याम बिहारी । नट नागर कृष्ण मुरारी ।

हारीरे कर गिरधारी थाँसूँ गरभ गुमान ॥ सां०

उलट पुलट करलीन्हो । तनको सिंगार नवीनो ।

जल में हिंगलू दीनो । हिंगलू में काजल कीनो ।

छीन्योरे २ साजन म्हारो । मनड़ो थे नादान ॥ सां०

मैं कुञ्जन बनकी छोड़ी । मट पट घवराकर दोड़ी ।

म्हाने श्याम मिल्या बरजोड़ी । अब आस जगत की छोड़ी ।

तोड़ीरे २ प्रीत मगासूँ, लाग्यो थाँसूँ ध्यान ॥ सां०

अब छूँ चरणां की दासी । मैं प्रेम लगन की प्यासी ।

निरखूँ छवि नित चंदासी । कहूँ सांच कहूँ, नहीं हांसी ।

ब्रज वासी २ सुधर 'सुधाकर, वारूँ थांपर प्राण ॥ सां०

❦

[तरज] कव आगोला कन्हैया म्हारे द्वार में ठाटी न्हाऊँ०

म्हारा नैणा में रमजाओ रे सुन्दर श्याम—

निहाऊँ थाँकी बाल छवी ।

म्हारा बैना में बसजाओ रे लोला धाम ॥ निहाऊँ०

मोर मुकुट पीताम्बर किलंगी कुण्डल सोहे कान ।

गले माल चैजन्ती सोहे, मोहे तन मन प्राण ।

म्हारा हिवड़ा जायँ समाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहाऊँ०

लख सूँज ज्यो मुखड़ो थाँको चमके सुन्दर भाल ।

चन्द्र बदन हीरोँ सो दमके लोचन रतन विशाल ।

म्हारा जिवड़ा में धस जाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहाऊँ०

हाथी कड़ला कमर कणकती पग में नूपुर बाजे ।

हँस २ रमक गडोल्याँ चालो कोटि काम छवी लाजे ।

म्हारी सुरता में जम जाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहाऊँ०

गोद खिलाऊँ लाड लडाऊँ चूम चरण चुचकारूँ ।

काजल की दे रेख जुगत सूँ अद्भुत रूप सँवालूँ ।

म्हारा मनड़ा में सुख पाओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहाऊँ०

आँगण क.ग देख किलकारो ठुमक २ कर डोलो ।

मीठा मधुरा वचन 'सुधाकर, लट पट मुख से बोलो ।

म्हारा स्वप्ना में नित आओ रे सुन्दर श्याम ॥ निहाऊँ०

❦

[तरज] म्हाने आछी आछी लागे सा या कान्हा की बंसी ।

म्हाने प्यारी प्यारी लागे सा छोटी सी गणगोर । म्हा०

चंद्र लजावन मुखड़ो जाये विजली को सो टुकड़ो ।

कोमल अंग बणो नाजुकड़ो मनड़ो लेनी चितवन चोर ॥

चमके लिलवट टींकी, दाँनाँ विच रेखाँ मिस्सी की ।

मारे हिवड़ा पर बरछी सी, नैणा काजलियारी कोर ॥

लहंगा ऊपर सारी, जीपर सजरही अँ गियाँ कारी ।

छटा वताय चंद्रिका प्यारी, सोहे नथड़ी ऊपर मोर ॥

साँची प्रीत लगाकर, गोपीजन मूँ नेह रचाकर ।

ब्रज बनितन मूँ कहे 'सुधाकर, —

मधु सुसका कर नवल किशोर ॥ म्हाने प्यारी०

❦

[तरज] म्हारा छैन भँवरों काँगियो पानरियाँ नेगई सा ।

म्हारी इँडोखी पर धड़लो साजन धरता जाज्यो सा ॥ म्हाँ

छैजा थंनू मिलवा कारण पाणीहारोमि स कर आई ।

थेनहींदीख्या मनका हारण जदतो जान धणी घवराई

प्रीत लगाई थाँसू पछताई ।

सारी रेन नींद नहीं आई ॥

म्हारी दूखे नरम कलाई कलस्यो भरता जाज्यो सा ॥

हरदम थाँकी ओल्यूँ आवे राजकियाँ मनने समझाऊँ ।

घड़ी २ अखियाँ भरल्यावे नीर सो घूँ गट माँय छुपाऊँ ।

कद थाँने पीतम कंठ लगाऊँ ।

मनकी गत कहता सकुचाऊँ ।

म्हाँ प काँई कामण कर दीनो सो हरता जाज्यो सा ॥

थे छो म्हारा मनका वासी, दासो छूँ मैं थाँकी प्यारा ।

साँच कहूँ समझो मत हाँसी, करस्यूँ ना हिवड़ा सूँ न्यारा

भक्तमारो दुनियाँ का सारा ।

लोग लुगाई ओगण गारा ॥

म्हारा नैणा विचला तारा नेज सँवरता जाज्यो सा ॥

प्यारा पीतम अवतो पूरी साँचा मनसूँ प्रीत निभाज्यो ।

मनकीमनमे राख अधूरो मतना जगका लोग हँसाज्यो

नाहक जिवड़ा मत तरसाज्यो ।

कवल चीच भँवरा बण आज्यो ॥

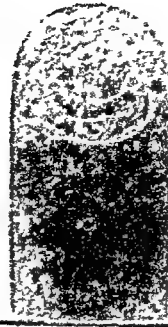
मैं बणू चाँदणी चाँद 'सुधाकर, थे बणजाज्यो सा ॥

❦

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

बर्म सिन्धु पृष्ठ १६७ निर्णय होलिका दहन के

❀ आधार पर ❀



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधर दास बोहरा कवि 'मु'

❀ टोंक (राजस्थान) ❀

हमरु बोला । मेरी जान कि हमरु बोला — शंकर मोला... बिये भांग का गोला ॥
स्वर्ग लोक में शीम पुजे अरु मृत्युचोकर में निग । चर्ण पुजे पाताललोक में शिव शिव रतत फणिंग ॥ हमरु०

[तरज] लेता नाब्यो जी सिरदार कटारो हाथ में ।

अली हो गणपति ले अष्ट सिध ने संग पधारो भूमता ।

अजी हो धनपति पीकर प्याला भंग रंग से भूमता ॥

सुमर सरस्वती अन्विका प्रथम गजानंद ने ध्यावां ।

महावीर राणधीर को र हितचित से ध्यान लगावां ॥

होय कृपा गुरु देवकी र न्हें अटल ध्य ने पावां ।

महा देव को लिंग होलिका की यौनी ने गावां ॥

कांहे यौनी लिंग ने गावां रंग में भूमता ।

कांहे धाना किलंगी निशान चंग पर लमता । अजी हो०



(तरज) गुलाबी नैणां बरसे नूर ।

नजन मेला में चालो जी ।

म्हारी बराबरी रा दोसतिया देखण ने चालो जी ॥

पहर थोढ कर घरसे निकसूं-

जल रे मरे लुगायां सानेणा रो मेलो जी ॥ म्हा०

जावन नदियां पूर हमग रही ।

कोमल अतियां रस सूं भरगई ।

भँवर चमर गई मद अक्रिया नेणा रो मेलो जी, म्हा०

सजवज मुन्दर सेज विछाई ।

साजन सा म्हें थांके ताई ।

ये आया नाहीं लखपतिया नेणा रो मेलो जी, म्हा०

में मद मस्त फिरुं अलबेली ।

कर सोला सिणगार अकेली ।

थांके कारण अलपतिया नेणा रो मेलो जी ॥ म्हा०

प्यारा थांसूं अरज करुं छूं ।

चौडे कइनां लाज मरुं छूं ।

समको मन में साँवरिया नेणा रो मेलो जी ॥ म्हा०

[तरज] हिवडा पर ले ले माणी रं रोल्या थारी नार ।

मद जोवन में गरगाई रे कामण गारी नार ।

नागन सी बन भरणाई रे कर सोला सिणगार ॥

गोरी रूप सरूप को रे मूख पर बरसे नूर ।

भरी जवानी दिलज्यानी की छक रही चकना चूर

चपला सी चञ्चलताई रे होय हिया के वार ॥ मद०

चन्दा की सी चाँदणी रे लाल कमल सो फूल ।

मस्तानी की अँगियां में दो नारंगी रही भूल -

रंग भीनी रँग पर छाई रे नाचण नखरा वार ॥ मद०

आभा की सी वीजली रे होली की सी भाल ।

काठो क्यों न भायला म्हारा गोरा गोरा गाल -

छैलां नूं थां बतलाई रे हिवडे हाथ लगार ॥ मद०

तीखा तीखा नैणा जा में लाली रकी समाय ।

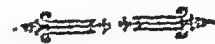
काजलिया रा हूंगरदा में लागी जाणे लाग -

लचकाती कम्मर आई रे ज्यों चम्पा की डार ॥ मद०

रँग होल्या पर सोगई रे सूधी पाँव पसार ।

आलीजा सूं मोजां माणो अँग सूं अँग लिपटार-

जाँगां मूं जाँग मिलाई रे नीकां आसण मार ॥ मद०



[त.] मने लाइडो डिलाडे मोरी जान बालम छोडो सो ।

नखराली मुन्दर नार चंचल छिड़गारी ।

मत मारे नैन कटार हिवडा पर प्यारी ॥

चित्त चौरण चन्दा बरणी ।

ओ जुलमण जाडू गरणी ॥

नाथू राम जी की सेज सिगार जोदन मत घारी ॥ नख.

खडा री शोभा नीकी ।
 अन्दा छवि कर रही फीकी ।
 चितवन अंजन सार, वनरही मुकुमारी ॥ न०
 जीवन धन पर कस चोली ।
 अन्न अंग खेंलो चहोली ।
 अगरो बूंदोहार, कमुमल गुलसारी ॥ न०
 जा मे सजनी आयो ।
 सुखसे पिय अंग लिपटायो ।
 म्हाने हागई किनती वार करतो मनुशगे ॥ न०

[तरज] प्यारी प्यारी सुरत, थांकी चन्दा जैसी लागे ।
 नखराली भायजी सेजां, आयोली के ना ।
 म्होका नैण सू नैणया मिनायाली के ना ॥
 आयो आयो जी माहणी आपां चौनह खेलां ।
 थांका जोवन मूं वाजी रहे लाग्यां छौं पहलां ।
 प्यारा छैलां मूं हेंम वतनायाली के ना ॥ नवरा ।
 थांके नाई खाओ तो मीठा बेबर लयाया छौं ।
 थांके नाई पहरो तो विडिया नेवर लयाया छौं ।
 थाने राखां गोदवां में सुख यओ ली के ना ॥ नवरा ०
 प्यारी आयो ली आरं दोन्युं भेले सोयालां ।
 थांका नाका मुई मे तागो म्होकां पात्रां लां ।
 जानी सांची वताओ शरमां श्रीली के ना ॥ नखरा ।
 थांकी गोरी २ छनियां पे कसो अंगियां ।
 म्हाने मन ना छुयाओ प्यारी देखो तो भलां ।
 रंग भीनां ने अंग लिपटाओली के ना ॥ चंचराली ०
 प्यारा २ दांतां मे थांके मिरसी की देखां ॥ न०
 थांका मीठा बोलां ने फेह बोखो ते देखोलां ।
 स्त्रीखा २ नैणां सू म्हाने मारो मव नां ॥ नखरा ०

[तरज] म्हारा लाइला देवराया ।
 म्हाने रखडी घडाइया जो छैलां ।
 कद कद की कदूं छूं भलां गुला जी । म्हाने ०
 कद जुटणा रा जोड वणला जी—
 थाने राखूं नी में सेजां में अकेला ॥ म्हाने ०
 थाने रखडी घडाइयूं प्यारी चौखो ।
 ल्याऊं जुटणा री जोड अनौखी ।
 थाने हीरां का पहराऊं प्यारी भेला जी—

पण सेजां रो थे सुख कद देला ॥ म्हाने ०
 पिया सोनारी कणकती ल्याओ ।
 म्हारो नथडी में मोर जडाओ ।
 म्हारा विडिया भी होगयां मेलजां ।
 थाने कद की कदूं छूं भेले सोयालां ॥ म्हाने ०
 थावे सोनारी कणकती ल्यासूं ।
 थांकी नथडी में मोर जडासूं ।
 थांका विडिया भी अत्र उजलेलाजी

मेसी कडि हडे लिग्यां छीं । म्हाने ०
 म्हाने नखल जवानो पियुं दारि । म्हाने ०
 म्हानी छतियां अजव गरणाई ।
 म्हारा जोवन रो रसे कद ललां जी । म्हाने ०
 कद कद अंगिया पे हायन फिरेली पाणां छि म्हाने ०
 आयो २ प्यारी अंग लिपटाओली के ना ।
 थाने दिवडांर मांच, छुपोकां । म्हाने ०
 थांका अय रसमोल बजेलाजी । म्हाने ०
 रंग रसिया सू रंग मनेला । म्हाने ०

[त.] सैयां नहीं आवे सेजां माय सजनी अत्र का कीजे ।
 जावन में लग रही गहरी आग जन्दा तू छुप जाये ।
 पादण ने गलती मां फल रात साजेन आसी म्हारे ॥
 सुन्दर छं नार रसीली । नखराली वण शर्मीली ।
 चपलासी चतुर रंगीली ।
 चञ्चल चटकीली गोरो गाव नैण अंजन सारे ॥ जो ०
 छक रही दिदगारी तन में । सोहे सजनी लाखन में ।
 मोहे मीठी वातनमें ॥
 चूपां घर दीतन में चमकात मोनिवन मोग संधारे ॥ जो ०
 प्यासी छूं पीव दरसकी । छतियां दुई भेराई रसकी ।
 होगई पिया सोला धरसकी ।
 छैला अब वसकी छे नहीं वाज साजन अंग लिपटारे ॥ जो ०
 कोमल अंग कमुमल छतियां, मसकण की आंगई रतयां ।
 बोखूं छूं सांची वतियां ।
 भेजू लिख पतियां किसके होथ थापर रंग रसिये र ॥ जो ०
 भारी मयो तुमें विन जीनां धरकन तेन फकिन सीना ।
 तडपूं ज्यो जल विने भीनां ।
 कर कर रंग भीनां थांकी याद नैनां सितम गुजारे ॥ जो ०

❀ सुधाकर काव्य कुञ्ज ❀

मत्तवाली मालिन



❀ रचयिता ❀

श्री गिरधर दास बोहरा कवि
दोंक (राजस्थान)

जलने वाले जलगये दो प्रियियों के प्यार से । मरने वाले सरगये फिर फोड़ कर दीवार
पर नहीं चुन्चुल ने छाँड़ा दूक गुल गुल जार से । बाल भी उखड़ा नहीं सैयादकी तलवार

❀ एक ख्याल ❀

अदादार नाजुक नयीन माहे जिधीन सी एक नारी ।
चली जान चितवन चवान बुगवान वान कर मनवारी ॥ टें
झीनकर दिल लेगई एक ध्यान ही की ध्यान में ।
बीध ही दावा कनेजा नैन के एक वान में ॥
गन दिन नइया किये उज माहक के ध्यान में ।
कुछ कसर छापी रही नारीन के लामान में ॥
मदन मन्त नइबी कामनी गज गम यी सुन्दर जाना ।
नरोज नयनी पिक धैनी मुख हैतो नइ अमर आवा ॥
चटकीली चपलासी चञ्चल मुखद मुताचन गुल लाला ।
नैन वान को तान जान ने थायल तन मन कर डाला ॥
छिम छिम करनी पव धरती तन गन हरती वह पतिहारी ।
चली जान ॥१॥

दुकहे जिगा के करदिये कालिम ने चरमे तोर मे ।
पर एक तलक निकला न आशिक के दहन दिल गीर मे ॥
आया जमी को जलजना मुक न नगं की पीर
जव जोर मे जाना ने लकड़ा लुलक की जनरीर मे ॥
चम्पावरणी चतुर रंगीली जोरन धनकी मरुतानी ।
चमक रही चहरे पर जिसके चतुशवंद सी नरानी ॥
वड़ी मरोवर पर धर गागर खेच खेच भती पानी ।
गन्ध दार रही दिवाके अञ्जना रम्पी की गेवा वानी ॥
मैल मार रही सीनेपर छतियन को छटा न्यारी न्यारी ।

चली जान ॥२॥

ए नज्मी फलसका कुछतो बना तकदीर का ।
क्यों दिवाना मैं बना इस हुस्न की नसवीर का ॥
ओ ! हकीमाने जमा कुछ फिकर कर तदवीर का ।
जल रहाई दिल लगा मरहम कोई अकसीर का ॥
कर चाहे बरवाद मगर करियाद में वही मुनाज्जा ।
हटाके पर्दा दिवा रुखे रोशन को तेरे गुल गाजंगा ॥
मरके अंगर महशर भी गया तो याद न तेरी मुताजंगा ।
दूद सितारे की सी तरह मैं पास तेरे फिर आऊंगा ॥
क्यों फरताई नून किमीका ओ गुलमन जादुगारी ।
चली जान ॥

वनादे चार नेरे हुस्न का दीदार कब होगा ।
कहम यीने से सीना लव से लव का प्यार कब होगा ॥
कयमहे तुमको कहदे वस्ल का बकरार कब होगा ।
जिजा से जल चुकाहे लो चमन गुलजार कब होगा ॥
मूल के कोई कदम न रखना इशक सनम की बाजी में ।
बड़े वडों ने जान गंवादी है माशुक नवाजी में ॥
करो दस्त मल २ कर लाखो गुजरे भंभट साजी से ।
मगर नख्खे गुल खिला नहीं दसरत का उध्र दराजी से ॥
मान 'मुयाकर, मान न हो कुवान, यह है नागन कारी ।
चली जान चितवन चलात ॥

[संस्कृत] सव ठाट पड़ा रहजायेगा जब लाद चलेगा वंजारा ।

इस भारत की मालिनियां बन चालाईं बेचन आई हं ।
माया और चूका पोदीना हरियाली पालक लाई हं ॥ इस भारत०
मेरी जेलोजी फूलवारी । विलरहीगुल गेंद हजारी । सरसारही सुन्दर प्यारी । मेरी नवल उमरिया वारी ।
मैं चंचल चपला चंद्र वदन धन जोवन में गदगाई हं ॥ इस भारत०
चलू चाल अजब मत्तवाली । मेरे मुखपर वरसे लाली । सुरत है भोली भाली । सुन्दर साँचे मैं डाली ।
मैं चम्पा की सी डार चमेली नरगिस बनकर छाई हं ॥ इस भारत०

मं मिस्सी नीकी । लिलवट पर लग रही टींकी । पेरी सारी असल जरीकी । हरे शोभा सरस परी की ।
 मद माती मन हरन सुहागन, नागन सी लहराई हूं ॥ इस भारत०
 गँय जवानी वसकी । खिलरहीं कलियां नसरकी । भरगई दौउ कुचियां रसकी । कसरही अँगिया अतलसकी
 सुघर "सुधाकर," सी सजनी गज गमनी चन्दा वाई हूं ॥ इस भारत०

[रज] म्हारे घर आओ ली मोहन बनवारी ।

[तरज] फिलमी गायन ।

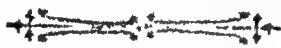
इं म्हारे, टप र चूवे छे पसीनो ।
 दुखदाई गरमी रो महीनो ॥
 ओ जी म्हाने खस र रा वंगला वणवाय द्यो ।
 ओ जी जोमें त्रिजली रा पंखा लगवाय द्यो ॥ हाय०
 ओ जी भोला खावे, जोवन रँग वीनो ॥ हाय०
 ओ जी चोद्धा फूलां सूं डोल्यो सजवाय द्यो ।
 ओ जी जी में अन्तर की सीस्यां छिड़काय द्यो ॥
 ओ जी थाने जाणूँ अँगूठी रो नगीनो ॥ हाय०
 ओ जी म्हाने सोना री रखड़ी चड़ाय द्यो ।
 ओ जी जीने हीरां ई हीरां सूं जड़ाय द्यो ।
 ओ जी पीलो पेत रँगा द्यो भोणो भीणो ॥ हाय०
 ओ जी चूवे रंग गुलाबी गोरा अंग सूं ।
 ओ जी म्हाने छाई जवानी नया ढंग सूं ।
 ओ जी तड़पाव मदन छे नवीनो ॥ हाय०
 ओ जी म्हाने वागां में भूला चल वाय द्यो ।
 ओ जी जी में, रेशम डोरी लगवाय द्यो ।
 ओ जी थांगूँ नेह "सुधाकर" कीनो ॥ हाय०
 ओ जी थांके टप टप चूवे छे पसीनो ।
 हाय नहीं आवे गरमी रो महीनो ॥
 ओ जी थांका मुलड़ा रा भीठा र वोल यह ।
 ओ जी म्हारा जिवडाने कीनो डारां डोल यह ॥
 ओ जी जाणे जादू सो काई कर दीनो । हाय०
 ओ जी थांका रतना सा, तखा र नैन यह ।
 ओ जी म्हाने भाव रंगीला सुखईन यह ।
 ओ जी म्हारा हिवड़ा में घर कर लीनो ॥ हाय०
 ओ जी थांकी पतली कमर चपा डार ज्यों ।
 ओ जी शोभा पावे छे चोली रा अनार सों ।
 ओ जी म्हारो तन मन धन वस कीनो ॥ हाय०
 ओ जी थांने कजरा ज्यों राखूँ म्हारी आंख में ।
 ओ जी आओ घुसजाओ पंखीदारी पाँव में ।
 ओ जी म्हारो मन थे "सुधाकर," छीनो ॥ हाय०

ओ दिलवर प्यारेने !
 दुकड़े किये किस जोर से इस दिलके दिलवर प्यारेने ॥
 वह नैना थे या खंजर । जो कारी ए जिगर पर ।
 अररर रर वस वायल करदिया- जालिम तीर करारे ने ॥
 उलफत में हम रोते हैं । अशकों से मुँह धोते हैं ।
 अररररर वेचैन किया वस- उनके नैन नजारे ने ॥ ओ.
 मत भूल के आंख लड़ाना । उलफत में मत पड़ जाना ।
 अररर रर फिर खून बहाया- दिल पर जखम हमारेने ॥
 उस्मीद न थी यह हमको । यों देंगे 'सुधाकर, गमको ।
 अररर रर अंजाम मोहब्बत- देख लिया जग सारेने ॥ ओ.

[त] कद आओला कन्हैया म्हारे द्वार मैं ठाड़ी न्हाळूँ०
 लेल्यो र जी खरचूजो मजादार-
 साजन म्हारी वाड़ी को ।
 भीठा लागे तो देदीज्यो पैसा चार-
 ल्याऊं ली गोटो साड़ी को ॥ लेल्यो र जी०
 जोवन नदियां बीच अनोखी वाड़ी अजब लगाई ।
 हरिया र पान फूल अलवेली बेलों छाई ।
 दे. ॥ र जी फूलवारी री बहार दरवाजो खोल किंवाड़ो को ॥
 तनकी सुन्दर गुल क्यारी में मनको वीज उगायो ।
 रस चाखण री आस लगा नैणा सूं पत्नी पायो ।
 रत्नों जागी जी हिवड़ा रे हाथ लगार-
 मतपूछो हाल अगाड़ी को ॥ लेल्यो र जी०
 भरी जवानी बीच अकेली में सालण की जाई ।
 माथा ऊपर मेल पड़ो खरचूजा वेचण छाई ।
 चाखो र जी आलीजा एक बार,-
 यो फल म्हारी आड़ी को ॥ लेल्यो र जी०
 चन्दा जी री चांदणियां में आप 'सुधाकर, आऽव्यां ।
 चोखा र खरचूजा हाथां सूं म्हारे खाल्यो ॥
 ल्याज्यो र थाका भाचेलाने लार-
 गेलो छे साफ पिछाड़ी को ॥ लेल्यो र जी०

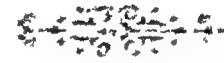


[नरज] सासूजी म्हारा अथ मैं नहीं चालूँ थाँका ज्ञानमें ।
नगरानी व्याचणु करणयो मय दुनियाँ का शुभ काम ए ।
भक्तयो मनवन्ती मैं नारायण ए ॥ नग०
ऊचटणो मय धरम ओ मजने मन्दर अग लगायो ।
गीतल तर्हि का ज्ञान मूँ मल २ मन निर्मल बन जायो ।
छिटगारी व्याचणु, पाथो अनुसूज्यां सोमर नाम ए ॥ भ
मुजनी मूँ सीन गुथा कर पीतम हित की घोर जयाथो ।
नैण मैं लाज शरम को हरमो ए मन्दर नित्य लगाथो ।
नन्यारी व्याचणु, मनवा ने रायो वसने धाम ए ॥ भ.
सा सुमग नी मन मूँ सेवा कर के आशिर पाथो ।
साजन मूँ गाँवो नेह रना कर अरतो मान बढ़ाथो ।
सुनसारी व्याचणु, साजीला कोमल कमला जानए ॥ भ.
गोः। गोतां री सग नी अपणा पर सूँ रीन हटाथो ।
भाटा बोलां मूँ मन अरना गुका की परनीन घटाथो ।
ससहारी व्याचणु, आथो नित मुख ने रावेश्वासए ॥ भ.
गोः। वचना री गिनती चूपां दाना चीन जगाथो ।
अकृत सो दरमावा ने प्राप सुधाकर, सी वणजाथो ।
मुन धरारी व्याचणु, थै छो सावित्री शोभाधाम ए ॥ भ.

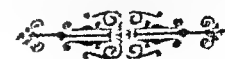


[नरज] भक्तयो मनवन्ती श्री भगवान ए ।
सासूजी म्हारा ! अथ मैं नहीं चालूँ थाँका ज्ञान में ।
घाई आजादी हिन्दुस्थान में ॥ टै०
धेनौ अगपह छो पण मैं लेर कितावां पठ्या जाशूँ ।
भूषट पत्ता ने तजकर साईकल पर दोहू लगाशूँ ।
सासूजी म्हारा, पाशूँ पद नारी धरम विधान में ॥ छ.
सादी की धोती श्रीती जरफर पेटी जोट सिलाशूँ ।
बायल मन २ का लहंगा साडी वाडी दूर हटाशूँ ।
सासूजी म्हारा, कुमका भेला नहीं पहरूँ कान में ॥ छ.
सुती सब सार्थगियां में स्वतंत्रता को भाव जगाशूँ ।
पिलरा की सैनाओं ने अथ वागां की सेर कराशूँ ।
सासूजी म्हारा, दे दे कर भापण सरल जवान में ॥ छ।

वाचस्पयीकर में कथ अपणी कविता मोनर
भारत की मोटी २ मय रीतां को गोज नि
सासूजी म्हारा, वैठी नित निरशूँ वाचवान में ।
वाँकी भूमी हर जूां नाँव 'यु मर' अथ गौँ प्राशूँ ।
अबलागो नारी मूँ पण वन की सीमां मोट दिगारूँ ।
सासूजी म्हारा, रीच्यो मत अथ मैं पिदला ध्यान में ॥
घाई आजादी०



[नरज] नगरानी नगर लगर मने छिटवाय मनी—
स्टे सुख्या करेया व्याचणुजी अथ अजय जमाना प्रावेला ।
नगरां प्रोजीने धरम हरम सो मय एक दम = ठ जावेला ॥
भाणणु वेटी मयम कुन में न्यावेला ।
वाणया चानुर्वणी नन्या ल्यावेला ।
रुत्री भी थपणो छोट परमा वस हिन्दु नाम कहावेला ॥
खाणु पीण में पंगद एक जमावेला ।
ऊँच नीच का भेद भाव नहीं ल्यावेला ।
पूओ ला जो थै जान पांत तो राज पकड़ लेजावेला ॥ म्द.
पुरुष लुगाई अथ वही मोज उढावेला ।
ज्यांका ज्यांमूँ सांचा मन मिल जावेला ।
नहीं मात पितामूँ गरज लुशीसूँ थपणो व्याहर चावेला ॥
विधवाओं का पुनर विवाह करावेला ।
बदल गई तो परणी ने परणावेला ।
छे चालो चोखी वान जगत का रँहया तो सुख पावेला ॥
वाचूजी होटल में खाणो खावेला ।
परणी चांकी मेम साव कहलावेला ।
सब हूव गईछी दुनियां जीने अथ इण भांति तिरावेला ॥
असल नसल का सब विचार हट जावेला
चारों वरण एक गत में हट जावेला ।
कर पिदला युगने याद सुधाकर, सिर धुन २ पढ़ता ।



जगली लगन लगार मने छिटकाय मती तरसाय मती

पूछां थाने व्यायणजी बतलाओ होली काई छे ।

की फागण सुद पूनम की या भारत में रीत चलाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

हरियाण ई पृथ्वी पर एक राजा छो ।

अभिमानी अ-याई निपट निलाजा छो ।

या राम भक्त प्रह्लाद जिणा के पुत्र जगन सुलदाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

बह नीच नृपति खुद ने भगवान बताने छो ।

साधू मन्तां सूं अपणो नाम जपावे छो ।

वह कर २ अत्याचार जग की सब मर्यादा मिटाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

जान भक्त ने लाग्यो एक कुम्हारी को ।

जीवित अ-गन में बालक देख मँजारी को ।

जब हागी सांभो लगन रामकी महिमा मनमें भाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

खबर पाय प्रह्लाद ने पिता पकड छीनो ।

त्रास दिखा बहु भांति घणों संकट दीनो ।

हरवाने ऊंका प्राण अनेकों विध कीनी कठिनाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

पण मरयो नहीं वह भक्त रामरक्षा कीन्हीं ।

तब वहन होलिका ने राजा बुझवा लीनी ।

या अगनी में नहीं जलपा को वर ब्रह्माजी सूं पाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

वरदान अमर होवा को तो देदीनो छो ।

पर ऊं बेल्यां ब्रह्मा बा भी कहदीनो छो ।

तने कामदेव उत्पन हुयो तो थाी नहीं भलाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

सुण, भाई को हुकम होलिका एउ भाई ।

ले बालक ने गोद चिना भउ वणवाई ।

फिर बैठगई ऊं में जद दुनियां बाला जुगत रचाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

फाटा २ बोल सभी बोलण लाग्या ।

लिंगयोनि आदिक सूं मुख खोखण लाग्या ।

सब एरयो भारी काम नीच राक्षसणी का मन मःही छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०

जलगई दुष्टणी और भक्त खेलत पाया ।

वह हँसदा २ अगनी में सूं निकल्याया ।

सर्वाधिकार स्याहीन लेखक हँ ।

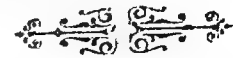
सब सुखी हुयो संसार जभी सूं वस या प्रथा बणाई छे ॥
महे पूछां थाने व्यायणजी०

यों बाल के होली बचन अटपटा बोलांछां ।

ऊं भक्तराज की याद कराता डोलांछां ।

लिख गाली मांय 'सुभाकर, यो प्रह्लाद कथाने भाई छे ॥

महे पूछां थाने व्यायणजी०



[त.] जिवड़ो बचरावे वालम तोहे भालुम ना पर पीढ़ के

महे सुण्या करेदा छोटा जमाना कलियुग आगया । टेर

अब बलजुग की या बारवार थे सुण जो वित्त लगार ।

नर छोटा नारी बड़भ जी लेख लिख्या करतार ॥

कोई लेख लिख्या करतार के टारया ना टरे ।

कोई नित बठ देखू पीब के जिवड़ो यूं जरे ॥ महे

खाविद छोटा टित घणा सजी किस विध आवे नीद

सेज चढंता कामगी रयो तोरण आवो वीद ॥

कोई तोरण आयो वीद के फेा होगया ।

कोई रात्यो न्हात्तू चाट के जोऊं दीबला ॥ महे०

गोरी रूप सरूप की सजी निरगत चाले चाल ।

कम्मर शोका खावणी म छोई ज्यों चम्पा की डाल

कोई ज्यों चम्पा की डाल घणो दुख जीवने ।

कोई सुख सानूजी बात बड़ो कर पोवने ॥ महे०

धूंगड़ा की ओट में सजो निरगत्यो पूरण भान ।

जो कोउ भिक्षा मांगतोर में जोवन देनी दान ॥

कोई जोवन देती दान सुणो सब साथियां ।

कोई वेग बुलाकर पीब कराओ दानियां ॥ महे०

वर जोड़ी का ना मिल्यास कोई पड़तायां काई होय

बेमाता अघर लिख्या स कोई मेठ सके ना कोय

कोई मेठ सके ना कोय करम गत जाणिया ।

कोई कमी न रमिया सेज रंग नहीं भाणिया ॥ महे०

चंद्रकेला छुपने लगी सजी सनभयो नहीं गंवार ।

मैं मुख से कैसे कहूं सजी यो म्हारो भरतार ॥

कोई यो म्हारो भरतार के गोड़ी गालिया ।

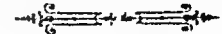
कोई सासूजी शायल भला सुत पालिया ॥ महे०

छतियां तो ऐसी पकी सजी जैसे सुख-अनार ।

ससकष वाला घर नहीं ज वह छो । सा भरतार

कोई छोटा सा भरतार बजावे तालिया ।

कोई किस विध कहूं 'सुभाकर, आवे लाजिया ॥ महे०

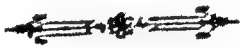


प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोक



[तरज] नाचे नैगा में नन्दकिशोर ।

श्रीए धारी प्रीत पुरानी गोइ ।
कटे चाली मने नृद्योइ ॥ प्यारी०
धारी जोवन भोली वनियां ।
गोरोवदन गुलाबी छानियां ।
श्रीए मुख मीठी रनीली हंसोइ ॥ कटे चाली०
धारी शहारी मंगन मांटी ।
लैमे धोली श्रीर लँगोटी ॥
श्रीए धार्या दोन्याँ का दिल रदवा जोइ ॥ कटे०
पहण्यो तो नूनिन आवेइयो ।
दोन्याँ ऊपर वतलादि छी ।
श्रीए अब लेछे घूंगटडा ने मोइ ॥ कटे०
क्यों श्हाँने अब छिटकवे छे ।
पेलां के घर क्यों जावे छे ।
श्रीए थारा मनकी वतादे मरोइ ॥ कटे०
जब थारा जोवन दल जायी ।
काम नहोँ कंई थारे आभी ।
श्रीए यदनामी करे मन खोइ ॥ कटे ।
श्रीए चाई करले "सुधाकर," से होइ ॥ कटे०



[तरज] नाचे नैगा में नन्दकिशोर ।

श्रीको थाँका नैगा में छुल गया धारण—
श्रीजी थाँकी चोल्वां में फँस गय धारण ।
थाने कंई बनाऊँ शहारी धारण ॥ श्रीजी०
थाँका नैगा चगा रनीला ।
रंग रँगोला आव छडीला ।
श्रीजी थाँका लागे दिया पर धारण ॥ थाने०
थाँधे जोवन उमयो पेसो ।
चंद्र छडा वृषमही लैसो ।
श्रीजी लैमे दूध में आव उमरग ॥ थाने काई०

थाँको घूंगट थाँको मीणो ।

जीमें नाणे सुरज उगीणो ।

श्री जी मोला मुखड़ा री मुस्काण ॥ थाने०

राख्यो जागां थाँके साँटे ।

मायो दूने छानी फाटे ।

श्रीजी शहारा उड़ गया मय थोमाण ॥ थाने०

म्हाने योँ ही तड़पाओला ।

पेलांमूँ हँस वतलायोजा ।

श्रीजी लई माँची "सुधाकर," जाणा ॥ थाने



[तरज] गीताराम कहे रावेश्याम, हरे हरे राम—

आजा आजा शहारी प्यारी दिल जान—

दिल को कह्योले मान, कर न गुमान ।

जाने जिगर लड़ाजा । आजा०

नवल जयानी तन पर छाई ।

जोवन में धारियां गरगाई ।

चंचलता चिनवन में छाई,

नृवन रही मस्तान-कर न गुमान । जानी जिगर०

गोरा गोरा गाल छे थारा ।

नैण गुलाबी कामण गारा ।

घूंगटडारे माँ नजारा ।

मसमादे नादान—कर न गुमान । जानी जिगर०

रससूँ भर गई कोमल धतियां ।

सँग पोहण की आगई रतियां ।

मीठी मीठी करके वतियां ।

हरकियो तन मन प्राणे—कर न गुमान जानी०

आजा २ श्री मन का राजा ।

हँस वतला जा प्रेम वडाजा ।

आज "सुधाकर," से लगवाजा—

मँहड़ी का दो पान ।

कर न गुमान ॥ जानी जिगर०

आजा २ शहारी०



म्हांने प्यारी लागेरी मा या कान्हा री वंसी ।
 न वीत्यो जावे छे, छेला बेईमान ।
 ओल्हू आवे छे साँची लीजे जान ॥
 तासू रे माले । मैं नित निरखूँ दिया उजाले ।
 रदी रे पाले कैयँ करूँ बखान ॥ म्हारो०
 मी जोर मंचावे । चोली तन पर मसकी जावे ।
 नींद नहीं आवे, तने नहीं कुछ ध्यान ॥ म्हा०
 इन मस्त जोवन की । कली र खिलरही वदन की ।
 परण कड़ी नहीं मनकी जीसे छूँ हैरान ॥ म्हा०
 पाकी दो नारंगी रसकी । कुण चाखे पण देकर मसकी ।
 सुन्दर गोरी सोला वरस की छोरी छूँ नादान ॥ म्हारो०
 जो मैं जोड़ी रो वर पाती । कोउ रसिया संग भोज उड़ाती ।
 निपट 'सुधाकर, संग सोजाती निरभे खुँटी तान ॥ म्हा०

सुन्दर मतना करे गुमान जवानी दो दिन में ढल जासी ।
 करले जोवन रतनरो दान, सगी फिर काम यो काँई आसी ॥
 गोरो वदन गुलाबी छतियाँ ।
 चंचल मृगनी की सी अखियाँ ।
 मोहनि मीठी मीठी वतियाँ, सोहनि सूरत चंद्र कलासी ॥
 करती गभ घणो नखराली ।
 दारी नाथुरामजी की बरवाली ।
 घूँगः माँय बणा कर जाली, मारे नैण नजर चलसा ॥
 फोड़ ने छुप छुप सेज चढावे ।
 कोइ ने रूप दिखा ललचावे ।
 कहतां लाज घनेरी आवे, हाय र एक दुख और एक हाँसी ॥
 सजनी सुनले वचन हमारा ।
 मतना समझे मनसूँ न्यरा ।
 विन्ती करे 'सुधाकर, प्यारा समदण सेत्रों में कव आसी ॥
 नखरो अजब तरङ्ग को करती ।
 तन मन धन लोगाँ फो हरती ।
 चाले उछल अघर पग धरती, कवतक जुलमण जुलम चलाधी ॥

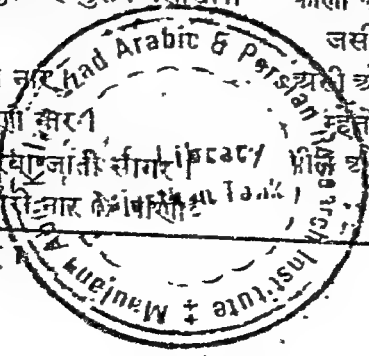
पाणीडो भरल्याई सा चंद्रा वरणी नार
 लचकाती कम्मर आई सा जादूगरणी सरणी
 धर डूँडोणी पर गागर । जल भाँजाती सीगर ।
 जीवन में वन गणलाई सा कामणगरी नार

घूँ गट पट खोल दिखाताँ । नैणाँ सूँ नैण मिलाताँ ।
 नखगली ना शरमाई सा, तन मन हरणी नार ॥ पा०
 सैजा में अँग लिपटाकर । जँगा सूँ जँग मिजाकर ।
 छैला सूँ भोज उड़ाई सा, जैसे परणी नार ॥ पाणीडो०
 नणदल री भर भर वायाँ । सासू ने मारे लाताँ ।
 परण्या सूँ करे लड़ाई सा, वा अनडरणी नार ॥ पा०

पटेलण वायाँ ए अचके साँठों रो बाड़ ।
 करे मत सोच रंगीली ।
 अरररर... आयो मास असाड़ ॥ पटेलण०
 बयारा घोरा खूब बणास्याँ । काँटा भाटा दूर हटास्याँ ।
 गहरो गहरो माँय चलास्याँ, हलने कराँ खराड़ ॥ पटेलण०
 आछयो आछयो बीज रगास्याँ । चोखी चोखी दाव लगास्याँ ।
 चड़स्याँ चड़स्याँ पाणी पास्योँ नीकाँ धरती फाड़ ॥ पटेल०
 वगत ननाणी की जद पास्याँ । जेलीसूँ हरणी कर आस्याँ ।
 पराँ मेराँ माँय जमास्याँ ऊँचा ऊँचा भाड़ ॥ पटेलण०
 हरी भरी खेती सरसास्याँ । जद पाणत करवाने जास्याँ ।
 मोटो पोटो तने बंतास्याँ लीजे पकड़ उखाड़ ॥ पटेलण०
 आगँ रसकी खीर बणास्याँ । लोग लुगाई दोन्यू खास्याँ ।
 ओड गूड़ड़ी ने सोजास्याँ करस्याँ थारो लाड़ ॥ पटेलण०
 हाँसल पोसल राज चुकास्याँ वोहरा ने पाछे नमटास्याँ ।
 मालमतो सगलो खाजास्याँ लेसी काई हाड़ ॥ पटेलण०
 खूँ गाली और कड़ा बड़ास्याँ । नथड़ी ऊपर मोर जड़ास्याँ ।
 फेर 'सुधाकर, ने समभास्याँ कर लास्याँ सूँ राड़ ॥ पटेल०

आगी बलवादे ! आगी बलवादे भायला—
 पेसी भावर मोटी ने । परी उदलवादे ॥
 बीध्या छाणा को सो मूँबो कम्मर मोटी मोटी ।
 भूँडी भूँडी सूँ त जैसे बल्या तथा की रोटी ॥ आगी व०
 लम्बा लम्बा बाल कम्मर पर आँख्याँ छोटी छोटी ।
 पेट ओदसा को देखो तो सामर की सी कोटी ॥ आगी व०
 चपटो चपटो नाक पड़थाड़ी डाकण की सी चोटी ।
 काला पीला दाँत जणाकी चूँचा भौंटी भौंटी ॥ आगी व०
 जसी तरह सूँ देखो सगली बात खोटी खोटी ।
 आगी व० ओदसा पर तो तू मन खोले पार लँगोटी ॥ आगी व०
 मुँहो गहरी भाँग 'सुधाकर, आज मेजासूँ चोटी ।
 और पिलाले रसिया फेर बजाले सोटी । आगी व०

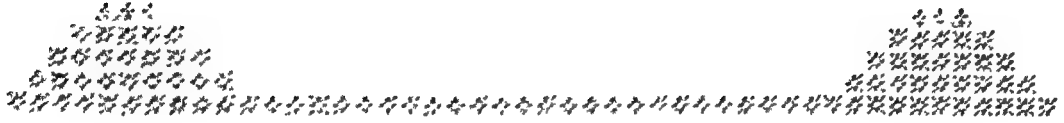
सर्वाधिकार स्थायीन लेखक है



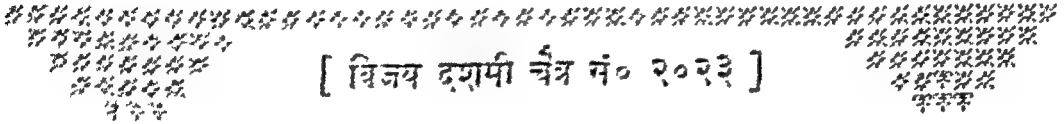
प्रकाशक, भारत प्रिंटिंग प्रेस टोंक

24442

कविप्राणा
सुधाकर शब्द सागर
अंत्याक्षरी



—== दिग्दर्शन ==—



[विजय दशमी चैत्र सं० २०२३]



निर्मातृ
गिरधर दास बोहरा
सुधाकर 'कमर'
टैंक (राजस्थान)
भारत

वस्तु मात्र है। वह प्राचीन संस्कृत कोशों की भांति पाठ्यपुस्तक तो नहीं कि जिन्हें कोई बार-बार पढ़कर मनन करेगा। 'सुधाकर शब्द सागर' के अलंकृत और श्रंत्यानुप्रासित शब्द अधिकाधिक संख्या में कवियों, शाइरों, धार्मिकों की लेखनी द्वारा छंदोबद्ध होकर उनकी मधुर वाणी से उच्च स्वर में विशाल जन समूह के बड़े-बड़े अधिवेशनों में प्रभाषित होंगे, जिनकी भ्रमरवत् गुंजन के श्रवण मात्र से रसिक साहित्य प्रेमीजन अनन्त सुखानुभव करेंगे, अत्यन्त प्रभासित होंगे, एवं रसोमय ध्वनित शब्दों का भाषा भाव, चिन्तन, मनन करते हुए स्वमेव वाणी द्वारा ऐसे उच्चारण करने लगेंगे, जैसे सिनेमा की धुनों को बहुधा बालगण तथा जन साधारण अपने घरों, गलियों बाजारों में गुनगुनाते रहते हैं, इस प्रकार से हिंदी नागरी संसार में एक नव कुतुम्ब पल्लवित होकर अपनी गंध वायु द्वारा निरक्षरता का उन्मूलन करेगा। महान कोशों की जिल्दों में ढके हुए साहित्य शब्द रत्नागार का अधिकाधिक इस तरह प्रचार होगा जिस तरह मैवों में आच्छादित जल कणों का वृष्टि द्वारा प्रसार होता है, मेरा लक्ष्य उदाहरणानुसार लुप्त शब्द रत्नों को विश्व स्थल पर बिखेर कर उन्हें मुपारित करना है, ताकि देवनागरी के रूप सौन्दर्य का मूल्यांकन करके उसे सुगमता के साथ सर्व साधारण अपनी श्रमूल्य निधि मानकर अपना सकें, यह भी एक अपनी भाषा प्रसार का उत्तमोत्तम सुन्दर प्रकार है।

शब्द कोष एक अमर ग्रन्थ है जो किसी भी काल में वृद्ध श्रयवा जीर्ण नहीं होता, यह सदा सर्वदा तद्वत् और नवीन रहता है इसकी आवश्यकता प्रत्येक काल में बनी रहती है। शब्दार्थ सम्बन्धी बड़े बड़े विवादों के निराकरण बड़े बड़े न्यायालयों में बहुधा शब्द कोशों के आधार पर होते रहते हैं। यह कल्प वृक्ष से भी अधिक पदार्थों का प्रदाता 'शब्द वृक्ष' है।

शब्द वृक्ष सुर तरु की साया । सुख निधि विशद् विवेक प्रदाया ॥ सु०

शब्द में स्वर है, स्वर में रस है, रस में आनन्द है, आनन्द में प्रकाशरूप ब्रह्म है, वेद इसका साक्षी है। 'स्वरो ब्रह्म न संशयेत्।' स्वर और प्रकाश ही सर्व शक्तिमान का स्वरूप है, इसीलिए अपना मुख्य कर्तव्य लोक कल्याण का पथ प्रदर्शन ही जानकर जीवन की दीर्घ कालीन दिनचर्या में उक्त कोश के निर्माणार्थ अन्तरराष्ट्रीय प्रयास कर रहा हूँ, मेरी शक्ति 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' [सदाकृत फना और वूर] है, आराम तलब नहीं, जफ़ाकश और कर्तव्यशील है।

इस कोश से संगीतज्ञों को भी महान लाभ होगा। वह इससे द्वारा, दोहा, चौपाई, छंद, सोरठा गजल, ठुमरी, दादरा, इत्यादि अनेक राग, रागिनियों के पद बहुधा धुनों में सुन्दरातिसुन्दर निर्माण कर सकेंगे। काव्य का भूषण स्थल के अनुसार रसात्मक तथा कलात्मक अलंकृत शब्दों, वाक्यों का श्रंत्यानुप्रासित उपमा, उपमेय, रूपक आदि युक्त चयन व गठन ही साहित्य एवं संगीत के विशेषज्ञों ने माना है, रसात्मक कविता को ही काव्य कहा जाता है।

यों तो आजकल (विषयक कोश के अभाव में) अनेक प्रकार की अतुकान्त कविताएँ बहुधा पत्र पत्रिकाओं में मुद्रित, देखी जाती हैं, किन्तु उन्हें एक बार दृष्टिपात करके ही रद्दी की टोकरियों में डाल दिया जाता है। पुनः उनके दर्शन नमक मिर्च की पुडियों में होते हैं, वह श्रेष्ठ कवियों की प्रबन्धित रचनाओं के समान किसी उच्च पुस्तकालय की ग्रन्थ मालाओं में आहत नहीं हो पातीं।

प्रणेतों के कोश की मुख्य विशेषता यह है कि इसके आधार पर उत्तमोत्तम तुकांत एवं रसोमय अलंकृत कविताएँ रची जा सकें। अन्यथा कोश तो अपने स्थान पर शब्दार्थ का प्रदाता है ही सही, म० तुलसी, सूर, कवीर, नानक इत्यादिकों की रचनाएँ इसीलिए लोकमान्य, लोकप्रिय हैं कि वह अतिभाव गम्भ है और पूर्ण तथा प्रबन्ध श्रयवा मुक्तक निबन्ध प्रणाली के नियमानुसार हैं।

कवि संसार का उपसूर्य है, विश्व हृष्टा और पथ प्रदर्शक है, अपने देश और राष्ट्र के प्रति सच्चे चहुँत बड़ा व्यक्ति है, कवि की वाणी प्रसर है, कवि अपनी शक्ति को बाहरी चर्म चक्षुषों को बंद करके नेत्रों ने देखने जानने और समझने का प्रयत्न करे, वह अनि प्रचल और महान है। तुलसीदास जी कालीदास आदि महाकवियों ने देश का अनेकों प्रकार में अपने नाचर काव्य द्वारा महान उपकार एवं उद्धार किया है, निम्न देश ही क्या विश्व उनका आनामारी रहेगा।

आज देश को उत्तमोत्तम, भाँसक, उत्सुक, उपदेशक, आकर्षक, प्रभावशाली उन रचनाग्र आवश्यकता है जो देश के विभिन्न भागों, मतों, विचारों को मान्यता रूप में मान्यतामक एकता के रमों में विकरें। टोम, टारियों, नदों, मंदिरों तुल्य, चूल्हा-विकारों, लट्टू-रसगुल्लों या गानों-बालों की चर्चा में विद्वेषकों से होने हेँसने वाली कविनाओं से देश का कल्याण नहीं होगा, बहूधा मम्मेलनों में अधिकतर ऐसी ही उल्ट-पटांग रचनाओं का यानाबरदा देगा जा रहा है, इन प्रकार की रचनाओं में श्रोताओं को गुन करने का समय हीर पहुँच चुका है, कवि जन समाज ही यदि विषयक रचनाएँ कथन करने लगें तो फिर उनके अधिकारी जनों की जीविका क्या होगी। वर्णित कविनाओं के उदाहरण भी दिख जा सकते हैं, किन्तु गन्य कटु होना है, यद्यपि कहुँची शीषवि स्वर की शीघ्र भगाती है, तथापि इनके कथन के लिये भी धमा प्रार्थना ही उचित समझता है।

स्वर्गीय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी तथा स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू की विमल वाणी द्वारा प्रस्तावित 'राष्ट्रीय मान्यतामक एकता' मंत्र सम वाक्य को पुनः पुनः स्मरण करने हुए, देशी और विदेशी अनेक भाषाओं को धरकर धीरे बनाकर उन कौशल द्वारा सर्वत्र प्रचार करने का प्रयत्न किया गया है, उन लोक दिग्गज महामहिम सूर्यन्य दिवंगत महान आत्माओं के उपरोक्त वाक्य में अत्यन्त मान्यता, अखिरल शान्ति, अतंत गाम्भीर्य एवं अक्षय प्रेमोल्लास तथा सर्व नू कल्याण का पथ प्रदर्शन शशि प्रभा सम ज्वलंत है। जन पथ सरिस विकास, देवत प्रीति की शीनि बन। तु०।

प्रत्येक दृष्टिकोण से यह भी वही शब्द कौशल है, जो अनेक नामों से देश में प्रचलित है। बड़ी बड़ी समाजों संस्थाओं से निर्मित सर्वोच्च कौशल के सूर्यन्य विद्वानों द्वारा रचित, संशोधित तथा प्रमाणित शब्द एवं शब्दार्थ ही प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थों में प्राप्त करके विशेष मान्यता प्रदान में रसात्मकतायुक्त अलंकृत किये गये हैं, ऐसा नहीं है कि यह कौशल केवल कवियों या शाइरों के लिए ही उपयोगी है, यह सर्व साधारण जन तथा अप्रज सभी के लिए समान उपादेय है, अपितु विद्यार्थियों के लिए विशेष मान्यता है। इसको अनेक खण्डों में विभक्त करने की योजना इनीलियु बनाई गई है कि विद्यार्थी गण तथा जन साधारण इसे अल्प शुल्क (महायतायें) प्रदान करके प्राप्त कर सकें, और धीरे-धीरे सम्पूर्ण कौशल के धनी बन सकें।

अतः जो कुछ अपना कर्तव्य माने महानुभावों की सेवा में समर्पण किया है, उसके आदरण पर ही मेरे परिश्रम की सफलता निर्भर है। जनता जनार्दन और कोविद युधजनों के आदरण, सहयोग तथा सहायता के अभाव में इसकी निर्माण व्यवस्था में शिथिलता भी आसकनी है। जन्म तो इस कौशल ने पा लिया है परन्तु द्रव्य रूपी पथ इन दिग्गु को पान कराकर, बल, वृद्धि एवं तरगाई प्रदान करना, धन कुवेरों, द्रव्य पतियों तथा राष्ट्र शक्तियों का ही काम है। जयहिन्द।

चिनीत्र

गिरधरदास बोहरा

'मुवाकर' 'कमर'

धन्यवाद !

उन महामहिम महानुभावों के पुण्य नाम भी उल्लेखनीय हैं जो कोप के ४२ वर्षीय दीर्घ रचना-भूल में समय समय पर प्रणेता के कार्यक्रम एवं परिश्रम को आलोचन करते हुए अपने अनुभवी परा-शर, शुभाशीर्वाद और शुभकामनाओं से उत्साह वर्द्धन करते रहे थे और करते रहे हैं। मैं विगुद्ध और लर्मल हृदय से उन सब सज्जनों को अचल श्रद्धा एवं अपूर्व शिष्टता पूर्वक सादर स्वागत सम्मान और अभिवादन सहित यथायोग्य धन्यवाद प्रस्तुत करता हूँ उनकी कृपा विशेष का भार मुझ पर आजन्म रहेगा।

वरर ननीय श्री मोहम्मद इसमाईल अली खां साहब
हिज्र हाई नेस टॉक

माननीय श्री दामोदरलाल जी व्यास

स्वास्थ्य मन्त्री, राजस्थान

” श्री रणधीरसिंह जी चौधरी, जिलाधीश टोंक

” श्री गणपतराय जी एस. डी. एम. टोंक

” सेठ सौभागमल जी लोढा, अजमेर

” श्री सेठ बुधसिंह जी वाकना, कोटा

” श्री वाचू शमशुद्दीन साहब, भूतपूर्व-
ट्रेजरी ऑफिसर, टोंक

” श्री वाचू फतेमल जी जिनागी
भूतपूर्व ट्रेजरी ऑफिसर

” श्री हवीबुद्दीन खां साहब एडवोकेट
एम. ए. एल-एल. वी.

” श्री हवीबुद्दीन साहब, एम. ए. एल-एल. वी.
एडवोकेट

” श्री प्रेमी खेमराज जी शर्मा, एडवोकेट
एम. ए. एल-एल. वी.

” श्री मुजानमल जी लोढा,
एम. ए. एल-एल. वी., साहित्यरत्न

” श्री डा० नाथूलाल जी पाठक,
एम. ए. पी-एच. डी. कोटा

” श्री द्वारिकाप्रसाद जी विजयवर्गी,
एम. ए. वी. एड., साहित्यरत्न

” श्री महेन्द्रकुमार जी जैन, एडवोकेट

” श्री पं० रामनारायण जी शर्मा, एडवोकेट

” श्री डा. ब्रह्मदत्त जी एम. ए. पी-एच. डी.

” श्री केसरसिंह जी रायत, एम. ए. वी. एड.

” श्री राधाकृष्ण जी गोयल,

” श्री श्यामविहारीलाल जी सक्सेना, एडवोकेट

एम. ए. वी. कॉम. एल-एल. वी., विशारद

” श्री घनश्यामजी लाडला, सम्पादक 'दकाल'

” श्री लक्ष्मीनारायण जी टैंगोर, एम. ए.

” श्री लक्ष्मी नारायण जी श्रीवास्तव

” श्री महेन्द्रकुमार जी दीक्षित वी. ए. वी. एड.

” श्री रामकरण जी मिश्रा, एम. ए. वी. एड.

” श्री गोपीकृष्ण जी शर्मा, एम. ए. वी. एड.
साहित्यालंकार

” श्री अच्युत कादिर साहब खन्दा, सम्पादक
वक्त्र साप्ताहिक

” श्री पं० अंबिकाप्रसाद जी शर्मा
भूतपूर्व जन सम्पर्क अधिकारी टोंक

” श्री सेठ उत्तमचन्द्र जी 'चंद्रन'

” श्री सु० मोहम्मद सिद्दीक साहब

” श्री वैद्य रामकृष्ण जी मंडोरिया, एम. ए.

” श्री पं० दामोदरदास जी, साहित्योपाध्याय

” श्री मौलाना फ़ाइज़ साहब

” श्री सोताराम जी गुप्ता टे. एडवाइजर

” श्री शाइर सौलत साहब,
” श्री वांसीलाल जी पंचोली एस. डी. आई.

दिवंगत

स्वर्गीय श्री पं० गंगासहाय जी शर्मा

स्वर्गीय श्री पं० रामनिवास जी शर्मा, हेड पंडित

” श्री रघुनन्दन जी शर्मा राज ज्योतिषी

साहित्योपाध्याय

” श्री जगन्नाथप्रसाद जी (शाद)

” श्री पं० हरगोपाल जी शर्मा ज्योतिषी

” श्री पं० बदरीनारायण ज्योतिषी गवालियर

” श्री मनसुखदास जी मास्टर

❀ लघु संकेत शब्द सूची ❀

अ०	अंग्रेजी	त०	तमिल	मु०	मुहावरा
अ०	अरबी	ता०	तानारी	यू०	यूनानी
अप०	अपभ्रंश	नु०	तुर्की	यौ०	यौगिक
अव०	अवधी	दे०	देशज	रा०	राजस्थानी
अ०	अव्यय	(दे०)	देवो	लै०	लैटिन
इ०	इवराती	ध०	धर्म शास्त्र	लो०	लोक गीत
उ०	उर्दू	ने०	नेपाली	वा०	वाक्य
उप०	उपसर्ग	न्या०	न्याय या तर्क	वि०	विशेषण
उदा०	उदाहरण		शास्त्र	वै०	वैदिक
उद्दि०	उद्दिष्ट	प०	पहलवी	व्या०	व्याकरण
क०	कहावत	पा०	पाली	शब्द०	शब्द सागर
का०	काव्य शास्त्र	पं०	पंजाबी	सं०	संस्कृत
कौ०	कौटिल्य	(पु०)	पुर्नगाली	सर्व०	सर्वनाम
क्रि०अ०	क्रिया अकर्मक	पु०	पुलिंग	स्पे०	स्पेनी
क्रि०स०	क्रिया सकर्मक	प्र०	प्रत्यय	स्त्री०	स्त्रीलिंग
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण	प्रा०	प्राकृत	हिं०	हिंदी
ग्रा०	ग्राम्य	फा०	फारसी	❀	पद्य (कविता) में प्रयुक्तशब्दों के लिए ।
गु०	गुजराती	फ्रं०	फ्रेंच	❀	स्थानीय शब्दों के लिए
ची०	चीनी	ब०	बरमी		
छं०	छंद	(ब०)	बहुवचन		
ज०	जर्मनी	बं०	बंगला		
जा०	जापानी	बं०	बंगाली	X	
ज्यो०	ज्योतिष	म०	मराठी		
डि०	डिङ्गल	मल०	मलयाली		

—अक्षर क्रम—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः
 (अः=अनेत) क (का=काफ) ख (खे=खे) ग (गै=गैत) व ड च छ
 ज (जा=जाल) (जे=जे) (जे=वड़ीजे) (जू=जूवाद) (जो=जोय) झ
 ञ ट ठ ड ढ ढ ण त (तो=तोय) थ द ध न प फ
 (फे=फे) ब भ म य (ये=वड़ीये) र ल व श ष स (से=से)
 (सु=सुवाद) ह (हः=वड़ाह) च त ध ।



यह एक पवित्र पद है जो वेदव्यन एवं मंत्रोच्चार के आदि और अंत में बोला जाता है, ईश्वर वाचक त्रिगुणत्मक शब्द, अर्थात् नम में इसका अर्थ है—गंभीर मनर्षन, स्वीकृति, हाँ, बहुत अच्छा, प्रणव-मंत्र, परं ब्रह्म, मंगल, शौभाग्य, अर्णकार ।

ॐ-

[हि १०] विष्णव सूचक शब्द, बालक के रोने का अनुकरण ।

उआँ

उआँ—[हि०१०] छोटे बच्चे के रोने की आवाज, मियार (गोदड़) की बोली ।

कुआँ—[हि०१०] कुआँ, कुप, कुयाँ, पानी तिनानने के लिए बोला गया अधिक पहरा मड़ा ।

अंधा कुआँ—[हि०दि०] मूया कुआँ, जिसमें अंधेरा हो, जो घास पान से उका हो, लड़कों का एक खेल, अंधकूप ।

भीतर का कुआँ—[हि०पु०] उनबोगी मगर किमी के काम न आने वाला ।

कुआँ—[हि०पु०] दुन की शिवा या नाव, एक रोग वि०

जुआँ—[हि०पु०] पानी में पंदा होने वाला एक नटा कौड़ा, डीला, जुवाँ ।

धुआँ—[हि०पु०] गलने हुए होने या लकड़ी आदि से निकलने वाला पदार्थ, धुआँ, धुआँ ।

देना है धुआँ—[हि०वि०] धुआँ देने वाला आगार, निरर्थक पदार्थ, बेकार वस्तु ।

मुआँ—[हि०वि०] नौ, भू, फ़ा० अक्षर ।

मुआँ—[हि०पु०] मृत्त, मरा हुआ, निगोड़ा, नाकारा ।

रुआँ—[हि०पु०] शरीर के छोटे-छोटे नरम तथा चारीक बाल, रोसाँ, रंशानी ।

दुआँ—[हि०पु०] गोदड़ों की बोली, वि०-यहाँ ।

अ

हिंदी और संस्कृत परिवार के स्वर वर्णों का यह पहला अक्षर है, इसका उच्चारण कंठ द्वारा होता है, व्यंजन वर्णों का उच्चारण इस अक्षर की महायता के बिना नहीं हो सकता, सभी वर्णों (अक्षर) अकार मूलतः अकार और बोले जाते हैं, प्रत्येक वर्ण के अंत में अकार-इकार-उकार आदि स्वर प्रधान रहते हैं, अक्षर 'अ' को किसी भी शब्द के आदि में लगाने से उनका अर्थ विपरीत (उल्टा) हो जाता है, जैसे—'अन' से—अनवन, अनरानि, अनमेल इत्यादि, यह एक निर्वच सूचक उपसर्ग है, इसके अर्थ कई प्रकार से होते हैं जैसे—पार=अपार, क्षय=अक्षय, नाव=अनाव, ब्राह्मण=अब्राह्मण, धर्म=अधर्म इत्यादि ।

[सं०पु०] विष्णु, शिव, को०—ब्रह्मा, विराट, इन्द्र, वायु, कुबेर, अग्नि, विद्य, सरस्वती, जीति, कंठ, ललाट, अमृत, प्रणव, यम, प्राण ।

इअ

इअ—[हि०वि०] यह, इधर, इस ओर ।

किअ—[हि०वि०] क्या-किस-कौन ?

गिअ—[हि०वि०] ग्रीवा, गला, गर्दन ।

चिअ—[हि०पु०] हृत्त को जमाकर निकाला हुआ सार, बी, घृत, फ़ा०-रोगन जर्द ।

इअ—[हि०वि०] धृणा और तिरस्कार सूचक शब्द, अ०-धिन, नकरत ।

जिअ—[हि०पु०] जीव, चित्त, मन फ़ा०-दिल ।

निअ—[हि०पु०] त्रिया, तिया, स्त्री, पत्नी, नार्या, तीन की संख्या, जोड़, औरत, उ०-बीवी ।

धेअ-# [हि०श्री०] कन्या, बेटी, बालिका, पुत्री ।
 नेअ-# [हि०श्री०] निकट, पास, अ-करीब,
 नजदीक ।
 पेअ-# [हि०पु०] प्यारा, सुन्दर, पति, प्रेमी, प्रिय
 लगने वाला, ईश्वर.अ-आशिर, लांबद ।

धिअ-# [हि०वि०] दी, जोड़ा, दूसरा ।
 भिअ-# [हि०पु०] माई, भैया, सहोदर, फा-विरादर ।
 सिअ-# [हि०श्री०] जनक चुत्ता, सीता, सरदी, सीत,
 सिलाई ।
 हिअ-# [हि०पु०] हृदय, मन, ध्याती वक्षःस्थल ।

अ

यह उर्दू का पहला अक्षर है इसे अलिफ़ कहते हैं उर्दू, अरबी, फ़ारसी भाषाओं में अक्षर को 'हफ़' कहा जाता है इन भाषाओं में इसकी परिभाषा कई रूप में की गई है यह पुलिङ्ग माना जाता है ।

अ

यह अरबी भाषा का अठारहवां अक्षर है इसे ऐन कहते हैं इसका उच्चारण स्यान कंठ्य है इसके अर्थ हैं [अ०वि०] आँस, पानी का च्छमा, होज, सरदार, सोना, जोहर, हकीकत, असल, ह्यूह, सगा नाई ।

अअ

रकअ- [अ०पु०] भुंकने वाला, ईश्वर के सामने घुटनों
 पर हाथ रखकर भाषा भुंकने वाला, 'रुकूअ'
 करने वाला ।
 वाकअ- [अ०पु०] होने वाला, गुजरने वाला ।
 सवाकअ- [अ०पु०] मोंका का बहुवचन, मोंके ।
 रौर वाकअ- [अ०पु०] भूँठ, मिथ्या, असत्य, गलत ।
 नसिर वाकअ- (सी०) [अ०पु०] एक प्रकाशमान
 सितारा जो दक्षिण आकाश में उदय होता है ।
 राजअ- [अ०पु०] रुजुअ करने वाला, प्रस्तुत करने
 वाला, वापस होने वाला ।
 साजअ- अ०पु० वाक़ाफ़िया या अलंकार युक्त
 वाकें करने वाला ।
 मुनाजअ- 'ज.' [अ०पु०] भगड़ा करने वाला,
 फ़साद फैलाने वाला ।
 वाजअ- 'ज.' [अ०पु०] किसी चीज़ को उसकी
 जगह रखने वाला, पैदा करने वाला ।
 रानअ- [अ०पु०] चरने वाला । जगह ।
 मरातअ- [अ०अ०] चरागाह, पशुओं के चरने की
 सातअ- 'ती' [अ०पु०] अंजा, बुलन्द, चमकता हुआ ।
 मुदादअ- [अ०पु०] मकर और फ़रेव करने वाला ।
 रादअ- [अ०पु०] हटा देने वाला, रोकने वाला ।
 क़ानअ- [अ०पु०] थोड़ी वस्तु पर सन्न करने वाला,
 साधिर, दुर्बवार, हि०- संतोषी ।

मवानअ- [अ०श्री०] माअना की जमाअ, अर्थ का
 बहुवचन, मना करने या रोके जाने वाली
 वस्तुएँ, जो मना की गई हों, रोकੀ गई हों ।

मदाफ़अ- [अ०पु०] दफ़ा करने वाला, खोने वाला,
 मिटाने वाला । [वचन ।

मनाफ़अ- [अ०पु०] नफ़ा, लान, फ़ायदा का बहु-
 मुनाफ़अ- [अ०पु०] लान, नफ़ा देने वाला ।

नाफ़अ- [अ०पु०] नफ़ा देने वाला, लाभदायक ।

राफ़अ- [अ०पु०] अंजा करने वाला, दाद (इन्साफ़,
 माफ़ी, बख़्शिश) चाहने वाला, फ़रियादी ।

शाफ़अ- [अ०पु०] शिफ़ारिश करने वाला, बचाने
 वाला, हिमायत करने वाला, रक्षा करने वाला ।

रावअ- [अ०पु०] चीथा ।

मरावअ- [अ०पु०] मंजिलें, बहुत से मकान ।

सासअ- [अ०पु०] चुनने वाला ।

लवामअ- [अ०अ०] रोशन, (प्रकाशित) चमकने
 वाली वस्तुएँ ।

मतामअ- [अ०अ०] लालच की जमाअ, लोन का
 बहुवचन ।

कारअ- [अ०पु०] रमल फेंककर नविष्य बताने वाला,
 रम्माल, वह व्यक्ति जिसके सिर के बाल किसी
 रोग के कारण खिर गये हों, मंत्रणा मानने वाला,
 दरवाजा खटपटाने या कुंडी दजाने वाला ।

शारध- [मं०पु०] नम्रा चौड़ा गुला रास्ता, गुफा करने वाला, मोलवी, पंडित, धार्मिक शिक्षा देने वाला ।

कृशाध- [घं०पु०] 'कारध' का बहुवचन, मस्तिष्क, ज्यादनियाँ, समय की प्रतिकूलता, गर्दिन, बलाएँ, चक्र, विपरीतता ।

गवध- [मं०पु०] हटा देने वाला, नोकने वाला ।
मुतावध- [मं०पु०] फर्मावरदार, आजापानक, हकम उठाने वाला ।

[उपरोक्त क्रम के शब्द 'ए' की मात्रा को हटा करके भी जाने जा सकते हैं जैसे- राके, वाके इत्यादि ।]

क

संस्कृत या नागरी वर्णमाला का प्रथम कंडव स्वरान्त, इससे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं, क, च, घ, ङ, इनके सवर्ण हैं । इनके उर्द्ध, अर्ध, कारसों में 'काक' कहते हैं ।

अक

अक- [मं०पु०] विपत्, विराट, अग्नि, विषय, ब्रह्मा इन्द्र, ललाट, वायु, कुंभ, अमृत, कीर्ति, गरम्यनी वि० रक्षक, उद्वान्त करने वाला ।

अक- [गं०पु०] कष्ट, दुःख, पाप ।

कक- [हि०श्री०] जुलाहे का एक श्रोगार, कंघी, एक पौधा विशेष ।

एकक- [मं०वि०] एक से सम्बन्ध रखने वाला, जिसमें एक ही हो, असहाय, अकेला, अ०- सोल ।

अंकक- [हि०पु०] हिसाब लिखने वाला, गिनती करने वाला, बिन्ह लगाने वाला ।

अककक- [मं०वि०] चित्त, दम्न रहित, मत्सर-रहित, निरहंकार, ईमानदार ।

कक- [हि०श्री०] ग्वाक, घूल, गर्द, गूवार, मिट्टी ।

अन्य शास्त्रक- [सं०पु०] अपने धर्म का त्याग करने करने वाला ब्राह्मण ।

कक- [हि०श्री०] बाटी विशेष ।

अंगक- [सं०पु०] अंग, शरीर, उ०- बदन ।

अनंगक- [सं०पु०] चित्त, मन, अगहीन, कामदेव ।

आङ्गक- [सं०पु०] अंग में बसने वाला, अंगराज, वि०- अंग देव में उद्वान्त ।

अपाङ्गक- [मं०पु०] अंग हीन, पंगु, अशरीरी, काम-देव, आँख की कोर, अपामांग ।

चक- [हि०पु०] चकवा पक्षी, चकई नामक खिलौना, पहिया, जमीन का एक खंड, एक अस्त्र, चक्र,

छोटा पांच, मेड़ा, एक गङ्गा, अधिहार, दखन, वि०- अधिका नगूर, ज्वाल, (मं०पु०)- नाधु, पान, वि० आगत, नौबख्त ।

अचक- [हि०वि०] नरपुत्र, न भूकने वाला, अत्य-धिक, परिपूर्ण, ० स्त्री० भौचकागन, धबराहट, अचकचाने का नाव, अ०- अचानक, यकायक, अकस्मात् ।

अजाचक- [हि०पु०] अयाचक, जिसे कुछ मांगने की आवश्यकता न हो, धन-धान्य से भरा पूरा, वि०- जो मांग नहीं, सम्पन्न, संतुष्ट ।

अयानक- [मं०वि०] (दे०) अजाचक ।

छक- [हि०श्री०] नगा, सृष्टि, सत्वसा, छरना, अघाना, भरत होता ।

अछक- [हि०वि०] जो छका न हो, अतृप्त, भूगा, जिसका मन पूरा भरा न हो ।

इच्छक- [मं०वि०] इच्छा करने वाला, चाहने वाला, अनिलापी, पु०- एक वृक्ष, नारङ्गी ।

अनिच्छक- [सं०वि०] इच्छा; कामना; अनिलापा; न करने वाला, उ०- वेगुरज ।

जक- [हि०श्री०] हठ, अट, धुन, रटन, (सं०पु०)- भूत, प्रेत, यक्ष, वि० जिही, भवकी, कंजुल आदमी ।

अजक- [मं०पु०] पुरुरवा का एक वंशज ।

भक- [हि०श्री०] सनक, धुन, खत्त, बहबड़ाहट, आँच, ताव, वि० चमक, भकाभक ।

औभक- [हि०अ०] अचानक, सहसा, यकायक ।

अक्षर- [हि०स्त्री०] स्थिर दृष्टि, गड़ी हुई नज़र, लकड़ी
 आदि तौलने का चौरस पलड़ा, तराजू ।
 अक्षर- [सं०वि०] भ्रमण करने वाला, भ्रमणशील,
 स्त्री० गोक, अड़चन, उलभन, हिचक, गड़बड़,
 सिन्ध नदी (पाकिस्तान के अन्तर्गत) पर स्थित
 एक छोटा नगर जहाँ तथगिला नगरी थी, सिन्धु
 नदी की पश्चिम धारा, अत्यधिक आवश्यकता ।
 ठक- [हि०पु०] काठ पर काठ बजाने या ठोकने की
 आवाज़, वि० स्तब्ध, भीचक्का, वह सलाई
 जिसमें अफीम का क्रिबाम लगाकर सँकेते हैं,
 (बंझाज) ।
 ठक- [हि०पु०] एक प्रकार का पतला सफ़ेद टाट,
 (जिससे जहाजों के पाल बनते हैं), मूत या सत
 आदि से बना दबीज़ कपड़ा, एक अन्य कपड़ा,
 समुद्र या नदी का वह घाट जहाँ माल लाने
 और उतारने के लिए जहाज़ ठहरते हैं, अदालतों
 में लगा वह कठहरा जहाँ अनियुक्त खड़े किए
 जाते हैं ।
 अंडक- [सं०पु०] छोटा अंडा, अंडकोश ।
 आँख की ठंडक- [पु०] प्रिय व्यक्ति या वस्तु ।
 आँखों चैन कलेजे ठंडक- [पु०] पूरी प्रसन्नता,
 बहुत बड़ी खुशी ।
 अड़क- [सं०पु०] भेड़ा, मेंढा, जंगली चकरा ।
 ठक- [हि०पु०] छिपाना, किसी को कोई वस्तु छिपाने
 की कहना ।
 आठक- [सं०पु०] आठ, चार मेर का वजन या माप,
 अन्न नापने का एक माप या पात्र, पाहली ।
 अपाठक- [सं०पु०] अपाठ मास ।
 आपाठक- [सं०पु०] आपाठ का महीना ।
 अणक- [सं०वि०] अथम, नीच, बकवादी, बहुत
 छोटा, तुच्छ, कुत्सित, तिरस्करणीय, अमाणा,
 पु०- एक तरह का पक्षी । [वहरा ।
 अकरणक- [सं०वि०] कर्णहीन, जिसके कान न हों,
 तक- [हि०पु०] एक विनयित जो किसी वस्तु या
 व्यवहार अथवा व्यापार की सीमा व अवधि
 सूचित करती है, पर्यन्त, पास, नज़दीक, यहाँ तक-

वहाँ तक, स्त्री० तराजू, टक, (सं०वि०) निन्दित,
 हूपित, सहनशील ।
 अंतक- [सं०पु०] नष्ट करने वाला, काल, यमराज,
 सन्निपात, ज्वर का एक भेद, ईश्वर, शिव ।
 अंतक- [सं०वि०] असीम, नित्य, पु० अन्तदेव
 (जैन) ।
 उदंतक- [सं०पु०] वार्ता, वृत्तान्त, समाचार ।
 अश्रमंतक- [सं०पु०] चूल्हा, दीपाधार, मूँज जैसी
 एक घास, लिसोटा, कचनार, छाजन, आच्छादन ।
 थक- [हि०पु०] थाक, समूह, थोक, ढेर, सीमा, सर-
 हद, थकने या हारने का भाव (किसी अर्थ से) ।
 अथक- [हि०वि०] न थकने वाला, अश्रमंत, परिश्रमी,
 मेहनती ।
 अन्तर्क- [सं०वि०] निरर्थक, अर्थशून्य, निष्प्रयोजन,
 व्यर्थ, बेमतलब, बेकार्यदा ।
 टक- [सं०पु०] उदक, जल, पानी, रस, दध,
 निपुण, प्रवीण, कुशल ।
 अनिकटक- [सं०पु०] हस्तिकंद नामक पौधा ।
 आनंदक- [सं०वि०] आनन्द मनाने वाला, आनन्द
 देने वाला, आराम पहुंचाने वाला ।
 उत्कंडक- [सं०पु०] एक प्रकार का रोग ।
 धक- [हि०स्त्री०] मय या अधिक अम के कारण
 हृदय गति (दिल की धड़कन) तीव्र होना, धक-
 धकी, * उमंग-उल्लास से हृदय का स्पन्दन ।
 अथक- [सं०वि०] देना, भारना लड़ना ।
 अकथक- [हि०पु०] आगा-पीछा, आशंका, सोच-
 विचार, मयातुर ।
 नक- [हि०स्त्री०] नाक, नासिका, नासा, नाक का
 संक्षिप्त रूप, (प्रायः समास में व्यवहृत) ।
 अतरक- [सं०पु०] एक तरह का पक्षी, वि० आनक,
 हंका, नेरी, नगाड़ा, बड़ा डाल, मृदंग, दे० 'अणक'
 अजनक- [सं०वि०] अनुत्पादक, अकारक ।
 पक- [हि०वि०] पक्व, किसी वस्तु या फल के पकने
 का भाव । [पका हुआ ।
 अपक- [हि०पु०] पानी, जल, वि० कच्चा, बिना
 अल्पक- [सं०वि०] थोड़ा, छोटा, कम, ज़रा सा ।

कक-[हि०वि०] ग्यच्छ, नन्देद, वदरंय, श्रं० शी मिनी
हुई वन्तुओं का अलग अलग होना ।

कक-[मं०पु०] बगला, बंचक, छग, कुबेर, नौम के
हाथों मारा गया एक राक्षस, एक ऋषि, एक
पुत्र वक्ष, एक अनुज जिसे श्री कृष्ण ने मारा था,
हि० रत्नी० चञ्चुडाष्ट, प्रनाप, उन्वाव ।

अककक-[हि०पु०] अनाप-गनाप, अककक, अमंदद
प्रनाप, वि० अवाक् अकित, नौचरग ।

कक-०[हि०त्री०] वकायक या रू-रू कर किनी
वन्तु के तब उठने प्रयत्न के म में पुण के निरुत्तने
का शब्द, (इसका प्रयोग प्रायः 'ने' विनविन के
साथ होता है), पुन करने या वध करने का
सम्बोधन ।

अरभक-०[हि०पु०] बच्चा, छोना, नटका, बानक,
नेत्र बाला, कुगा, वि० घोड़ा, हुयला, मूर्ख,
निर्युद्धि, चर्चों जमा ।

अरभक-[मं०वि०] मंकीलां, संग, पतवा ।

अरभक-[सं०पु०] भारत के एक दक्षिण प्रदेश का
नाम, जिसे आजकल, 'ट्रावन कोर' कहते हैं, उक्त
देश का निवासी ।

आटे में नमक-[पु०] घोड़ा सा, जरा सा, ।

वक-[मं०पु०] वक्ष विशेष, का०वि० एक, अकेला ।

अरक-[मं०पु०] आरागज, शं बाल, मेवार, पित्तवा-
पड़ा, पहिये का अरा, मूर्ख, अकवन, (हि०) नमके
में खींचा हुआ 'अक' रस ।

अदरक-[हि०पु०] एक पौधा, (जमी कन्द) जिसकी
गांठ दवा, चटनी और आचार के रूप में काटी
जाती है, अदरक, सं० आर्द्रक ।

अवरक-[हि०पु०] खानों में निकले जाने वाला तह-
दार एक धातु, मोटल ।

लक-[मं०पु०] लवाड, जंगली धान के बान, (धातु
उभय, लाकयति-लाकयते), चयना, पाना, प्राप्त
करना, हासिल करना, वसूल करना, श्रं० लिम्मत,
नसीब, भाग्य, श्र० तेरे वास्ते, का० वेबकक,
नादान, सौ हजार वा एक लाख की संख्या,
बहु लाख जो एक प्रकार का गाँद है ।

अलक-[मं०पु०] मस्तक के इधर-उधर लड़ते हु
धुंधराने बाल, कुल्ले, लटा, लच्छेदार वा
शरीर पर केसर का उबटन, हरताल, मन्त्रे मटा
० महावर ।

अपलक-[मि०प्र०] एक टक, निमित्तमेय ।

वक-[मं०पु०] खीच पक्षी, (दे०) वक ।

अद्वक-[मं०पु०] घोड़ा, छोटा घोड़ा, घोड़े की
तन्हु, लावारिस घोड़ा ।

राक-[मं०पु०] प्राचीन जाल में शक द्वीप (मध्य
एशिया) में रहने वाली एक समृद्ध जाति जो
मनेच्छों में गिनी जाती थी, (इस जाति श्री उन्-
नि पुत्रालों में वर्णित मूर्य बंशी राजा 'नरिप्यंत'
ने मानी जानी है, इस जाति वाले अपने को देव
पुत्र कहते थे, ईसा में दो सौ वर्ष पूर्व भारत के
मथुरा और महाराष्ट्र प्रदेशों पर इन जाति का
शासन १६० वर्षों तक रहा, प्रसिद्ध मन्त्राट
'कनिष्क' इसी जाति के थे), तातार देश के निवासी
तातारी, वह राजा या शासक जिसके नाम में
कोर्ट संवत् चले, राजा शानबाहन का चलाया
हुआ मयत जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरम्भ
हुया था, योग्य होना, सहनशील होना, शक्तिमान
होना, दृढ़ होना, [मं०पु०] शंका, संदेह ।

अंराक-[मं०पु०] नाग, मगद, विन, हिस्सेदार,
दायाद, साक्षीदार, पुत्र, (वि०) हिस्सा पाने वाला,
वांटने वाला, अंशधारण करने वाला ।

अप्रवशक-[मं०पु०] घोड़े की लौद ।

अपकर्षक-[सं०वि०] निरावर या अपमान करने
वाला, नीचे खींचने वा गिराने वाला ।

अभिमर्षक-[मं०वि०] छूने या स्पर्श करने वाला,
बलात्कार करने वा नीचा दिखाने वाला ।

उरुर्षक-[मं०वि०] उन्नति करने वाला, ऊपर को
खींचने वाला, उधाड़ने वाला ।

सक-०[हि०त्री०] शक्ति, बल, सामर्थ्य, वैभव, संपत्ति,
× पु० वाक, साका, संदेह (दे०) 'शक' ।

दक-×[हि०पु०] साहस वजरा जाने से हृदय में
उठने वाली घटकन वा लगने वाला वक्का ।

क

उर्ध्व भाषा का छठवीसवां अक्षर, इसे 'काफ़' कहते हैं, इसका उच्चारण स्यान् गले का उग्र

भाग है।

अक

कृ- [अ०पु०] मुरझाया हुआ, मय या हेरत के कारण चहरे का बदला हुआ रंग, हक्का-बक्का, हेरान्त, परेशान।

उफ़क- [अ०पु०] क्षितिज, आकाश, किनारा,

उज्जक- [तु०पु०] तातारियों की एक जाति, वि० मूर्ख, निरुद्धि, अनाड़ी, गंवार, उजड़।

अहमक- [अ०वि०] बेवकूफ, मूर्ख, जड़, नासमझ।

अवरक- [अ०पु०] एक चमकदार सफ़ेद धातु जो

जमीन से खोदकर निकाली जाती है, (भोडल)।

अवलक- [अ०पु०] चित्तकचरा, सियाह रंग का घोड़ा जिसके हाथ परों में सफ़ेदी हो।

शक- [अ०वि०] फटा हुआ, दरार पड़ा हुआ।

अनलक- [अ०पु०] मैं हकू, सं० अहं ब्रह्मास्मि।

हक- [अ०पु०] सत्य, सच, उचित, मुनासिब, सही, वाजिब, ठीक, ईश्वर, गुदा, स्वत्व, अधिकार, दावा, फर्ज, कर्तव्य, नेग, दस्तूरी, बदला, वि० ठीक, दुस्त, न्याय, प्राप्य।

ख

हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण स्यान् कंठ्य है, * [सं०पु०] गर्त, गड्ढा, खाली स्यान्, निर्गम, निकास, छिद्र, विल, इन्द्रिय, प्राण वायु आने-जाने की नाली, आकाश, शून्य, स्वर्ग, सुख, शब्द, कर्म, आखा, ब्रह्मा।

अख

अख- [दि०पु०] बसीचा, वाग, * [सं०वि०] अक्षय, अविनाशी, अनश्वर, अंत तक रहने वाला, जिसका कभी नाश न हो।

कख- × * [हि०स्त्री०] कुक्षि, काँख, बगल।

खख- × * [हि०स्त्री०] वांस की डलिया, टोकरी।

चख- * [हि०पु०] आँख, नेत्र, चक्षु, फा० चक्ष्म।

जख- × [हि०पु०] एक प्रकार का कल्पित भूत, यक्ष।

भख- [हि०स्त्री०] भौंकने की क्रिया या भाव, *मछली, भव।

टख- * [दि०स्त्री०] एड़ी के ऊपर की हड्डी या गांठ।

णख- × [सं०पु०] (दे०) 'नख'।

नख- [सं०पु०] नाखून, एक गंध द्रव्य, २० की संख्या, खंड, टुकड़ा, फा० पतंग उड़ाने का वारीक रेशमी बटा हुआ डोरा।

अनख- [हि०पु०] भुँभलाहट, क्रोध, रोष, रिस, ग्लानि, डाह, जलन, कोप, ईर्ष्या, द्वेष, वि० नख

रहित।

पख * [हि०पु०] पखवारा, अर्ध मास, सं० पक्ष।

अमरपख- [हि०पु०] पितृ पक्ष, अमर पक्ष।

वख- * [दि०पु०] दुःख, संकट, आपत्ति।

भख- * [हि०पु०] भक्ष, आहार, भोजन।

मख- [सं०पु०] यज्ञ, हवन विदोष।

इन्द्रमख- [सं०पु०] इन्द्र की तुष्टि के लिए किया जाने वाला एक यज्ञ।

रख- [हि०स्त्री०] वह धूमि जो पशुओं के चरने के लिए सुरक्षित रखी गई हो, किसी वस्तु को कहीं रखने की क्रिया या भाव।

अवरख- [हि०पु०] (दे०) 'अवरक'।

अमरख- [हि०पु०] क्रोध, कोप, गुस्सा, रिस, रोस, अमर्ष, रस के ३३ संचारी भावों में से एक।

अलख- [हि०वि०] जो दिखाई न पड़े या देखा न जा सके, अगोचर, अदृश्य, अप्रकट, अप्रत्यक्ष, नजर न आने वाला, पु० परं ब्रह्म, परमेश्वर।

अवलोक-[सं०वि०] (दे०) अवलोक ।

अनिलसन्त-[सं०पु०] अग्नि, आग ।

देशसन्त-[सं०पु०] कुचेर ।

देश्वरसन्त-[सं०वि०म०] मिथजी के सन्त कुचेर ।

ख

उहूँ; फारसी भाषा का दसवाँ अक्षर, उच्चारण स्थान कंठ का भीतरी अक्षर भाग है ।

अन्त

अन्त-[सं०पु०] भ्राता, भाई. उ०वि०- वह स्त्रियाज जो घृणा के लिए या धुं कने से पहले निकलती है ।

अन्त-[सं०पु०] भगवा, नकराज, वंद, छेड्याड ।

अन्त-[सं०पु०] रेगम का बटा हुआ तागा, पतंग की डोर जो प्रायः जलनऊ की ओर बनती है ।

अन्त-[सं०पु०] व्यर्थ बढ़ाई हुई बात, धर्म, अहंता, भगवा, बगैरा, कसाद, प्रतिबन्ध, रोक, चुगली, दोष, अति, अर्थ, नुपस, बकवास ।

अन्त-[सं०पु०] गिरकर जमी हुई वस्तु, मशीनों द्वारा बनाया हुआ सरत बरत, पाले से जमा हुआ पानी ।

ग

व्यञ्जन में 'क' वर्ण का तीसरा वर्ण, उच्चारण स्थान कंठ है, [सं०पु०] गीत, गंधर्व, गणेश, गुरु भावा, गमन करने वाला, गाने वाला ।

आग

आग-[सं०वि०] चलने में अन्तर्गत, स्थावर, टेढ़ा चलने वाला, अगम्य, अचल, मुस्तकिल, पु० पेड़, वृक्ष, पर्वत, पहाड़, सूर्य, अजगर, साँप, अन्न, अन्नदान, घड़ा, सात की संख्या । [दृष्टा ।

आग-[सं०पु०] कौशा, वायव्य, काग, चोतल का खन-[सं०पु०] पक्षी, चिड़िया, बाल, तीर, गंधर्व, अह, तारा, वादन, देवता, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, आकाश में चलने वाली वस्तु या शक्ति, वायुवान ।

आग-×[सं०वि०] गागर या गगरी संकथी ।

आग-×[सं०वि०] बहुत चालाक आदमी, कांइयाँ, कितरती, मन में गाँठ रखने वाला, उल्लू की जाति का एक पक्षी, घाघस, घाघ ।

आग-×[सं०पु०] अनुद, चालाक, चपल, चंड, वि० किसी प्रकार का धोका खाने वाला । जैसे- पैर चम गया, फिसलने या चूकने की क्रिया ।

आग-[सं०पु०] आग, बकरा, स्त्री० अग्नी ।

आग-[सं०पु०] संसार, विश्व, जगत, दुनिया, जन-समुदाय, लोक, यज्ञ, सत्य, हवन विशेष ।

आग-[सं०पु०] मित्र का अनुप, विष्णु, अग्नि,

वि० मोघा हुआ, जो जलना न हो ।

आगजग-[सं०पु०] चराचर, जगत ।

आग-[सं०पु०] भगा, डोला कुर्ता, अंगरत्ना ।

आग-[सं०पु०] मुहागा, शीड़ा, विलास, मंड, टीला ।

आग-[सं०पु०] धोता देकर लूटने वाला, धूर्त, छनी, गठकटा, घोर, दगादाज, बंचना करने वाला ।

आग-[सं०पु०] एक जगह से पैर उठाकर दूसरी जगह धरना, फाल, कदम, रफ्तार, चाल, पग ।

आग-[सं०वि०] न टिगने वाला, स्थिर, अचल, अटल, कायम ।

आग-[सं०पु०] गर्मी का मौसम । [डोरा ।

आग-×[सं०पु०] तागा, सूत या रेगम का महीन अंतग-[सं०वि०] पारगामी, स्वर्ग जाने वाला,

निपुण, पूरा, जानकार, अंत तक पहुँचा हुआ ।

अनंतग-[सं०वि०] अनन्त काल तक चलने वाला ।

अत्यंतग-[सं०वि०] बहुत तेज चलने वाला ।

अग-×[सं०पु०] सीमा, राशि, समूह, डेर, थाक ।

अग-×[सं०पु०] दाग, दाह, धब्बा, मोर्चा ।

अग-[सं०वि०] वेदाग, निर्दोष, अश्रुता, धेरेव, जो दागा न गया हो ।

वग-#×[हि०वि०] सूत, तागा, धागा, डोरा ।
 लग-[सं०वि०] गमन न करने वाला, न चलने
 फिरने वाला, अवज, स्थिर, पु० पर्वत, पहाड़,
 वृक्ष, पौधा, सूर्य, साँप, सात की संख्या, फ्रा०पु०
 नगीना, (काँच या रंगीन पत्थर का) जो
 अंगूठियां आदि में जड़ा जाता है ।

असितलग-[सं०पु०] नीलगिरि या नीलाचल पर्वत ।
 पग-[हि०पु०] (दे०) 'उग', पाँच, पद, चरण, अनु-
 रक्ति, प्रेम, डूबन, भोगन, सनन ।

उपग-[सं०वि०] सदीप आया हुआ, पीछे लगा हुआ,
 सम्मिलित, प्रान्त हुआ ।

फग-#[हि०पु०] जाल, फंदे, प्रेम अनुराग, एक
 प्रकार का साग ।

वग-#[हि०पु०] वगुला, 'घास' का लघु, (समास में)
 एक चींटे का नाम जो पशुओं के चिपट कर रक्त
 पिया करता है ।

भग-[सं०पु०] सूर्य, शिव का एक रूप, बारह प्रकार
 के आदित्यों में से एक, ईश्वर की ६ विभूतियां
 ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री (सौभाग्य) ज्ञान, वैराग्य,
 इच्छा, फान्ति, मोक्ष, धर्म, योनि, गुदा, अंडकोप,
 के मध्य का स्थान, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।

अभग-[सं०वि०] अनागा, चदनसौध, भाग्यहीन ।

मग-[हि०पु०] रास्ता, मार्ग, सं०पु०-मगघ देश,
 एक प्रकार के शाक हीपी ब्राह्मण ।

लग-[हि०वि०] तक, पर्यंत, समीप, पास, लिए,
 संग, साथ, वास्ते, स्त्री०- लगन, ली, प्रेम ।

अलग-[हि०वि०] पृथक, जुदा, न्यारा, भिन्न, दूर,
 विशिष्ट, सुरक्षित, वचा हुआ, कोश ।

अलग अलग-[हि०अ०] व्यक्तिसः, प्रत्येक को,
 प्रत्येक से, दो भाग, विभक्त, जुदा-जुदा ।

अलग अलग-[हि०वि०] जुदा, पृथक, दूर ।

वग-[हि०स्त्री०] (दे०) 'वग' ।

अध्वग-[सं०वि०] ऊपर गमन, चढ़ना, ऊंचा,
 उठना, स्वर्गगामी ।

ऊध्वग-[सं०वि०] (दे०) 'ऊध्वग' ।

आकाशग-[सं०पु०] पक्षी, परिन्द ।

हग-[सं०क्रि०अ०] शौच करने (पखाने जाने) का
 सम्बोधन वाक्य ।

ईहग-[सं०वि०] इच्छानुसार चलने वाला । [तीर ।

अजिह्वग-[सं०वि०] सीधा जाने वाला पु० ब्राह्मण,

उमग-#[हि०स्त्री०] (दे०) 'उमंग', हर्ष, खुशी ।

यग-#×[दे०पु०] (दे०) 'जग' फ्रा० यगानत,
 निकटता, सम्बन्ध, सहयोग ।

अन्यग-[सं०वि०] दूसरे के पास जाना, जाय,
 छिनरा, लंपट, पापी, विभिचारी ।

अरग-[हि०पु०] एक पीले रंग का सुगन्धित मिश्रित
 द्रव्य, अरगजा, यह चंदन; केशर; आदि से बनता है ।

उरग-[सं०पु०] साँप, (छाती के चल रंगने वाला
 नाग ।

औरग-[सं०वि०] साँप का, साँप सम्बन्धी, पु०
 आइलेखा नक्षत्र । [वाला ।

अध्वरग-[सं०वि०] अध्वर यज्ञ के काम में आने

ग

उर् ; फारसी भाषा का पच्चीसवां अक्षर, उच्चारण स्थान गले का अन्तिम भाग है ।

आग

अध्वलाग-[सं०पु०] पहंचाना, भेजना, रवाना
 इत्यादि करना ।

आग का वाग-[पु०] कौयलों की जलती हुई अंगीठी,
 आतिश बखी, सुनार का अंगीठा ।

आली दिमाग-[अ०वि०] बहुत बुद्धिमान, ऊंचे
 दिमाग वाला, अक्षलमन्द, तीव्र समझ वाला ।

अंधा चिराग-[उ०पु०] धुंधली रोजनी वाला चि-
 राग, धीमे प्रकाश का दीया ।

घ

हिन्दी वर्णमाला के व्यंजनों में 'क' वर्ण का चौथा व्यंजन; उच्चारण स्थान कंठ या जिह्व मूल है, यह स्पर्श वर्ण है।

अघ

अघ-[मं०१०] पाप, दोष, अधर्म, दुष्कर्म, गुनाह, दुःख, विपत्ति, अशौच, दमन, अपासुर नामक काम का मेनापति; जिसे श्री कृष्ण ने मारा था।

अघ-[मं०४०३०] नून करना, पाप करना, अट्ट-चित्त करना।

अनघ-[मं०३०] अघहीन, पाप रहित, निष्पाप,

निर्दोष, बेगुनाह, पवित्र, शुद्ध, निर्मल, अकृत्य निरापद, निष्कलंक, अशोक, मुरझित, अनचोदित, सुन्दर, सुखसूरन, पु० वह जो पाप न हो; पुण्य, मित्र, विद्यु, नरेंद्र नरनों।

अनघ-[मं०३०] सोलह प्रकार के उपचारों में से एक, देवता के सामने फूल; अक्षत; दूध आदि अर्पण करने की क्रिया, नन चढ़ाना।

ङ

अंजन वर्ण का पांचवां तथा 'क' वर्ण का अन्तिम अक्षर, यह स्पर्श वर्ण है; उच्चारण स्थान कंठ नामिका है, [मं०३०] विषय, विषय की कामना, भैरव, मित्र का एक नाम।